हमारी लोक कथाएं

हिन्दी के विभिन्न जनपदों की लोक-कथाओं का संग्रह

हिंदी-रूपांतरसहित

संकलनकर्त्ता

शिवसहाय चतुर्वेदी

१९८१

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

प्रकाशक

यशपाल जैन

मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल

नई दिल्ली

छठी बार : १९८१

मूल्य

रु०-५.००

मुद्रक

[illegible]

दिल्ली

प्रकाशकीय

हिंदी की जनपदीय कथाओं का मूलभाषा के साथ यह पहला संग्रह प्रकाशित हो रहा है। अबतक जितने संग्रह निकले हैं, एकाध को छोड़कर [illegible]वाद हैं। इस दृष्टि से इस संग्रह की अपनी विशेषता है। हर कथा [illegible] साथ उसका हिंदी-रूपांतर भी दे दिया गया है। पाठकों से हमारा अनुरोध है कि वे मूलभाषा के साथ ही हिंदी-अनुवाद को पढ़ें और इस प्रकार मूलभाषा का जो मिठास है, उसका भी आनंद लें। अनेक भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन से भी लाभ होगा।

[illegible] संग्रह का संकलन लोक-साहित्य के अनन्य प्रेमी स्व० श्री शिव-सहायजी चतुर्वेदी ने किया था। उन्होंने लोक-साहित्य का, विशेषकर कथा-कहानी-साहित्य का, बड़ी गहराई और प्रामाणिकता से संग्रह और [illegible]न किया था। बुंदेलखण्डी लोक-कहानियों के उनके कई संग्रह [illegible]शित हुए हैं। लोक-साहित्य को प्रकाश में लाने का महत्वपूर्ण कार्य [illegible]ह वर्षों तक करते रहे थे।

इस पुस्तक में हमने केवल उन्हीं भाषाओं की कहानियों को लिया है, जो हिंदी-परिवार की हैं। पाठक देखेंगे कि मूलभाषा हिंदी से इतनी मिलती-जुलती है कि उसे समझने में विशेष कठिनाई नहीं होती। प्रत्येक जनपदीय भाषा की कहानियों की एक-एक स्वतंत्र पुस्तक निकालने की हमारी योजना के अंतर्गत बुंदेलखण्डी, ब्रज, मालवी, गढ़वाली तथा मैथिली के पृथक-पृथक संग्रह निकल चुके हैं। इनकी कहानियां हिन्दी में हैं; लेकिन मूलभाषा का आनंद लेने के लिए प्रत्येक पुस्तक के अंत में एक कहानी मूलभाषा में दे दी गई है।

कहानियों की रोचकता के विषय में हमें कुछ नहीं कहना है। पाठक पढ़कर स्वयं ही अनुभव करेंगे।

इस माला की सभी पुस्तकों का पाठकों ने स्वागत किया है। हमें विश्वास है कि यह तथा इस रोचक माला की अन्य पुस्तकें सभी क्षेत्रों में बड़े चाव से पढ़ी जायंगी।

—मंत्री

दो शब्द

हिंदी-संसार को अब लोक-कथाओं की उपयोगिता बतलाने का समय नहीं रहा है। इस विषय पर अधिकारी विद्वानों द्वारा बहुत-कुछ प्रकाश डाला जा चुका है। हिंदी में लोक-कथाओं के अनेक संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं और विभिन्न जनपदों में उनके संग्रह तथा प्रकाशन का कार्य तेजी से चल रहा है। पर कहानी का असली स्वरूप और उसकी निजी विशेषताएं जो जनपदीय बोलियों में रहती हैं, खड़ी बोली के अनुवाद में वे विशेषताएं प्राय: लुप्त हो जाती हैं। कहानी के सहज सुन्दर स्वरूप का दर्शन तो उसकी मूल जनपदीय भाषा ही में होता है। कथोपकथन की जो रसानुभूति मूलभाषा में होती है, वह अनुवाद में नहीं प्राप्त होती। कितने ही विशिष्ट जनपदीय पारिभाषिक शब्दों का भी लोप हो जाता है। इसी कारण अनुवाद में कहानी का रूप उदास हो जाता है। अभी तक हिंदी में लोक-कथाओं के जितने संग्रह प्रकाशित हुए हैं, उनमें श्री सत्येंद्रजी की व्रज की 'लोक-कहानियां' को छोड़कर शेष सभी अनुवाद हैं। मैंने भी अपने लोक-कहानियों के सभी संग्रहों में कुछ कहानियां मूल जनपदीय भाषा में दी हैं।

अभी तक हिंदी में ऐसा संग्रह नहीं था, जिसमें हिंदी की सभी जनपदीय बोलियों की कहानियां उनकी मूल भाषा में एकत्र की गई हों। 'सस्ता साहित्य मंडल' की प्रेरणा से प्रस्तुत संग्रह पाठकों की सेवा में उपस्थित कर रहा हूं। यह प्रयत्न कितना उपयोगी है और उस कार्य में कहांतक सफल हुआ हूं, इसका निर्णय तो पाठक करेंगे। मैं तो यह समझकर इस कार्य में प्रवृत्त हुआ हूं कि यह संग्रह लोक-कथाओं तथा भाषा-तत्त्व के तुलनात्मक अध्ययन के लिए कुछ उपयोगी सिद्ध होगा। इस संग्रह में बुंदेलखण्डी, छत्तीसगढ़ी, निमाड़ी, मालवी, ब्रजभाषा, बघेली, भोजपुरी, मगही, अवधी, मैथिली, राजस्थानी आदि जनपदों की एक-एक लोक-कथा

मूल जनपदीय भाषा में उसके हिंदी-रूपांतर-सहित लिखी गई हैं।

ये कहानियां मैंने प्रत्येक जनपद के अधिकारी लेखकों से लिखवाई हैं। प्रत्येक कहानी के साथ लेखक का संक्षिप्त परिचय भी दे दिया है। भाषा का स्वरूप प्राय: हर सौ-पचास मील पर थोड़ा-बहुत बदल जाता है। यह जानने के लिए कि यह कहानी किस क्षेत्र की है, मैंने लेखक के नाम के साथ उनके स्थान का निर्देश भी कर दिया है।

मैं उन सब लेखकों का हृदय से आभार मानता हूं, जिन्होंने अपना बहुमूल्य समय खर्च करके अपने-अपने जनपदों की कहानियां भेजने का कष्ट उठाकर मेरे इस प्रयत्न को सफल बनाया है। मैं श्री बैजनाथ प्रसादजी दुबे तथा श्री गणेश चौबे का विशेष आभारी हूं, जिन्होंने इस कार्य में अपनी सक्रिय सहानुभूति प्रदर्शित करके मुझे सहयोग प्रदान किया है।

देवरी (सागर) —शिवसहाय चतुर्वेदी

कहानी-सूची

हमारी लोक कथाएँ

जलकन्या

बुंदेलखण्डी

एक समय की बात है। कौनऊ नगर में एक राजा हतो। ऊके राज में रैयत के लोग पेट भर खात और नींद भर सोउत हते। कोउखों काऊ बात की अड़चन नैं हती।

ओई शहर में राजा के महल के लिंगा एक जसोंदी की टपरिया हती। ऊके धर में माताई-बेटा दोई प्रानी हते। बेटा स्यानो हो गव तो। जसोंदी तो आय, उए गावे बजावे को बड़ो शौक हतो। जब मन में हुलास उठै तबई सारंगी ऊठाकें गाउन-बजाऊन लगत तो। राजा साब जसोंदी को गावो सुन के मगन हो जात ते। घटों सुनत रैत ते। राजकाज सैं फुरसत पाकें जब राजा रातखों, अपने महल में सोबेखों आउत हते तो पलका पै परे-परे जसोंदी की तानें सुनकें दिनभर की थकान भूल जात ते।

एतरां भौत दिन निकर गये। एक दिना की बात है कै राजा राजकाज से निबट के रातखों, अपने पलका पै आकें सो गव। हारो-थको तो आय, परतऊं नींद लग गई। फसर-फसर सोउन लगो। सोउत में उए सपनो आव। का देखत है कै एक भौत बड़ो घनो जंगल है। जंगल के बीच एक तला है। तला की पार पै एक मंदिर है। मंदिर के भीतर एक भोंहरो है। जो भोंहरे में से घुसो तो नौ छिड़िया उतर कै एक कुआ दिखनो। वो कुआ

जलकन्या

हिंदी-रूपान्तर

एक समय की बात है। किसी नगर में एक राजा था। उसके राज्य में प्रजा के लोग पेट भर खाते और नींद-भर सोते थे। किसी बात का कष्ट न था।

उसी शहर में राजा के महल के पास जसोंदी की एक झोंपड़ी थी। उसके घर में मां-बेटे दो ही जने थे। लड़का सयाना हो गया था। जसोंदी को गाने-बजाने का शौक था। जब उमंग उठती तभी सारंगी उठाकर गाने-बजाने लगता। राजासाहब जसोंदी का गाना सुनकर मस्त हो जाते थे। घंटों सुनते रहते थे। राज के काम से फुरसत पाकर रात को जब वह अपने महल में सोने के लिए आते तो पलंग पर पड़े-पड़े जसोंदी की तानें सुनते और दिन-भर की थकान भूल जाते।

इस तरह बहुत दिन बीत गये। एक दिन की बात कि राजा कचहरी से निवटकर रात को महल में सो रहे थे। खूब गहरी नींद में थे। उन्हें सपना आया। देखते क्या हैं कि एक बड़ा जंगल है। जंगल के बीच में एक तालाब है। तालाब के किनारे एक मंदिर है। मंदिर के भीतर एक भोंहरा है। भोंहरे में घुसे तो नौ सीढ़ियां उतरने पर उन्हें एक कुंआ दिखाई दिया। वह कुंए में कूद पड़े। नीचे जाकर क्या देखते हैं कि एक सुन्दर बाग है।

में कूंद परो तो नैंचे जाकें का देखत है कै एक सुन्दर बाग है। बाग के बीच में एक महल बनो है। महल में एक सोला वर्ष की भौंत कबूल सूरत कन्या ठाड़ी है। राजा ईतरां सपनो देख रव हतो। एई बिरियां रूं-रूं-रूं करके जसोंदी की सारंगी बज उठी। राजा को सुख-सपनो भंग हो गव। नींद खुल गई। राजा ने सपने में जो जो बातें देखी हतीं, जगवै पै उतैं एकऊ नै दिखानी। राजाखों क्रोध उपजो। ये दुष्ट ने बनो-बनाओ काम बिगार दव! सिपाई सें कई, "जाव जसोंदी खों पकर ल्याव।" सिपाई जसोंदी के घरै जाकें बोलो, "चलो, तुमें राजा साब बुलाउत हैं।" वो मन में सोचन लगो, राजा हमें कायखों बुलाउत हुइएं? मैंने काऊ की टटिया तो काटी नैयां, नै काऊ की बहू-बिटिया पकरी है। फिर जौ आधी रात के समै बुलौवा कैसो? फिर मनमें गुनीं 'कर नईं तो डर नईं' जाकें सुनो चाइये। वो सिपाई के संगे हो गव। राजा की नजर जसोंदी पै परी तो कान लगो, "कायरे पाजी, तू बेरां कुबेरां हमेसईं गाउत-बजाउत है। तोरी तान से हमाई नींद टूट गई। सुख सपनो भंग हो गव। वो तला, वो मंदिर, वो बाग और वा जलकन्या सब बिला गई। खबरदार! अब तू जो कऊं आज से गाहे-बजाहे तो तोखों राजसें निकार दैहों या जानसें मरवा डार हों।" जसोंदी राजा की बात सुनकें घबरा गव। 'सरकार की जैसी मरज़ी' कहकें घरै लौट आव।

जसोंदी-खों गावे-बजावे की आदत हती। रातखों सोवे के पैलऊं जबलौं वो घरी दो घरी गा बजा नै लेत हतो तौलौं नींद नै आउत हती। अब राजा ने रोक लगा दई। बिछौना पै परै तो नींद नै आवे। ई करोंटा ऊ करोंटा करकें रात काटन लगो। एक दिना उसें नै रहो गव। सारंगी उठाई और गाउन लगो। राजा ऊ समय सो रव हतो। गावे की अवाज सुनी तो नींद खुल गई। जसोंदी खों पकर बुलाओ। देखतऊ गुस्सा भड़क परी—दो कौंड़ी

बाग के बीच में एक महल बना है। महल में एक सोलह वर्ष की रूपवती कन्या खड़ी है। राजा इस प्रकार सपना देख रहे थे। इसी समय 'रूं-रूं-रूं' करके जसोंदी की सारंगी बज उठी। राजा का स्वप्न टूट गया। नींद खुल गई। राजा ने सपने में जो-जो बातें देखी थीं, जागने पर उनमें एक भी दिखाई न दी। राजा को बड़ा क्रोध आया। इस दुष्ट ने मेरा बना-बनाया काम बिगाड़ दिया। उन्होंने तत्काल सिपाही से कहा, "जाओ, जसोंदी को पकड़ लाओ।"

सिपाही ने जसोंदी के घर जाकर कहा, "चलो, तुम्हें राजा-साहब बुलाते हैं।" जसोंदी मन में सोचने लगा कि राजासाहब मुझे किसलिए बुलाते होंगे? मैंने किसीकी न तो चोरी की है, और न किसीकी बहू-बिटिया को बुरी निगाह से देखा है। फिर आधी रात के समय यह बुलावा कैसा? मन में सोचा—जब कर नहीं तो डर नहीं। जाकर सुनना चाहिए। वह सिपाही के साथ हो गया। राजा की नज़र जसोंदी पर पड़ी तो वह कहने लगे, "क्यों रे पाजी, तू समय-असमय हमेशा गाता-बजाता रहता है। तेरी तान से मेरी नींद टूट गई। मेरा सुख-स्वप्न भंग हो गया। वह तालाब, वह मंदिर, वह बाग और वह जलकन्या गायब हो गई। खबरदार! आज से अब अगर गाया-बजाया तो तुझे राज्य से निकाल दूंगा या जान से मरवा डालूंगा।"

"सरकार की जैसी मरज़ी"—कहकर जसोंदी घर आ गया।

जसोंदी की गाने-बजाने की आदत थी ही। रात को सोने से पहले जबतक वह घड़ी-दो-घड़ी गा न लेता, तबतक उसे नींद न आती। अब राजा ने रोक लगा दी। बिछौने पर लेटे तो नींद न आवे। इस करवट, उस करवट करके रात बिताने लगा। एक दिन उससे न रहा गया। सारंगी उठाई और गाने लगा। राजा उस समय सो रहा था। गाने की आवाज पड़ी तो नींद खुल गई। जसोंदी को पकड़ बुलाया। देखते ही क्रोध भड़क उठा।

को आदमी और हमाई हुकमउदूली करै ! आव देखो नै तो जल्लादों खों बुलाक हुकम दै दव कै "जाव ईको मूंड़ काट और आंखें निकार ल्याव ।"

जल्लाद जसोंदी को हात पकर कें जंगल में लै गए । तर निकार कें मारने लगे । जसोंदी घबरा गव । पांव पै गिर बिंती करन लगो—"मोय जिन मारो, मैं गरीब आदमी हूं छोड़ देव तो बड़ी पुन्न हुइये । और जा बात सोइ समझ लेव राजों के चित को कछू ठिकानो नईं रय । कौन बेरां का कैन ल आज मरबे की कई है, काल कउं कान लगे हमें जसोंदी चाने है, उए हाजर करो; तो का कर हो ?" जल्लादों जसोंदी की बात जंच गई । जसोंदी खों छोड़ दव और एक बुक मार के ऊकी आंखें राजा के सामने पेश कर दईं ।

एक दिना की बात राजा ब्यारू करकें सो रव । सोउत फिर बोई सपनो देखन लगो—एक बड़ो जंगल है । जंगल बीच में तला है । तला की पार पै मंदिर बनों है । मंदिर के बी में भोंहरो है । भोंहरे की नौ छिड़ियां उतरबै पै एक कुअ दिखानो । वो कुआ में कूद परो तों का देखत है नैचें एक भौ सुन्दर बाग है । बाग के बीच में महल है । महल में एक जलकन्य रैत है । ऊ के संगे हमारो ब्याव हो गव है ।

सपनो पूरो हो गव । नींद खुल गई । जगबे पै देखो तो क कछू नै दिखानो । राजा मन में विचारन लगो मैंने नाह जसोंदी खों मरवा डारो । राजा ऊ दिन से उदास रहन लगो खावो पीवो सब फीको लगन लगो ।

अब जसोंदी कौ किस्सा सुनो । जल्लादों के हात सें छूट वो प्रान लैकें भगो । भगतैं-भगत संजा समै जंगल के बीच ओ तला पैजा पौंचो जेखों सपने में राजा ने देखो हतो । जसोंदी सोची कछ दिनों इतईं लुक-छिप कैं रव जाये । ... जग है । जो कऊं राजाखों मोरो पतो चल जैहे तो पकरवा कें मरव

कौड़ी का आदमी और मेरी आज्ञा न माने? आव देखा न ताव! जल्लादों को बुलाकर हुक्म दे दिया—"जाओ, इसका सिर काट डालो और आंखें मेरे सामने पेश करो।"

जल्लाद जसोंदी को पकड़कर जंगल में ले गये और वहां उसे मारने लगे। जसोंदी घबड़ा गया। उनके पैरों पर गिरकर कहने लगा, "मुझे मत मारो, मैं गरीब आदमी हूं। मुझे छोड़ दोगे तो आप लोगों को बड़ा पुण्य होगा, क्योंकि मैं निरपराध हूं। यह बात भी आपके समझने की है कि राजाओं के चित्त का कोई ठिकाना नहीं, किस समय क्या कहने लगें। आज मार डालने को कहा है, कल यदि कहने लगें कि मुझे जसोंदी की जरूरत है, उसे हाजिर करो तो ऐसी स्थिति में क्या करोगे?" जल्लादों को जसोंदी की बात जंच गई। उन्होंने उसे छोड़ दिया और एक बकरे की आंखें निकालकर राजा के सामने पेश कर दीं।

एक दिन की बात। रात को राजा व्यालू करके सो गये। सोते समय वह फिर वही सपना देखने लगे—एक बड़ा जंगल है। जंगल के बीच में तालाब है, तालाब के किनारे मंदिर है। मंदिर के बीच भोंहरा है। भोंहरे की राह से नौ सीढ़ियां उतरने पर एक कुंआ दीखा। बाग के बीच एक महल बना था। महल में एक सोलह वर्ष की सुन्दरी लड़की खड़ी थी। उन्होंने देखा, उस लड़की के साथ उनका विवाह हो गया है। स्वप्न पूरा हो गया। नींद खुल गई। जागने पर देखा तो कहीं कुछ नहीं है। राजा मन में विचार करने लगा कि मैंने जसोंदी को व्यर्थ मरवा डाला। यह सोचकर वह उस दिन से उदास रहने लगा। खाना-पीना कुछ भी अच्छा न लगता।

अब जसोंदी का किस्सा सुनिये। जल्लादों के हाथ से छूटा तो वह जान बचाकर भागा। भागते-भागते संध्या समय जंगल के बीच उसी तालाब के किनारे पहुंचा, जिसे राजा ने सपने में देखा था। जसोंदी ने सोचा—कुछ दिन यहीं छिपकर रहना

डार है। रात भई तो तला की पार के एक रूख पै चढ़ गव।
अंधयारो बढ़न लगो। वो डार सें चिपट कें रै गईव।

आधी रात समै चंदा ऊंगो। उजयारो फैल गव। इतने
का देखत है कै एक सोरा बरस की भौत कबूल सूरत कन्या त
पै आई। स्नान करकें मंदिर गई। पूजा करकें सात मुठी
चढ़ाके भोंहरे की रास्ता चली गई। ऊके संगे एक कुत्ता आ
हतों। वो चून खान लगो। चून खाके वो सोई चलो गव
जसोंदी जोई हाल नित्त देखत हतो। एक दिना जब जलकन्
चून चढ़ा कैं चली गई तब जसोंदी हिम्मत करके नैचें उत
और ऊने वो चून समेट लव। आसपास सें लकरियां बी
और तला के पानी से चून उसन कें रोटीं बनाई। अब ऊ
सोची तला के पानी में हात मौं धोकें भोजन करो चाइये।
कुत्ता मन में सोच रव हतो कै चूनं रोज मैं खाता हतो आज
आकें हमारो हक्क छीन लव। जसोंदी तला पै हात मौं धोउ
लगो। इतै छक्का पाकें कुत्ता सब रोटी उठा ले गव।

जसोंदी हात मौं धोकें लौटो तो देखत है कुत्ता सब रोट
लंय जात है। वो पाछें दौरो। कुत्ता भोंहरे की राह सें जाव
कुआ में कूंद परो। जसोंदी निराश होकें लौट आव। सोची
आज गलती हो गई। भियाने देखबी।

दूसरे दिना जसोंदी ने जंगल के फल-फूल खाकें दिन बिताव
रात भई तो फिर ओई रूख पै जा टंगो। जलकन्या के आवे की
बाट देखन लगो। जल-कन्या समय पै आई और मंदिर पै चून
चढ़ाकें चली गई। जसोंदी तो तकैंई बैठो हतो, झट उतरो और
चून समेट लव। आज फिर ओई तरां ऊकी रोटीं बनाईं। हात
मौं धोवे के बहाने तला पै गव, पै नजर रोटोंई पै राखो। जब
कुत्ता रोटीं लैकें भगन लगो तो ऊने झपट के ऊकी पूंछ
पकर लई। कुत्ता [illegible] हतो। वो कुड़रन लगो। कुत्ता
मंदिर में घुसकें भोंहरे की रस्ता में कुआ में कूंद गव।

चाहिए। एकांत जगह है। यदि राजा को मेरा पता चल गया तो वह मुझे मरवा डालेगा। रात हुई तब वह तालाब के किनारे के एक पेड़ पर चढ़ गया। अंधेरा बढ़ने लगा। डर के मारे डाल से चिपटकर रह गया। आधी रात के समय चंद्रमा निकला। सब तरफ उजेला फैल गया। इतने में वह देखता क्या है कि एक सोलह बरस की बहुत रूपवती कन्या तालाब पर आई। स्नान करके मंदिर गई। देवता की पूजा की और सात मुट्ठी आटा चढ़ाकर भोंहरे के मार्ग से वापस चली गई। उसके साथ एक कुत्ता आया था। वह चढ़ाया हुआ आटा खाने लगा। खाकर उसी मार्ग से वह भी चला गया। जसोंदी यह हाल नित्यप्रति देखता था। एक दिन जब जलकन्या मंदिर में आटा चढ़ाकर चली गई तब जसोंदी हिम्मत करके नीचे उतरा और मंदिर में जाकर आटा समेट लाया। आसपास से लकड़ी बीनकर उसने रोटियां बनाईं। वह सोचने लगा कि हाथ-मुंह धोकर भोजन करना चाहिए। उधर कुत्ता मन में सोच रहा था कि यह आटा रोज मैं खाता था। आज इसने आकर मेरा हक छीन लिया। जसोंदी तालाब पर हाथ-मुंह धोने गया। इधर अवसर पाकर कुत्ता सब रोटियां लेकर भाग गया। जसोंदी तालाब से लौटा तो देखता है कि कुत्ता सारी रोटियों लिये भागा जा रहा है। वह दौड़ा। कुत्ता भोंहरे के मार्ग से जाकर कुंए में कूद पड़ा। जसोंदी निराश होकर लौट आया। आज गलती हो गई। कल देखा जायगा।

दूसरे दिन जसोंदी ने जंगल के फल-फूल खाकर दिन बिताया। रात हुई तब फिर उसी वृक्ष पर जा चढ़ा। जलकन्या के आने की राह देखने लगा। जलकन्या समय पर आई और मंदिर पर आटा चढ़ाकर चली गई। जसोंदी तो ताक में बैठा ही था। [illegible] मुंह धोने के बहाने तालाब की ओर गया। पर नजर रोटियों पर ही रखी। जब कुत्ता रोटियां लेकर

जसोंदी पूंछ से लटको गव। भीतर पौचों तो का देखत है, कै एक सुन्दर वाग है। बाग में पहुंचतऊं जसोंदी ने पूंछ छोड़ दई। कुत्ता भगकें जलकन्या के पास जा ठाड़ो भव।

जलकन्या जसोंदी खों देख कें सोचन लगी मोरे लाने भगवान ने बर भेजो है। ऊ की खातिरदारी करो चाइये। दासी खों भेजकें डेरा करा दव।

अव उनें सोची परीक्षा तो करो चाइये जो वर गरीब घराने को है या अमीर। ऊने दो लोटों में जल भरवाव। एक चांदी को दूसरो पीतर को। दोई लोटा महमान के लिंगा भिजवा दये। जसोंदी ने सोची, मैं तो जनम को गरीव आऊं, रोज पीतर के लोटासें पानी पियत हों; एक दिना चांदी के लोटासें पी लैहों तो का हुइये ?

ऐसी सोच उने पीतर को लोटा लै लव। अव जलकन्या ने दो थारीं परोसीं। एक में छप्पन भोजन और दूसरी में दार-भात। दोई पौचा दईं। जसोंदी ने सोची एक दिना छप्पन भोजन खाये सें का हुइये। जोभई लवक है। रोज तो दार-भात सें काम परने है। ईसें दार-भात खादो ठीक। ऊने दार-भात खा लव। छप्पन भोजन की थारी ज्यों-की-त्यों धरी रैन दई। जब रात भई तो ऊने एक तो नीकों पलका बिछवा दव जैपै लरम गदेला और सेंजें सुपेती बिछीं हतीं। दूसरी एक खटिया बिछवा दई और ऊपै कमरा डार दव। जसोंदी ने सोची अपनो काम तो रोज कमरई सें परत है, एक दिना सेजों-सुपेती पै सो कें का करहें। यो खटिया पै सो रथ। कन्या जान गई, जो निचाट गरीब घराने को आदमी है। ई कें संगे व्याव करबो जोग नैयां।

कछू दिना लों जसोंदी उतै रहो। सोची पहुनई हो गई अब

भागने लगा तो उसने दौड़कर उसकी पूंछ पकड़ ली। कुत्ता ताकतवर था। जसोंदी को घसीटकर ले जाने लगा। कुत्ता भोंहरे की राह से जाकर कुंए में कूद पड़ा। भीतर पहुंचा तो देखता क्या है कि एक सुन्दर बाग है। बाग में पहुंचते ही उसने पूंछ छोड़ दी। कुत्ता भागकर जलकन्या के पास जा खड़ा हुआ।

जलकन्या जसोंदी को देखकर विचार करने लगी कि मेरे लिए भगवान ने वर भेजा है। उसका आदर-सत्कार करना चाहिए। दासी को भेजकर डेरा करा दिया। अब उसने विचारा कि वर गरीब घराने का है या अमीर घराने का इसकी परीक्षा करनी चाहिए। उसने दो लोटों में जल भरवाया। एक चांदी का, दूसरा पीतल का। दोनों मेहमान के पास भिजवा दिये। जसोंदी ने सोचा कि मैं तो जन्म का गरीब हूं। नित्य पीतल के लोटे से जल पीता हूं। आज चांदी के लोटा से पी लूंगा तो क्या होगा? ऐसा सोचकर उसने पीतल का लोटा ले लिया। अब जलकन्या ने दो थालियां संजोईं। एक में छप्पन भोजन परोसे, दूसरे में दाल-भात। दोनों थालियां भिजवा दीं। जसोंदी ने सोचा कि एक दिन छप्पन भोजन खाने से क्या होगा? जीभ ही बिगड़ेगी। रोज तो दाल-भात से काम पड़ता है। इसलिए दाल-भात खा लिया और छप्पन भोजन की थाली ज्यों-की-त्यों रखी रही। जब रात हुई तो जलकन्या ने एक तो उत्तम पलंग बिछवाया, जिसपर नरम बिछौना और सफेद चादर बिछी थी दूसरी एक खटिया बिछवा दी और उसपर एक कम्बल डलवा दिया। जसोंदी ने सोचा कि अपना काम तो नित्य कम्बल से ही पड़ता है। एक दिन उजली सेज पर सो लूंगा तो क्या होगा? वह खाट पर सो गया। कन्या समझ गई कि यह बिल्कुल गरीब खानदान का आदमी है। इसके साथ विवाह करना ठीक नहीं है।

चलो चाइये। रातखों जब बेटी के संगं कुत्ता जान लगो तौ जसोंदी ने ऊ की पूंछ पकर लई। वो कुत्ता के साथ तला कें पार पै आ गव।

जसोंदी ने सोची जो सपनो राजाखों आव हतो वो मैं प्रत्यक्ष देख लव। अब राजा खों ल्याकें दिखा दव चाइये। राज भौत खुस हुइये। मोरो कसूर माफ कर दै है और कदाच व पर है तो खासी इनाम गठ है।

ऐसी सोच वो चलो और दूसरे दिना घरै आ गव। टपरिय के दोर पै ठाड़ो होकें टेरन लगो—मताई, ओ मताई! किबरिय खोलो।

मताई ने भीतर सुनी कोऊ टेरत है। वा बाहर आई। क देखत है कै ऊ को बेटा ठाड़ो है? वा कीक दैकें भगी। कान लगी—भूत है, भूत। मोरे लरका खों तो जल्लादों ने मार डारो है जो ऊ को रूप धरकें को आ गव? डर के मारें थर-थर कंपन लगी।

पीछे सें जसोंदी ने आकें कई—"मताई डराव नैं। मैं तोरो लरका आउं। जल्लादों ने हमें मारो नैयां, छोड़ दव है। लिंगा आकें देखो।"

डुकरिया खों परतीत हो गई। लरका खों पाकें डुकरिया की खुसी को पार नै रवो।

रात भई। खुल्ला पै सारंगी टंगी देखी तो मन हो आव। उठाकें बजाउन लगो। मतारी बोली, "बेटा अब ऐसी नादानी नै करो। राजा सुनहै तो बुलाकें मरवा डार है।" लरका बोलो, "का चिंता है? एक दिना तो सबईखों मरने है।" सारंगी रूं-रूं-रूं करके बज उठी। गीत की गुंजार दसई दिशों में फैल गई। राजा अपने महल में परो हतो। जसोंदी के कंठ की अवाज सुनी तो वो भौचक्का होके र गव। सोचन लगो,

कुछ दिन जसोंदी वहां रहा। सोचा कि अब तो मेहमानदारी हो चुकी अब चलना चाहिए। रात के समय जब बेटी के साथ कुत्ता जाने लगा तो जसोंदी ने उसकी पूंछ पकड़ ली। वह कुत्ते के साथ तालाब की पार पर आ गया।

जसोंदी मन में विचार करने लगा कि जो सपना राजा को आया था मैंने आंखों देख लिया। अब राजा को लाकर दिखाना चाहिए। राजा बहुत प्रसन्न होगा। ताज्जुब नहीं, कुछ भारी इनाम गठ जावे। मेरा अपराध तो माफ कर ही देगा। ऐसा सोच वह चला और दूसरे दिन घर पर आ पहुंचा। झोंपड़ी के द्वार पर खड़े होकर पुकारने लगा, "मां, ओ मां, किवाड़ खोल दो।" बुढ़िया ने भीतर से सुना कि कोई बुला रहा है। वह बाहर आई तो देखती क्या है कि उसका लड़का खड़ा है। वह चीख मारकर भागी। कहने लगी, "भूत है—भूत। मेरे लड़के को तो जल्लादों ने मार डाला है। यह उसका रूप बना कर कौन आ गया ?" वह डर के मारे थर-थर कांपने लगी। इतने में पीछे से जसोंदी ने आकर कहा, "मां, डरो मत। मैं तुम्हारा ही लड़का हूं। जल्लादों ने मुझे मारा नहीं है, छोड़ दिया है। पास आकर देखो।" बुढ़िया को भरोसा हो गया। लड़के को पाकर उसको खुशी का पार न रहा।

रात हुई। खूंटी पर सारंगी टंगी देखी तो उसका मन हो आया। वह सारंगी बजाने लगा। मां बोली, "बेटा, अब फिर ऐसी नादानी न कर। राजा सुन लेगा तो मरवा डालेगा।" लड़के ने निर्भय होकर कहा, "क्या चिंता है, मां! एक-न-एक दिन तो सभी को मरना है।" सारंगी रूं-रूं-रूं-रूं करके बज उठी। [illegible] दिशाओं में [illegible] महल में

पड़ा था। उसने जसोंदी के कंठ की आवाज सुनी तो वह चकित

जसोंदी तो मारो गव, फिर जी को गा रव है? अवाज तो बिल-कुल जसोंदी जैसी है। राजा ने हुक्म दव, "जो को गाव रव है तुरत पकर ल्याओ।" सिपाई ने जसोंदी को पकर कें राजा के सामने ठाड़ो कर दव।

राजा की नजर जसोंदी पै परी तो अचक कें रै गव। बोलो "अरे तू कहां से आ गव? का जल्लादों ने मारो नैयां?" जसोंदी ने उत्तर दव, "सरकार, आपई के काम के लाने कछू दिनन की मुहलत मांग लई है। एक जरूरी काम सें सरकार के पास आव हों। मरजी होय तों सुनाऊं?" राजा बोलो "सुनाओ। जसोंदी" कहन लगो, "सरकार आपने जो कछू सपने में देखो हतो वो हमने प्रत्यक्ष देख लव है। हमारे संगे चलवो होय, मैं आपखों आंखों सें दिखा दऊं।" जसोंदी की बात सुनकें राजा उछल परो। कान लगो, "सांची कैत है?" जसोंदी बोलो "सांची कात हों राजा साब, सांची। चनकट को का उधार, भुनसरां संगे चलो और अपनी आंखों से देख लेव।" राजा बोलो, जसोंदी, जो तुम हमखों हमारो सपनो प्रत्यक्ष बता दै हो तो हम तुम खों मौं मांगी इनाम देहैं और राज को मंत्री बना देहैं।" राजा की बात सुनकें दसोंदी की बांछें खिल गईं। बोलो, "सरकार, अब मैं घर जात हों। भ्याने अबसई चलवो होय।"

भुनसरा होतऊं राजा ने दौ ठौल घोड़ा तैयार कराये। एक पै राजा बैठो, दूसरे पै जसोंदी। दोई चले। चलत-चलत दिन लटकें तला की पार पै जा पौंचे। घोड़ा कछू दूर एक रूख सें बांध दये। तोबरों में दानो चढ़ा दव। तला की पार पै बैठ के दोई जनों ने भोजन करे और लौलैयां लगतऊं पेड़े पै चढ़ गये। जब कछू रात बीत गई तब राजा पूछन लगो, "बा कितनी बिरियां आउत है?" जसोंदी ने जुआप दव, "बस राजा साब, तनक देर में आवन चाहत है।" कछू समय इत-उत की बातों में और बीत गव। इतने में पैजनों की झनकार सुना परी।

होकर रह गया। आवाज तो बिल्कुल जसोंदी की जैसी है। राजा ने हुक्म दिया, "इस गानेवाले को पकड़ लाओ।" सिपाही ने जसोंदी को पकड़कर राजा के सामने खड़ा कर दिया।

राजा की नजर जसोंदी पर पड़ी तो वह भौंचक्का-सा रह गया। बोला, "अरे, तू कहां से आ गया? क्या तुझे जल्लादों ने मारा नहीं है?" जसोंदी ने उत्तर दिया, "महाराज, आप ही के काम के लिए कुछ दिनों की मुहलत मांग ली है। एक जरूरी काम से आपके पास आया हूं। आपकी आज्ञा हो तो सुनाऊं?" राजा बोला, "सुनाओ।" जसोंदी कहने लगा, "महाराज, आपने जो-कुछ सपने में देखा था वह मैं अपनी आंखों देख आया हूं। आप मेरे साथ चलने की कृपा करें। मैं आपको प्रत्यक्ष आपकी आंखों से दिखा दूंगा।" जसोंदी की बात सुनकर राजा खुशी से उछल पड़ा। बोला, "सच कहता है?" जसोंदी ने जवाब दिया— "सच कहता हूं, महाराज, सच! 'चनकट को क्या उधार।' सवेरे हमारे साथ चलिए और अपनी आंखों से देख लीजिये।" राजा बोला, "जसोंदी, जो तुम मेरा सपना मुझे प्रत्यक्ष दिखा दोगे, तो मैं तुमको मुंहमांगा इनाम दूंगा और तुम्हें राज्य का मंत्री बना दूंगा।" यह सुनकर जसोंदी की बांछें खिल गईं। वह बोला, "महाराज, अब मैं घर जाता हूं। सवेरे अवश्य ही चलिए।"

सवेरा होते ही राजा ने दो घोड़े तैयार कराये। एक पर राजा बैठा, दूसरे पर जसोंदी। दोनों चले। चलते-चलते दिन ढले तालाब के किनारे जा पहुंचे। घोड़े कुछ दूर एक पेड़ से बांध दिये। दाना-पानी दे दिया। तालाब के किनारे बैठकर दोनों ने खाया-पिया और संध्या होते ही दोनों पेड़ पर चढ़ गये। जब कुछ रात बीत गई, तब राजा पूछने लगा, "वह कब आती है?" जसोंदी ने उत्तर दिया, "बस महाराज, थोड़ी देर में आने ही वाली है।" कुछ समय और यहां-वहां की बातों में बीत

जसोंदी बोलो, "राजा साब हुसयार हो जाव, जलकन्या आ
है।" राजा टकटकी लगा कैं देखन लगो। जलकन्या अपने
को उजयारो फैलाउत आई और तला की पार पै ठाड़ी हो गई
देखतऊं राजा खों क्षमा आ गव। जब कछू समाधान भव
कान लगो, "बस, बस, जई आय। एईखां सपने में देखी हती
कैसी नोनीं लगत है। काय जसोंदी तुमने तो नीरे सें दे
हुइये?" जसोंदी बोलो, "राजा साब, उकताव नैं धीरज धरो
भ्याने भुनसारें तुम खुद नीरे सें देख लियो। अबैं तो चुपचा
बैठे-बैठे तमाशो देखो।"

जलकन्या ने देह पैसें चोली उतारी, तला में घुसी और सप
खोर कें सूखे उन्ना पैरे। फिर मंदिर में जाकें पूजा करी और सा
मुठी चून चढ़ाकें चली गई। जसोंदी सपाटे सें उतरो और मंदि
में जाकें चून उठा लव। राजाखों बुलाकें कई, "तुम बैठो, ह
रोटी बनाउत हैं।"

जब रोटी बनकें तैयार हो गई तब बोलो, "सुनो राजा साब
कुत्ता जब रोटी लैकें भगन लग है तब हम ऊकी पूंछ पक
लेहें। तुम सोई लपककें हमारो हात ग्रह लियो। बज्जुर कं
गहियो, जी सें छूटन नैं पावै। हुसयार हो जाव।"

इतनी कहकें दोई जने तला की ओर गये। कुत्ता बैठो-बैं
छक्का तक रव हतो। उनके हटतऊं वो उठो और रोटी लैव
भगन लगो। जसोंदी मौ तक देख रव हतो। झपट्ट कें ऊने ए
हात सें कुत्ता की पूंछ पकर लई और दूसरो हात राजा की ओ
फैला दव। राजा ने ऊको हात गह लव। कुत्ता ताकतवर हतो
दोई जने कुड़रत गये। वो कूंद कै मंदिर में घुस गव औ
भोंहरे की रस्ता सें जाकें कुआ सें कूंद परो। नैंचे आये तं
फुलवारी में पोंच गए। जसोंदी ने पूंछ छोड़ दई। दोई जं
बाग देखन लगे। अजूबा बाग हतो। राजा ने ऐसो बाग अपनं
जिंदगी में कभऊं नें देखो हतो। देखतई बनत तो।

गया। इतने में पेंजनों की झनकार सुनाई दी। जसोंदी बोला, "महाराज, होशियार हो जाइये। जलकन्या आ रही है।" राजा ध्यानपूर्वक देखने लगा। जलकन्या अपने रूप का प्रकाश फैलाती हुई तालाब के पार पर आ खड़ी हुई। देखते ही राजा को मूर्च्छा आ गई। कुछ समय में जब सावधान हुआ तो कहने लगा, "बस-बस, यही है। इसी को मैंने सपने में देखा था। कैसी भली लगती है! क्यों जसोंदी, तुमने उसे नजदीक से तो देखा होगा?" जसोंदी बोला, "महाराज, आतुर मत हूजिये। धीरज रखिये। कल सवेरे आप उसे नजदीक से देख सकेंगे। अभी तो चुप बैठिये और तमाशा देखिये।"

जलकन्या ने देह पर से चोली उतारी, तालाब में घुसी और स्नान करके सूखी धोती पहनी। फिर मंदिर में जाकर पूजा की और सात मुट्ठी आटा चढ़ाकर चली गई। जसोंदी सपाटे से उतरा और मंदिर में जाकर आटा उठा लिया। फिर उसने राजा को बुलाकर कहा, "आप बैठिये, मैं रोटी बनाता हूं।" जब रोटियां बनकर तैयार हो गई, तब जसोंदी कहने लगा, "सुनिये, राजासाहब, कुत्ता जब रोटियां लेकर भागने लगेगा, तब मैं दौड़कर उसकी पूंछ पकड़ लूंगा। आप भी भागकर मेरा एक हाथ पकड़ लें। हाथ मजबूती से पकड़ें, जिससे छूटने न पाये। अब सावधान हो जाइये।" इतना कह दोनों तालाब की ओर गये। कुत्ता बैठा हुआ मौका ताक रहा था। ज्योंही वे वहां से हटे कि वह रोटियां लेकर भागा। जसोंदी तो देख ही रहा था। दौड़कर उसने एक हाथ से उसकी पूंछ पकड़ ली और दूसरा हाथ राजा की ओर फैला दिया। राजा ने उसका हाथ पकड़ लिया। कुत्ता ताकतवर था। दोनों को घसीटकर ले गया। कुत्ता कूदकर मंदिर में चला गया और भोंहरे के मार्ग से जाकर कुएं में कूद पड़ा। [illegible] बाग में पहुंच गये। जसोंदी ने पूंछ छोड़ दी। दोनों बाग में घूमने लगे। राजा ने ऐसा

जलकन्या जसोंदी खों तौ चीनत हती, ऊके संगे एक सु
युवक देख कै प्रसन्न हो गई। मन में कान लगी, भगवान ने अ
मोरे लाने सुन्दर वर भेजो है। दासी भेजकें महलन में डेरा क
दव। खूब आव-भगत करी।

जलकन्या ने सोची अब परीक्षा लव चाइये। ऊने जो
परीक्षा जसोंदी की लई हती वैसई राजा की लई। चांदी औ
पीतर के चरुओं में जल भेजो। राजा ने चांदी को लै लव औ
पीतर को जसोंदी खों दै दव।

बेटी मन में कान लगी—ठीक। जो राजा मालूम परत
और वो चाकर। सब तरां से परीक्षा लै लई। बेटी को मन भ
गव। दोई जनों को व्याव हो गव। तीनई जनें—जलकन्या
राजा और जसोंदी राजधानी में आ गये। राजा ने जसोंदी ख
मंत्री बना दव। अबका है? जसोंदी के दिन फिर गये। ठाट
बाट से रान लगो।

एक दिना की बात राजा-रानी दोई बैठे बतकाव कर र
हते। राजा बोलो, "रानी साब, इतै-रैत रैत मन उकता गव है
चलो नै कछू दिनन खों सैर-सपाटो कर आइये?"

रानी पतिव्रता हतो। हरदम राजा को रुख देख कें चलत
हती। राजा की बात सुनकें बोली, भौत अच्छी बात है। जैसी
आपकी मरजी। हमें तो उतई नोंनों लगत है जहां आप रात
हो।"

राजा, रानी और जसोंदी मंत्री तीनई जनें अपने-अपने घोड़ों
पै असवार होकें चले। चलत-चलत दो-चार कोस निकर गये।
जब टीकाटीक दुपरिया हो गई तो एक पेड़ की छाया तरें उतर
परे। रानी ने कलेवा को डबा निकारो। राजा और मंत्री खों
भोजन कराकें आप खावे के लाने बैठी। थारी परोसी हती,
इतने में ऊपर डगार से एक सुआ टपको और रानी की थारी कें
लगा मर गव। रानी बोली, "राजा साब मुरदा डरो है।

विचित्र बाग अपनी जिंदगी में कभी नहीं देखा था। देखते ही बनता था।

जलकन्या जसोंदी को पहचानती थी। उसके साथ एक सुन्दर युवक को देखकर प्रसन्न हुई। मन में विचारने लगी कि भगवान ने आज मेरे लिए सुन्दर वर भेजा है। दासी भेजकर महल में डेरा करा दिया। खूब आदर-सत्कार किया।

जलकन्या ने सोचा कि अब परीक्षा लेनी चाहिए। उसने जैसी परीक्षा जसोंदी की ली थी, वैसी ही राजा की ली। चांदी और पीतल के लोटों में जल भेजा। राजा ने चांदी का लोटा ले लिया और जसोंदी को पीतल का दे दिया। बेटी मन में कहने लगी कि हो-न-हो, यह राजा मालूम पड़ता है और वह नौकर। सब प्रकार से परीक्षा ले ली। बेटी का मन भर गया। अब क्या था! दोनों का विवाह हो गया। तीनों जने—राजा, जलकन्या और जसोंदी राजधानी में आ गये। राजा ने जसोंदी को मंत्री बना दिया। जसोंदी के दिन फिर गये। वह ठाट-बाट से रहने लगा।

एक समय की बात है कि राजा-रानी बैठे बातचीत कर रहे थे। राजा बोला, "रानी, यहां रहते-रहते मन ऊब गया है, चलो न, कुछ दिन बाहर सैर कर आवें।"

रानी पतिव्रता थी। हमेशा राजा का रुख देखकर चलती थी। राजा की बात सुनकर बोली, "बहुत अच्छी बात है। मुझे तो वहीं अच्छा लगता है, जहां आप रहते हैं।"

राजा, रानी और जसोंदी मंत्री, तीनों अपने-अपने घोड़ों पर सवार होकर चले। चलते-चलते दो-चार कोस निकल गये। जब ठीक दोपहर हो गई तो एक पेड़ की छाया में तीनों उतर पड़े। रानी ने भोजन का डिब्बा निकाला। राजा और मंत्री को भोजन [illegible]। वह भी अपने लिए [illegible] बैठी। इतने में पेड़ पर से एक सुआ गिरा और छटपटाकर मर गया। रानी

धरम कहत है कै मुरदा रहत भोजन नैं करो चइये। ईसें आ
ईखों जिंदा कर देव।" राजा बोलो, "रानी साब, जिंदा करवे
बाएं हात को खेल है, पै संजीवनी गुटका तो घरै छोड़ आ
हों।" राजा ने जसोंदी से कई, "तुम जल्दी जाओ और घर
गुटका उठा ल्याव। उलायते अइयो। रानी साब भूखीं बैठी
हैं। पै खबरदार गुटका को खोल कें नै पढ़ियो।" जैसी मरजी
कहकें जसोंदी चलो गव। महलन में जाकें गुटका उठाओ और
तुरतई लौट परौ। गली में ऊने सोची, जी डारवे को मंत्र कैसो
होत है, हमें सोई सीख लव चइये। पुस्तक खोलकें गली-गली
मंत्र घोकत आव। ठिकाने पै आव तो पुस्तक राजा के हात में
दै दई। राजा ने पुस्तक खोली। मंत्र पढ़कें अपने शरीर सें प्रान
निकारे और सुआ के शरीर में डाल दये। सुआ फड़फड़ा कें
उठो और डार पै जा बैठो। राजा की निर्जीव देह डरी देख
जसोंदी के मन में वद दयांती उठी और ऊने मंत्र पढ़कें अपने
प्रान निकार के राजा के शरीर में डार दिये। राजा को शरीर
तो उठ बैठो और जसोंदी को शरीर मुरदा होकें धरती पै गिर
परो। रानी समझ गई। धोको हो गव। बिचारी हाय खाकें
रै गई। कछू उपाव नैं सूझो। जसोंदी, जो राजा के शरीर में
हतो, बोलो, "चलो रानी साब, सैर हो चुकी, महलन खों
चलिये।" रानी वेवस होंके कछू ऊतर दये बिना ऊके संग
लौटके महलों खों आ गई।

अब का हतो? राजा तो सुआ बन गव और जसोंदी राजा।
लोगन ने पूंछी मंत्री जू कहां रै गए? तो कै दई, भगवान की
लीला, वो तो मर गव। लरका को मरवो सुनके जसोंदन
डुकरिया खूब बिलख-बिलख के रोउन लगी। राजा ने ऊखों
अच्छी तरां समझाकें कही—बड़ी चिंता नैं करो। हम तुमाये
दूसरे लरका मौजूद हैं हम तुम्हारो सब इंतजाम राख हैं।"

बोली, "महाराज, मुर्दा सामने पड़ा है। धर्म कहता है कि मुरदे के रहते भोजन नहीं करना चाहिए। इस कारण आप इसे जिंदा कर दीजिए।"

राजा बोला, "रानी, जिंदा करना बाएं हाथ का खेल है। पर संजीवनी पुस्तक तो घर छोड़ आया हूं।" राजा जसोंदी से बोला, "तुम शीघ्र जाओ और घर से पुस्तक उठाकर लाओ। जल्दी आना। रानी भूखी बैठी हैं। पर देखो, पुस्तक को खोल कर मत पढ़ना।"

"जो आज्ञा!" कहकर मंत्री चला गया। महल में जाकर पुस्तक उठाई और तुरन्त लौट पड़ा। रास्ते में उसने सोचा कि जिंदा करने का मंत्र कैसा होता है, मुझे भी सीख लेना चाहिए। पुस्तक खोलकर रास्ते में मंत्र याद करता आया। ठिकाने पर पहुंचा तो पुस्तक राजासाहब के हाथ में दे दी। राजा ने पुस्तक खोली। मंत्र पढ़कर अपने शरीर से प्राण निकाले और सुआ के शरीर में डाल दिये। सुआ फड़फड़ाकर उठा और डालपर जा बैठा। राजा की निर्जीव देह पड़ी देखकर जसोंदी के मन में कपट उत्पन्न हुआ। उसने मंत्र पढ़कर अपने प्राण निकालकर राजा के शरीर में डाल दिये। राजा का शरीर उठ बैठा और जसोंदी का शरीर मुरदा हो गया। रानी समझ गई कि धोखा हो गया। बेचारी "हाय" कहकर रह गई। उसे कुछ उपाय न सूझा। जसोंदी, जो अब राजा के शरीर में था, बोला, "चलो रानी, सैर हो चुकी, अब महल में चलें।" रानी ने कोई उत्तर नहीं दिया। बेबस होकर चुपचाप उसके साथ महल लौट आई।

अब क्या था! राजा तो सुआ बन गया और जसोंदी राजा। लोगों ने पूछा, "मंत्रीजी कहां रह गये," तो कह दिया कि भगवान की लीला! उनका तो स्वर्गवास हो गया। लड़के का मरना सुनकर जसोंदन बुढ़िया बहुत रोई। राजा ने उसे अच्छी

राजा ने डुकरिया की सेवा के लाने कुल्ल दासीं राख दईं।

बीच में जो खेल हो गव ऊखों रानी और जसोंदी के सिवाय कोऊ नै जानत हतो। जसोंदी सुख सें राज करन लगो। रानी दिन-पै-दिन सूखन लगी। एक दिना जब जसोंदी रानी के लिंगा गव तब रानी बोली, "सुनो राजा साब, जो कछू होने हतो सो गव। अब मैं तुमाई हो चुकी। पै मैंने तीन साल को ब्रत लव हैं। ऊखों पूरो हो जान देव, फिर तुम राजा और हम रानी।" जसोंदी नें सोची उकताये सें काम नसा जैहै। मैं राजा तो बनई गव हों।' कोऊ कछू भेद नईं जाने। जो कऊं जोरजबर-दस्ती करत हों तो रानी भेद खोल दैहैं और बनो-बनाओ काम बिगर जैहै। ईसे गम खाये सें ही भलाई है। तीन बरस पीछूं रानी सोई मिल जैहै। ऐंसी सोंच जसोंदी ने रानी की बात मान लई।

जलकन्या ने सोची अपने पति को खोज करो चाइये। ऊने गांव-गांव में डोंड़ी पिटवा दई कै जो कोऊ जितने जियत सुआ पकर कें ल्याहै, बाए उतनेई रुपैया दैहों। बहेलिया सुआ पकर-पकर के ल्याउन लगे। जल-कन्या सबखों रुपैया दे कें सुओं खों परख-परख के छुड़ा देत हती। जो सुआ कछू हुसयार सो दिखात हतो बाए पिंजरा में पाल लेत ती। इतरां रोज हजारन सुआ आउन लगे।

इतै को हाल सुन लव, अब सुआ को किस्सा सुनो।

सुआ के शरीर में घुसकें राजा पेड़ की एक डगार पै जा बैंठो हतो। जसोंदी ने ऊके संगे जो छल-कपट करो ऊने अपनी आंखों देखो हतो। अब राजासुआ मनई मन पछतान लगो। मैं भौत चुका खा गव। अब तो बात बिगर गई है। देखो भगवान आगें का करत हैं, ऐसी सोंच वो उड़ चलो। उड़त-उड़त कछू दूर जाकें का देखत है कैं एक रूख पैं हजारन सुआ बैठे हैं। वो उनमें जा मिलो। सब सुआ ने ईकी चतुरई देखकें अपने

तरह समझाया। कहा, "माताजी, चिंता मत करो। तुम्हारा दूसरा लड़का मैं बना हूं। मैं तुम्हारी सब खबरदारी रखूंगा।" ऐसा कहकर उसने बुढ़िया की सेवा के लिए अनेक दासियां रख दीं।

बीच में जो खेल हो गया, उसे रानी और जसोंदी के सिवा कोई न जानता था। जसोंदी सुख से राज करने लगा। रानी दिन-पर-दिन सूखने लगी। एक दिन जसोंदी जब रानी के पास गया तो रानी बोली, "सुनो महाराज, जो कुछ होना था, सो हो गया। अब मैं तुम्हारी हो चुकी। पर मैंने तीन साल के लिए व्रत लिया है, उसे पूरा हो जाने दो। फिर तुम राजा और मैं रानी।" जसोंदी ने सोचा कि जल्दबाजी से काम बिगड़ जायगा। मैं राजा तो बन ही गया हूं। कोई कुछ भेद जानता नहीं। यदि जोर-जबरदस्ती की गई तो रानी भेद खोल देगी। बना-बनाया काम बिगड़ जायगा। इससे ग़म खाने ही में भलाई है। तीन वर्ष बाद रानी मिल ही जायगी। ऐसा सोच उसने रानी की बात मान ली।

जलकन्या ने अपने पति को खोजने की बात सोची। उसने गांव-गांव में मुनादी करवा दी—जो कोई जितने जीते सुआ पकड़कर मेरे पास ले आयगा उसे उतने ही रुपये दिये जायंगे। बहेलिया लोग सुआ पकड़-पकड़कर लाने लगे। जलकन्या सबको रुपये देकर और सुओं को देख-परखकर छुड़वा देती। जो सुआ होशियार दीखता, उसे पिंजरे में रख लेती। इस प्रकार नित्य हजारों सुआ आने लगे।

इधर तो यह हो रहा था, उधर सुए का हाल सुनिये। सुआ के शरीर में घुसकर राजा पेड़ की डाल पर जा बैठा था। जसोंदी ने उसके साथ जो छल किया, वह भी उसने देख लिया था। अब राजा [illegible]
बिगड़ गई। देखो, अब भगवान आगे क्या करता है! ऐसा सोच

झुंड को राजा बना लव। सलाय होन लगी, आज चरबे खों कहां चलो चाइये ? कोऊ ने ठिकानो बताव। ऊ गांव के लिंगां एक भौत बड़ो आम को पेड़ो है वो लद-बदौअन फरो है। आज ओई की अमिया खाव चाइये। बात सबने मंजूर कर लई। राजासुआ बोलो, "ठीक, उतई चलो। पै एक सुआ आगे-आगे उड़े। पाछू सब उड़ें। सबके पाछू मैं रह हों। जो सुआ आगे चले वो जब रूख पै बैठन लगे तो अच्छी तरां देख लये, कौनऊ खतरा तो नैयां। और जो कऊं-मऊ खतरा दिखाय तो सबखों हुसयार कर देवे।"

सुओं को झुंड उड़ चलो। अगुआ सुआ उड़त-उड़त जाके ओई आम के उपर बैठ गव। राजासुआ के कहवे को कछू खयाल नैं रक्खो। बैठतऊं ओखों अंदाज परो—मैं तो जाल में फंस गव! ऊने सोची जो हम कछू कैत हैं तो सब भाग जै हैं और मैं अकेलो फंसो रह जैहों। ईसें जैसी मोरी गत भई ऊंसई सबकी होन दे। वो चिमानो बैठो रव। पाछू से सब झुंड आकें पेड़ पै बैठ गव। राजासुआ सबकी देख-रेख करत पाछू आ रव हतो। वो सोई आकें पेड़े की टुनग पै जाकें बैठ गव। थोरी देर में सबखों पतो चल गव। हम सब फंस गये हैं। राजासुआ बोलो, "कौन सुआ आगे आव हतो ? ऊने सब खां सचेत काय नें करो? देखो हम सब जाल में फंस गये। सबकी जान जोखम में है। पै जो तुम सब हमाई कई मानो तो सबके प्रान बच सकत हैं। एक काम करो, तुम सबके सब अपनी अपनी धीचें नैचेखों लटका कें ऐसे रै जाव मानो मर गए होव। बहेलिया आहे तो मरे जान के हम सबखों जाल में से निकार कें धरती पै डार दैहे। अपन एक हजार एक हैं। जो सुआ पैलऊ धरती फेंको जाय वो मन सें गिनती करत रहे। जब गिनती पूरी हो जाय तो [illegible] जल्दी ऊंसई दमक सब उड़ जावें। सब सुओं ने बात मान लई।

वह उड़ा और उड़ते-उड़ते कुछ दूर जाकर उसने देखा कि एक पेड़ पर हजारों सुए बैठे हैं। वह उनमें जा मिला। इसकी चतुराई देख कर सब सुओं ने उसे अपना राजा मान लिया। सलाह होने लगी कि चुगने के लिए आज कहां चलना चाहिए? किसीने ठिकाना बताया—उस गांव के पास एक बहुत बड़ा आम का पेड़ है, वह खूब फला है। आज उसीकी अमियां खानी चाहिए। बात सबने मंजूर कर ली।

राजासुआ बोला, "ठीक है, वहीं चलो। परंतु एक सुआ आगे-आगे चले। जब उस पेड़ पर बैठने लगे तो उसे अच्छी तरह देख ले। कहीं कोई खतरा तो नहीं है। फिर बैठे। यदि कोई खतरा दिखाई दे तो वह सब सुओं को सावधान कर दे।

सुओं का झुण्ड उड़ चला। अगुआ सुआ उड़ते-उड़ते उसी आम के वृक्ष पर जाकर बैठ गया। राजासुआ के कहने का कुछ खयाल न किया। बैठते ही उसे अंदाज पड़ गया कि वह जाल में फंस गया है। उसने सोचा कि अब अगर दूसरे सुओं को साव-धान करता हूं तो वे सब भाग जायंगे और मैं अकेला फंसा रह जाऊंगा। जैसी मेरी गति हुई, वैसी सबकी क्यों न हो? वह चुप-चाप बैठा रहा। पीछे से सारा झुण्ड आकर पेड़ पर बैठ गया। राजासुआ भी पीछे से आकर पेड़ की चोटी पर बैठ गया। थोड़ी देर में सबको पता चल गया कि वे सब फंस गये हैं। राजासुआ बोला, "आगे कौन सुआ आया था? उसने सबको सचेत क्यों नहीं किया? देखो, एक की गलती से हम सब जाल में फंस गये। सबकी जान जोखिम में है। पर खैर, जो तुम सब अब भी मेरा कहना मानो तो सबकी जान बच सकती है। तुम सब अपनी-अपनी गर्दन नीचे लटका लो, मानो मर गये हो। बहेलिया आयगा, वह हम सबको मरा जान कर हरेक को जाल से निकालकर जमीन पर फेंकता जायगा। जो [illegible] गिनती करता जाय। हम सब एक हजार एक हैं। जब गिनती पूरी हो

सब घींच लटकाकें रै गये ।

बहेलियां आव तो दूर सें का देखत है कै आज सुओं से पेड़
भरौ है । वो आनन्द से फूल गव । सोचन लगो आज तो हजारन
रुपैयन को सेजो दिखात है । पै जब लिगा आव तो सबरी खुशी
बिला गई । सब सुआ मर गये । सबकी घींचें लटक परी हैं । पेड़ पै
चढ़कें देखन लगो और उनखों मरे जान एक-एक खों निकार कें
धरती पै फेंकवो शुरू कर दव । पैलो सुआ गिनती करत गव ।
सब सुआ मुरदा की नाईं डरे रहे । वो एक हजार सुआ निकार
कें फेंक चुको । ऊने देखो एक सुआ ऊपर टुनग पै बैठो है । ऊपर
चढ़न लगो तो ऊके हात को बका सटक कें धरती पै गिर गव ।
पैले सुआ ने सोची एक हजार एक धमाके पूरे हो गये । वो फा
सें उड़ गव । ऊखों उड़त देख सबई उड़ गये । बहेलिया ने जो
तमाशो देखो तो ठगो सो रै गव । सोचन लगो—सुआ बहुत
बदमाश निकारे । देखो, मोय, कैसो मूरख बना दव । पै अबै
एक सुआ बचो है । सारे खों भूंजकें खैहों । ऊपर चढ़कें राजा-
सुआ खों पकर लव । नैचें उतरो । कहन लगो, "जो सुआ सब
को सरदार जान परत है । ऐई ने आज हजार रुपैयन पै पानी
डारो है । ईखों आगी में भूंज हो ।" राजासुआ बोलो, "तुम
कायखों ऊनों मन करत हो, जलकन्या के पास हमें लै चलो, हम
तुम्हें दूने रुपैया दुआ देहें ।" बहेलिया सुआ को बांधो जल-
कन्या के पास पौंचो । ऊने पूंछी, "ई सुआ की का कीमत है ?"
बहेलिया बोलो, "सुआ अपनी कीमत आप बता दैहे ।"

रानी बोली, "कहो तोताराम, तुम्हारी का कीमत है ?"

तोता बोलो, "रानी साब, हमरि मोल को कछू कूत नैयां ।
हजारों-लाखों भी थोरे हैं१ पै ई बहेलियाखों आप दो हजार
रुपैया दे देव ।"

सुआ की चतुराई देखकें रानी ने सोची होय-न-होय जोई

जाय तो पहला सुआ उड़ जाय। उसे देख सभी सुए उड़ जायं। इस प्रकार सबकी जान बच जायगी।

सुओं ने बात मान ली। सब गर्दन लटकाकर रह गये। बहेलिया आया तो दूर से देखता क्या है कि आज सुओं से पेड़ भरा है। वह आनंद से फूल उठा। सोचने लगा कि आज हजार रुपये पक जायंगे। पर जब पास पहुंचा तो उसकी सारी खुशी गायब हो गई। देखा कि सब सुए मर गये हैं। सबकी गर्दनें नीचे लटकी हैं। वह पेड़ पर चढ़कर देखने लगा और उनको मरे हुए जानकर जाल में से निकाल-निकालकर नीचे फेंकने लगा। पहले जो सुआ फेंका गया, वह गिनती करता गया। सब सुए मुरदे की तरह पड़े रहे। बहेलिया एक हजार सुआ निकालकर फेंक चुका। उसने देखा कि एक सुआ ऊपर चोटी पर बैठा है। उसे निकालने ऊपर की डाल पर चढ़ने लगा। चढ़ते समय उसके हाथ का बका सटककर नीचे गिर गया। पहले सुए ने सोचा कि एक हजार एक धमाके हो चुके। वह फर्र से उड़ गया। उसके उड़ते ही शेष सब उड़ गये। बहेलिया यह तमाशा देखकर ठगा-सा रह गया। मन में विचार करने लगा कि ये सुए बड़े चालाक निकले। देखो, मुझे कैसा मूर्ख बना दिया! पर अभी एक सुआ बचा है। उसको भूनकर खाऊंगा। ऊपर चढ़कर उसने राजासुआ को भी पकड़ लिया। पेड़ से नीचे उतरा। कहने लगा, "यह सुआ सबसे बड़ा है। यही सबका सरदार मालूम पड़ता है। इसीने मेरे हजार रुपयों पर आज पानी फिरवाया है। इसको भूनकर न खाऊं तो मेरा नाम नहीं।" राजासुआ बोला, "तुम अपना मन क्यों गिराते हो? मुझे जलकन्या के पास ले चलो, मैं तुम्हें दूना रुपया दिलवा दूंगा।" बहेलिया को आशा बंधी, वह उसे जलकन्या के पास ले गया। सुन्दर सुआ देखकर जलकन्या

ने उसकी कीमत पूछी। बहेलिया बोला, "रानीजी, सुआ अपनी कीमत आप बतला देगा।" रानी ने तोते से पूछा,

हमारो पति हुइये। ऊने भट दो हजार रुपैया बहेलिया खों गि दये और सुआखों सोने के पिंजरा में धर कें सब सुश्रों के बीच में टांग दव। रानी ईखों प्रानों की जागा राखन लगी।

अब जा किस्सा इतई छोड़ कें एक राउत को किस्सा सुनाउं हों। कौनऊं गांव में एक राउत हते। उनके लरका को व्याव हतो। बरात जा रई ती। दूला म्याने में बैठो हतो। बरात चली जा रई हती। चलत-चलत गैल में एक नदिया मिली। दूलाखों निस्तार खों जाने हतो। ऊने म्यानो रुकवा लव और लोटा लैकें मैदान खों चलो गव। ऊ नदिया की ढी पै एक पीपर हतो। ऊमें एक प्रेत रात हतो। प्रेत ने दूला खों मैदान में जात देखो तो वो दूला को रूप बनाकें म्याके में आन बैठो। कहारों से बोलो, "म्यानो लै चलो।"

कहार म्यानो उठाकें चलन लगे। इतने में दूला हात धोंकें आव तो चिल्यानो—"अरे म्यानो कहां लय जात हो। हमें तो बैठ जान देव।"

वो दौर कें म्याने के पास पोचों। देखत का है हमारे ई रूप-रंग को एक दूसरो दूला म्याने में बैठो है। ऊने हल्ला मचाओ। दूला को बाप और बराती सब जुट आये। एक रूप-रंग के दो दूला देखकें सब हैरत में पर गये। कोऊ कछू निश्चो नैं कर सको, कौन असली दूला आय। आखर हार कें सब जने उनखों राजा के लिंगा ले गये। सब हाल सुनाव। दोई दूल्हों को एक सूरत के देखकें राजा सोई कछू निर्णय नै कर सको। वे निराश होकें लौटने लगे।

गंगाराम रानी सें कहन लगो, "सनो रानी साब, राजाखों प्रजा के भगड़े सुरझाव चाइये। जो राजा भगड़े नई सुरभा सके वो काय को राजा? ई बदनामी सें तो मरबो कबूल। तुमाई रजा होय तो मैं ई भगड़ा खों सरभा दऊं?"

कहो तोताराम, तुम्हारी क्या कीमत है?" तोता बोला, "रानी-
ाहिबा, मेरी कीमत का कोई अंदाज नहीं है। लाखों रुपये भी
ाड़े हैं। परंतु आप इस बहेलिया को दो हजार रुपये दे दीजिये।"
आ की चतुराई देखकर रानी ने बहेलिया को दो हजार रुपये
दिये। सुआ को सोने के पिंजरे में रखकर सब सुओं के बीचें
टांग दिया। रानी इसे प्राणों की तरह रखने लगी।

इधर यह हुआ, उधर एक रावत का किस्सा सुनिये। किसी
ांव में एक रावत था। उसके लड़के का ब्याह था। बारात जा
ही थी। दूल्हा म्याने में बैठा था। बारात चली जा रही थी।
लते-चलते रास्ते में एक नदी मिली। दूल्हा को निबटने के
लए जाना था। उसने म्याना रुकवा लिया और लोटा लेकर
ैदान को चला गया। उस नदी के किनारे एक पीपल का पेड़
ा। उस पेड़ पर एक प्रेत रहता था। उसने दूल्हा को मैदान
जाते देखा तो वह दूल्हा का रूप बनाकर म्याने में जा बैठा।
हारों से कहा, "म्याना ले चलो।" कहार चलने लगे। इतने
दूल्हा हाथ-मुंह धोकर आया तो देखता क्या है कि म्याना
ा रहा है। उसने कहारों को पुकारा, "मुझे छोड़कर म्याना
हां लिये जा रहे हो?" म्याना रुक गया। दूल्हा दौड़कर
उसके पास पहुंचा तो देखता क्या है कि ठीक उसीके रंग-रूप
ा एक दूसरा दूल्हा म्याने में बैठा है। उसने हल्ला मचाया।
राती और दूल्हा का बाप, सब जुड़ आये। एक ही तरह के दो
ूल्हे देखकर सब हैरत में पड़ गये। असली दूल्हा कौन है, कुछ
निश्चय न कर सके। आखिर सब लोग उनको लेकर राजा के
ास पहुंचे। एक सूरत के दोनों दूल्हे देख राजा भी कुछ निश्चय
कर सका। दोनों अपने को रावत का लड़का बतलाते थे।
निराश होकर लौटने लगे। यह देखकर तोताराम रानी से
ोला, "सुनो रानी साहिबा, राजा को रयत के झगड़े सुलझाने
ाहिए। जो राजा झगड़े न सुलझा सके, वह काहे का राजा

रानी बोली, "नेकी उर पूंछ-पूंछ। ईसें बड़कें बात है? तुम झगड़ा सुरझा दै हो तो राज की पत तो रै जैहे।"

फरयादी फिर बुलाये गए। राजासुआ को पिंजरा बाह कचैरी में टांगो गव। सुआ ने दोई दूलों खों बुलाकें पैल अच्छी तरां देखो फिर कान लगो, "सुनो भैया हो, मैं इन्सा करत हों। कान खोल कें अच्छी तरां सुन लियो। तुम दोई से जे कोऊ करवा की सात टोटों में से निकर जैहे बोई राज को लरका आय। जो निंकर सकत होय वो आगे आवे।"

प्रेत खुशी होकें झट सुआ के पिंजरा के लिंगा पौंच गव कहन लगो, "सात तो सात, मैं सत्ताईस टोटों में से निकर सक हों। हुक्म बगसो जाय।"

राजासुआ बोलो, "ठीक है, मालूम परत है तुमई राज के लरका आव। एक काम करो। तुम कुमार के घरै जाकें एक सात टोटों को करवा ले आओ।"

प्रेत करवा लेने चलो गव। इतै सुआ ने राउतखों बुलाकें कही, "सुनो राउत, जो प्रेत आय जो करवा लेवे गव है। जब दो करवा लैकें आवे और टोटों में से निकरन लगे तब तुम हर टोटी में गोबर भरत जैयो। सातवीं टोटीं से जब वो करवा में घुसे तो फुरती से ऊमें सोई गोबर भर दियो। बच्चा-राम करवा में कैद हो जैहैं।"

प्रेत करवा लैकें आ गव। सुआ बोलो, "अब तुम एक-एक टोंटी में से निकरो। प्रेत पैली टोंटी में से घुसो और दूसरी में निकर आव। राउत ने पैली टोंटी गोबर लगाकर बंद कर दई। ईतरां छै टोटिन में से घुस कें जब वो सतईं में घुसो तो राउत ने ऊमें सोई झट गोबर भर दव। सब टोंटी बन्द हो गईं। कऊं सें निकरबे खों गैल नै रई। प्रेत करवा में कैद हो गव।"

सुआ बोलो, "राउतजी, तुमारो लरका जो तुमाये सामने

हो तो मैं इस झगड़े को सुलझा दूं।" रानी बोली, "नेकी और पूछ-पूछ। इससे अच्छी और क्या बात होगी ? तुम झगड़ा सुलझा दो। राजा की इज्जत रह जायगी।"

फरियादी फिर बुलाये गए। राजासुआ का पिंजरा कचहरी में टांगा गया। राजासुआ ने दोनों दूल्हों को बुलाकर पहले अच्छी तरह उन्हें देखा, फिर कहा, "सुनो भैया, मैं इंसाफ करता हूं। तुम कान खोलकर अच्छी तरह सुनना। तुम दोनों में से जो करवा की सात टोंटियों में से निकल जायगा, वही रावत का लड़का है। जो निकल सकता हो, वह आगे आ जावे।"

प्रेत प्रसन्न होकर झट पिंजरे के पास पहुंच गया। कहने लगा, "सात तो सात, मैं सत्ताईस टोंटियों में से निकल सकता हूं, आज्ञा दी जाय।"

सुआ बोला, "ठीक, मालूम होता है कि तुम्हीं रावत के लड़के हो। एक काम करो, तुम कुम्हार के घर जाकर सात टोंटियों का एक करवा ले आओ।" प्रेत करवा लेने चला गया। इधर सुआ ने रावत को बुलाकर कहा, "सुनो, रावत, यह प्रेत है, जो करवा लेने गया है। जब वह करवा लेकर आवे और टोंटियों में से निकलने लगे, तब तुम हर टोंटी में गोबर भरते जाना। सातवीं टोंटी से जब वह करवा में घुसे, तो तुम उसमें भी गोबर भर देना। बच्चेराम करवा में कैद हो जायंगे।"

प्रेत करवा लेकर आ गया। सुआ बोला, "अब तुम एक-एक टोंटी में से करवा में घुसो।" प्रेत पहली टोंटी में घुसा और दूसरी में से निकल आया। रावत ने पहली टोंटी में गोबर लगाकर बंद कर दी। इस प्रकार वह छह टोंटियों में से निकलकर जब सातवीं में घुसा तो रावत ने उसमें भी गोबर भर दिया। सब टोंटियां बंद हो गईं। कहीं से निकलने का रास्ता न रहा। प्रेत करवा में कैद हो गया।

सुआ बोला, "रावतजी, तुम्हारा लड़का तुम्हारे सामने खड़ा

ठाड़ो है। ईखां ले जाव और अब खुशी सें व्याव करो।
करवा छोई लेत जाव। ईमां प्रेत पिड़ो है। ईखां बाहर
कूड़ा में गाड़त जैयो।" राउत और बराती राजा सुआ
जै-जैकार बोलत चले गए। सुआ की चतुरई देखकें रान
पूरो भरोसो हो गव कै जेई हमारे पति आंय। रानी मौका
'तलाश में रहन लगी।"

रानी ने कुल्ल सुआ पाल राखे हते। अपने भोजन करवे
पैलऊं वा आंगन में भौत सो भात धर के सब सुओं खों छोड़
ती। सुआ भात के सीतबीन-बीन के खात रैत ते। राजा
को पिंजरा अपनी थारी के लिगा धर के पैलऊं उए दूध-
खवाउत हती पाछें अपतन खात ती। नित्त ऐसई होत तो।
दिना की बात है कै सब पखेरू आंगन में चुन रये हते और रा
राजा सुआ खों दूध-भात खवा रई हती। इतने में कऊं सें
बिलैया आ गई और आंगन में एक सुआ को गरो धर दवाओ
सुआ टेंटें करके मर गव। राजा साब उतई बैठे पान-मसाले ख
रयते। सुआ खों मरो देख कें रानी बोली, "राजा साब, मु
सामने डरो है। मैं कैसे भोजन करूं? सुआ को जिंदा कर देव
राजा बोले, "रानी, जो तो मोरे बायं हात को खेल है। अ
जिवांय देत हों।" ऐसो कहके ऊने राजा की देह से प्रान निका
कें सुआ की देह में डार दये। सुआ जी उठो। मौका देखो तो रा
सुआ नें अपने प्रान सुआ की देह से निकार कें राजा की देह
डार दये। अब का हतो, राजा फिर राजा हो गये और जसों
सुआ। राजा ने ऊट ऊ सुआ खों पकर कें पिंजरा में बंद कर दव

आज रानी की खुशी को ठिकानों नै हतो। खोओ पति ज
आज फिर मिल गव। खूब आनंद-मंगल मनाओ गव। राजा

है। अब इसको ले जाओ और खुशी से विवाह करो। यह करवा भी लेते जाओ। इसे बाहर गांव के धूरे में गहरा गाड़ते जाना।"

रावत और बराती तोताराम की जयजयकार बोलते हुए चले गए। राजासुग्रा को बुद्धि देखकर रानी को पूरा भरोसा हो गया कि यही मेरे पति हैं। रानो ग्रवसर को ताक में रहने लगी।

रानी ने बहुतेरे सुए पाल रखे थे। अपने भोजन के पहले वह आंगन में भात का ढेर लगाकर सब सुओं को पिंजरे से छोड़ देती थी। सुए भात के दाने बीन-बीन खाते थे। राजासुग्रा का पिंजरा वह अपनी थाली के पास रखती थी। पहले उसे दूध-भात खिला देती थी, बाद में ग्राप खाती थी। यह उसका नित्य नियम था।

एक दिन की बात कि सब पक्षी आंगन में किलोल करते हुए चुग रहे थे। इतने में कहीं से एक बिल्ली ग्रा गई ग्रौर उसने एक सुआ को धर पकड़ा। उसकी गर्दन दबा दी। सुआ 'टें-टें-टें' करके मर गया। राजा वहीं पास बैठे पान-मसाले खा रहे थे। सुआ को मरा हुआ देखकर रानो बोली, "महाराज, मुरदा सामने पड़ा है। मैं भोजन कैसे करूं? सुआ को जिंदा कर दो।" राजा बोला, "रानी, यह तो बाएं हाथ का खेल है। ग्रभो जिलाये देता हूं।" ऐसा कहकर उसने राजा की देह से ग्रपने प्राण निकालकर सुआ की देह में डाल दिये। सुआ जी उठा। मौका देखा तो राजासुग्रा ने भो अपने प्राण सुआ की देह से निकालकर राजा की देह में डाल दिये। अब क्या था, राजा फिर राजा हो गया और जसोंदी सुआ बन गया। राजा ने झपटकर सुए को पकड़ लिया ग्रौर उसे एक पिंजरे में बंद कर दिया।

रानी की खुशी का आज ठिकाना न था। खोया हुआ पति उसे फिर मिल गया। खूब आनंद-मंगल मनाया गया। राजा ने

आज जसोंदी की बददयांती सब लोगों खों सुनाई। लोग कहे‌ लगे, "ऐसे पाजी खों तो तुरतई मार डारों चाइये। जसोंदी सुआ की धींच मरोर कें फेंक दई गई। राजा और जलकन्या दोई आनंद से रैन लगे। जैसे बिछरे जो मिले ऊ से सब मिलें और किसा भी सो पूरी हो गई। सांची बात है। स्याने कह गये हैं—

> करै बुराई सुख चहै कैसे पावे कोय।
> बोवे बीज बबूर को, आम कहां तें होय ।।

आज जसोंदी की बेईमानी सब लोगों को कह-सुनाई। सब कहने लगे कि ऐसे पापी को तो तुरंत मार डालना चाहिए। हुए की गर्दन मरोड़ दी गई। जसोंदी मर गया। जलकन्या और राजा दोनों आनंद से रहने लगे। जैसे बिछुड़े वे मिले, वैसे हो सब मिलें। किस्सा पूरा हो गया। सच है, सयाने कह गये हैं—

करै बुराई सुख चहै, कैसे पावै कोय।
बोवे बीज बबूल को, आम कहां से होय॥ □
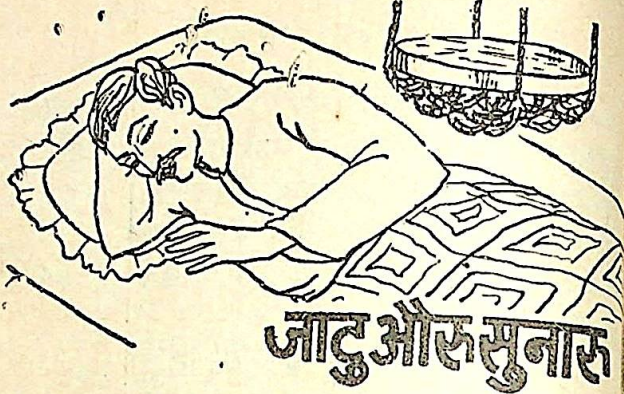
जाटु औरु सुनारु

ब्रजभा

एक सुनारु औरु जाटु में यारई ई। एक पोत जाटु सु
के ज्या आयौ। सुनारु नें बड़ी खातिरदारी कीनी। संजा
जब रोटी जेंबे कौ वखतु आयौ तौ सुनारु ने एक सोने की था
में खाइवे कूं परोस्यौ। जाटु की नजरि में बु थारी चढ़ ग
वानें अपने मन में सोची, जि थारी तौ कैसेंऊ ने कैसेंऊ ले
चहये। जि वात वा सुनार नें ऊ समझि लई कै जा जाट
नजरि जा थारी पै जमि रई ऐ। सो जि जाइ राति
चुरावैगौ।

सुनारु ने का चालाकी करी कै वा थारी में म्हौं तक पा
भर्यौ औरु बु एक छींके पै धरि दई। वा छींके के नीचें वा
अपनी खाट बिछाइ लई औरु वाई पै सोइ गयौ। वाने अपने म
में सोची कि जब जाई उतारैगौ तौ पानी जरूर फैलैगौ औ
मेरी आँखि खुलि जायगी।

राति कूं जाटु उठ्यौ, थारी धीरें सूं देखी, जाटु समी
गयौ कि जामे तौ पानी भरि रह्यौ ऐ। वानें का कामु कर
कि चूल्हे के जौरें जाइकें चलनी में राख छानीं औरु छनी
राख वानें वा थारी में हौलें-हौलें डारिवो सूरू कर्यौ। जा
जि भयो कि थारी के पानी कूं राख सोखि गई। फिर वा जा

जा
भग
ने
की
थाल
कर
रात

उस
के
वह
जाट
जाय

माल
जाव

जाट और सुनार

हिंदी-रूपान्तर

एक जाट और सुनार में बड़ी गहरी मित्रता थी। एक बार जाट सुनार के यहां आया। सुनार ने अपने मित्र की बड़ी आव-भगत की। शाम को जब रोटी खाने का समय आया तो सुनार ने एक सोने की थाली में जाट के सामने खाने को परोसा। जाट की दृष्टि उस थाली पर पड़ी। उसने अपने मन में सोचा कि यह थाली तो बहुत अच्छी है। किसी-न-किसी प्रकार इसे प्राप्त करना चाहिए। सुनार भी जाट के मन्तव्य को समझ गया कि रात को यह जाट इस थाली की चोरी करेगा।

सुनार ने भी बड़ी चतुराई से काम लिया। उस थाली में उसने पानी भरा और एक छींके पर उसको रख दिया। इस छींके के नीचे ही उसने अपनी चारपाई बिछाई। उसी चारपाई पर वह रात को सोया। सुनार ने अपने मन में सोचा कि यदि यह जाट इस थाली को उतारेगा, तो पानी गिरने से मेरी नींद खुल जायगी।

रात को जाट उठा और धीरे-से थाली को छूकर देखा तो मालूम हुआ कि इसमें पानी भरा है। जाट ने चूल्हे के पास जाकर राख छानी और इस थाली में थोड़ी-थोड़ी डालता गया।

ने थारी उतारि लई। उतारिकें गाम बाहिर एकु गढ़ा ओ, में घौंटू-घौंटू घुसि कें वा थारी ऐ गाड़ि आयो और फिरि वा सुनार के न्या आइकें सौइ गयौ।

सबेरें सुनारु सोबत सूं जग्यौ। वाइ थारी न दीखी, जाटु सोबतु पायौ। वाने सोची—जि जाटु थारी कूं तौ धरि आयौ ऐ औरु फिर न्यां आइकें सोइ गयौ ऐ। करम बात वा जाट कौ एकु पांऊं सौरि में ते बाहिर निकरि रह्यो ओ। सुनार नें वा पै पानी कौ गंडा बन्यौ देख्यौ। सोई समझि गयौ कि काऊ गड्ढा में थारी कूं जि गाड़ि आयौ ऐ वानें डोरा त बु गंडा नापि लीयौ। औरु गाम बाहिर वा गड्ढा में घौंटू-घौंटू घुसि कें थारी कूं निकारि लायौ।

जाटु ने सुनारु ते कही कै भैया अब तौ हम जांगे। सुनार ने कही, "यार, आजु तौ औरु रहि, कल्लि चल्यो जाइयौ।" जाटु ने कही, "अच्छा भाई, तू कहतु ऐ तौ कल्लिई चले जांगे।"

राति कूं सुनारु ने वाई थारी में फिरि खाइबे कूं परोस्यौ। जाट ने कही, "यार तेरे न्यां कितनी सोने की थारी ऐं। एक कूं तौ हम लै गये।" सुनारु ने कही कि यार, जि बुई थारी ऐ। औरु वाने सबु अहवाल कहि दीयौ। जाटु ने कई—यार हम तौ अपने मन में हुस्यार बंतें ई ऐ, परि तैंनें हमारेऊ कान काटि लए। अब हम तुम दोऊ कऊं बजु-व्यापार करिवे चलें। बड़ौ फाइदा होइगौ। दोऊ एक सूं एक जादा हुस्यार जौ ठैरे। जा बात पै सुनारुऊ तैयार है गयौ, औरु दोऊ कहूं, रुपया कमाइबे कूं निकरि परे।

आगे जाइकें उन्हें एक ल्हास मिली। वा ल्हास के संग भौतु से आदिमी ए। सुनारु नें जाटुसूं कही कि जि तौ कोई बड़ौ भाग्गिमानु आदिमी मर्यौ ऐ। जाटु ने कही, जि बात तौ तेरी ठीक ऐ। ला न्याई धंदो सरु करिदें। सुनार ने कही—भैया, धंदौ

अन्त में उस राख ने पानी को सोख लिया। जाट ने थाली को इस प्रकार उतारा कि सुनार को पता भी न चला।

प्रातःकाल सुनार जागा तो देखा कि थाली नहीं है। जाट उस थाली को उतारकर रात को ही गांव से बाहर एक पानी के गढ़े में गाड़ आया था। उसके पैर पर पानी का निशान बन गया था। होनहार की बात कि जाट का एक पैर सोते-सोते चादर से बाहर निकल गया। सुनार ने उसपर पानी का निशान बना हुआ देखा। वह समझ गया कि वह पानी के गढ़े में थाली को गाड़ आया है। उसने सूत के धागे से वह पानी का निशान नाप लिया और उसी गहराई तक गढ़े में घुसकर पानी में थाली को टटोला तो उसे थाली मिल गई।

सवेरे जाट भी जगा। उसने सुनार से कहा कि भाई, अब मैं जा रहा हूं। सुनार ने कहा, "भाई, कम-से-कम आज तो और रहो। कल चले जाना। ऐसी जल्दी ही क्या है?"

जाट ने कहा, "अच्छा, कल ही चला जाऊंगा।"

शाम को सुनार ने उसी थाली में जाट को फिर खाना खिलाया। जाट बड़े अचरज में रह गया। जाट ने सुनार से पूछा, "भाई, एक बात तो बताओ कि तुम्हारे यहां कितनी सोने की थालियां हैं? एक थाली तो रात को मैं चुरा ले गया हूं।"

सुनार ने कहा, "यह वही थाली है। मैं उस गढ़े में से निकालकर ले आया हूं, जिसमें रात को तुम गाड़ आये थे।"

इसपर जाट ने कहा, "मैं तो अपने मन में योग्य बनता ही था, पर तुम मेरे गुरु निकले। इसलिए चलो, दोनों कहीं व्यापार करने चलें। दोनों की योग्यता का कुछ-न-कुछ लाभ अवश्य उठाया जाना चाहिए।" इस प्रकार सोचकर दोनों रुपये कमाने घर से निकल पड़े।

चलते-चलते वे किसी शहर में जा पहुंचे। आगे चलकर उन्हें

है तो सकतु ऐ । दोऊन नें मतौ कर्‌यौ और ल्हास ते पहले
मरघटन पै पहुंचि गए । मां चिता जरिबे के ठौर पै उनने
पट एक गुफा खोदी और वा में सुनारु कौ बैथारि दयौ ।

सेठि की ल्हास मां फूंकि पजारि कें लोग अपने घर कूं
लौटे । सेठ को पतौ लगाइ-लगूह कें जाट वा सेठ के घर
पौंहच्यौ और सेठि की पूछी । वा सेठि के छोरन्नें बातें कही—
भाई, हमारे पिताजी तौ आजु ई मरि गए, अबई हम उनकूं
फूंकि-पजारि कें आइ रहे ऐं ।

सोई बु जाटु रोबै सौ रोबै । सेठि के छोरन ने कही—
का ऐ । तब वा जाटु नें कही—तुमारे बाप पै मेरे दस हजार
रुप्या जमा ए । अब मैं अपनी अमानत कूं कैसें पाऊं ? सेठि
के छोरान्नें कही—बहीखाते ऐ देखत ऐं । जो जमा हुंगे तौ हम
तेरौ पइसा पइसा देनदार ऐं । उनने बही देखी, परि कहूं जमा
न निकरे । ज़ाट ने कही कै जमा न करे हुंगे, परि रुप्या तौ मेरे
जमा हतए । औरु जौ तुम साचु न मानौ तौ मरघटन पै चलौ ।
जो मेरो रुप्या सच्चौ ए तौ तुमारौ बापु अबाज देगौ ।

सेठि के छोरा औरु बु जाटु मरघटान पै आए मां आइकें
जाट न पूछी—कौन से ठौर पै जरायौओ । छोरान्नें बताई
दई ।

जाटु ने बड़ी ज़ोर से अवाज लगाई—भाई सेठि, बे दस
हजार रुप्या जो मैंने तोपै जमा करे काए वे बही में नांइ मिले ।
सो, जो मैंने रुप्या जमा करे होंइ तौ तू अपने बेटन तें कहि दो ।
और जो मेरे रुप्या न होईं तौ नाहीं करि दै । मांते अवाज
आई—बेटाओं, जाके रुप्या मो पै जमाए, मैंने वु बही में नाए
चढ़ाए । जाको कौड़ी-ऊ-कौड़ी दै दीजों, नई तौ मेरी सांसी
ऊजरी न होइगी और मैं नरक मैं चल्यो जांगो ।

अब वाके छोरान्नें जाटु तें कही—चलि भाई घर कूं और
अपने दसऊ हजार सम्हारि लैउ । जाटु कूं बे अपने घर लै गए

क लाश आती हुई दिखाई दी। उसके साथ बहुत-से आदमी रहे थे। सुनार ने जाट से कहा, यह तो कोई बड़ा भारी सेठ रा है। यहीं हमारा धंधा हो सकता है।

मरघट पर जाकर जहां उनकी लाश जली, वहीं उन दोनों एक सुरंग बनाई। उस सुरंग में सुनार को बिठा दिया। ट इन लोगों का पता लगाकर सेठ के घर आ गया। वहां कर उसने पूछा कि सेठजी कहां हैं ?"

सेठ के लड़कों ने कहा, "वे तो आज ही मर गये हैं। अभी नको जलाकर आ रहे हैं।"

अब तो जाट बड़े जोरों से रोने लगा। सेठ के लड़कों ने सके रोने का कारण पूछा। जाट ने कहा, "सेठ पर मेरे दस ज़ार रुपये जमा थे, अब मुझे कैसे मिलेंगे ?"

सेठ के लड़कों ने कहा, "यदि बहीखाते में रुपये जमा होंगे तुम्हारे रुपये हम अवश्य देंगे।"

बहीखाता देखा गया, पर कहीं जाट के रुपये की बात नहीं ली। तब जाट ने कहा, "हो सकता है कि सेठ ने मेरे रुपये ही में न लिखे हों, पर मेरे तो रुपये जमा थे। अब तुम सब ग मरघट में चलो। यदि मेरे रुपये सच्चे हैं, तो सेठ स्वयं बोल देगा।"

सेठ के लड़के और जाट मरघट पर आये। वहां पहुंचकर ट ने पूछा, "किस जगह फूंका था ?" लड़कों ने जगह बता दी।

मरघट पर जाकर जाट ने ज़ोर से आवाज दी, "अरे भाई ठजी, मैंने जो दस हज़ार रुपये तुम्हारे पास जमा किये थे, वे हीखाते में नहीं मिले हैं। यदि मेरे रुपये तुमपर हों तो 'हां' कर , नहीं तो 'ना' कर दो।"

वहां से सुनार ने आवाज लगाई, "इसके रुपये मेरे पास मा थे। इसका एक-एक पैसा चुका देना, नहीं तो मुझे नरक में

और सबु रुप्या वाइ सम्हारि दीए।

इतमें जाटु नें जि सोची कि मरंदू सुनारु ऐ और रुप्यान्नें लैकें अपने घर कूं चलूं। उतमें सुनारु नें ऊ अपने में सोची कि अब जि जाटु रुप्यान्नें लैकें इतमें पांउ ऊ न मारें स्रो चली, कैसें ऊ रुप्यान्नें वा पै सूं लेलऊं।

सुनारु नें दस-बारह रुपया की एक जोड़ी पनहां मोल औरु वाई गैल के किनारे पौंच्यौ जो वा जाटु के गाम जानई। वा गैल पै जाइकें वानें एकु पनहां डारि दीनी। कोई सौ दो सौ गज आगें दूसरी ऊ पनहां डारि दीनी खुदि एक खेत में छिपि कें बैठि गयौ। अब बु जाटु वा रुप्या की गठरिया ए कंधा पै धरिकें आयौ। वाने एक पनहां देखी। जाटु नें मन में कही—भाई पनहां तो पनहीं ऐ। बिना जोड़ी के तौ बेकार ई ऐ। मैंने तौ अपने जनम में कब ऐसी पनहीं नांइ देख्यी। परि अकेली पनहां ऐ लैकें का करूंगो झट्ट बु आगें बढ़ि गयौ। आगें जाइकें दूसरीअ पनहीं परी पायी। वानें अपने मन में कही—जि तौ वाई जोड़ी की पनहीं ऐं। ला वाऊ कूं लै आऊं। परि जा रुप्यन की गठरिया ऐ ह्याईं छोड़ि चलूं। को वां तक जाइ लादै। अभाल लैकें आऊं तूं, थोरी सी दूरि तौ हतुई ऐ। सो जाटु वा रुपैयन की गठरिया ऐ वईं छोड़िकें वा पनहां ऐ लैवे चल्यौ।

इतमें झट्ट बु सुनारु वा झूआ के पीछें ते निकरयौ और गठरिया उठाई कें कंधा पै धरी। लै वा गठरिया कूं, सुनारु दाब पाइकें दूसरी गैल सूं अपने घर आयौ और अपनी सुनरिया सूं कही क ला एक गोरि, जिन रुपैयन्नें बाई गोरि में गाड़ि दुंगो। वानें सब रुपैया बा गोरि में धरकें क्ढ़ैंनी के नीचें गाड़ि दई औरु वानें अपनी सुनरिया तें कही क मैं तौ अधौआ कुआ में जाइकें रहुंगो, बु जाटु आवैगौ, वाकूं काऊ तरह तें पता मति लगन दयौ। उल्टी वाई ते पूछियौ कि मेरे सुनारु ऐ कहां

ना पड़ेगा ।" घर आकर सेठ के लड़कों ने जाट को दस हजार
पया दे दिये ।

जाट ने सोचा कि सुनार को मरने दो । सब रुपये अपने ही
र ले चलूं । इधर सुनार ने भी सोचा—वह जाट रुपया लेकर
रे पास नहीं आयगा । अब तो कोई और ही उपाय सोचना
ाहिए ।

सुनार ने एक दस-बारह रुपये का बहुत ही अच्छा कीमती
ता खरीदा । जूतों को लेकर वह उसी रास्ते पर गया जो जाट
गांव को जाता था । सुनार ने रास्ते में एक स्थान पर उस
ड़ी में से केवल एक जूता गिरा दिया । दूसरा जूता आगे चल-
र कोई सौ-दो-सौ गज की दूरी पर गिरा दिया और स्वयं
छुपकर एक जगह बैठ गया ।

जाट रुपयों की गठरी को लेकर आया । उसने पहला पड़ा
आ जूता देखा । जूता उसको बहुत पसंद आया । पर एक जूते का
ह क्या करता ? छोड़कर आगे चला गया । आगे जाकर उसे
सरा जूता भी पड़ा मिला ।

जाट ने सोचा, यह जूता भी उसी जूते के साथ का है । उसे भी
आना चाहिए । यह सोच उसने रुपयों की गठरी तो वहीं रख
और उस पहले जूते को लेने चला ।

इधर वह जूता लेने गया और उधर रुपयों की गठरी को
ठाकर सुनार अपने घर आ गया । सुनार ने अपनी स्त्री को सारी
ात कह सुनाई और उसे समझा दिया कि यदि वह जाट आये
उसे मेरे बारे में कुछ न बतलाना । मैं एक अंधेरे कुएं में जाकर
छुप जाता हूं । तुम वहीं रोटी पहुंचाती रहना ।

यह कहकर उसने वे रुपये एक गोल में रखकर पन्हेड़ी के
ीचे गाड़ दिये और वह एक बिना पानी के कुएं में जाकर छिप
या ।

वह जाट इधर उस पहले जूते को लेकर लौटा तो वहां रुपया

और सबु रुप्या वाइ सम्हारि दीए ।

इतमें जाटु नें जि सोची कि मरंदू सुनारु ऐ और
रुप्यान्नें लैकें अपने घर कूं चलूं । उतमें सुनारु नें ऊ अपने
में सोची कि अब जि जाटु रुप्यान्नें लैकें इतमें पांउ ऊ न मारै
स्रो चलौ, कैसें ऊ रुप्यान्नें वा पै सूं लेलऊं ।

सुनारु नें दस-बारह रुपया की एक जोड़ी पनहां मोल
औरु वाई गैल के क़िनारे पौंच्यौ जो वा जाटु के गाम
जानई । वा गैल पै जाइकें वानें एकु पनहां डारि दीनी ।
कोई सौ दो सौ गज आगें दूसरी ऊ पनहां डारि दीनी
खुदि एक खेत में छिपि कें बैठि गयौ । अब बु जाटु वा रुप्
की गठरिया ए कंधा पै धरिकें आयौ । बानें एक पनहां प
देखी । जाटु नें मन में कही—भाई पनहां तो पनहीं ऐ । प
बिना जोड़ी के तौ बेकार ई ऐ । मैंने तौ अपने जनम में क
ऐसी पनहीं नांइ देख्यी । परि अकेली पनहां ऐ लैकें का करूंगो
भट्ट बु आगें बढ़ि गयौ । आगें जाइकें दूसरीअ पनहीं पर
पायी । वानें अपने मन में कही—जि तौ वाई जोड़ी की पन
ऐं । ला वाऊ कूं लै आऊं । परि जा रुप्यन की गठरिया
ज्याई छोड़ि चलूं । को वां तक जाइ लादै । अभाल लैकें आ
तूं, थोरी सी दूरि तौ हतुई ऐ । सो जाटु वा रुपैयन की गठरि
ऐ वईं छोड़िकें वा पनहां ऐ लैवे चल्यौ ।

इतमें भट्ट बु सुनारु वा भूआ के पीछें ते निकरयौ और
गठरिया उठाई कें कधा पै धरी । लै वा गठरिया कूं, सुनारु दा
पाइकें दूसरी गैल सूं अपने घर आयौ और अपनी सुनरिया
कही क ला एक गोरि, जिन रुपैयन बाई गोरि में गाड़ि दुंगो
वानें सब रुपैया बा गोरि में धरकें ऌढ़ेंनी के नीचें गाड़ द
औरु वानें अपनी सुनरिया तें कही क मैं तौ अघौआ कुआ
[illegible] सुनारु, बु जाटु आवैगौ सो तू वाइ काऊ तरह तें पत
मति लगन दैओ । उल्टी वाई ते पूछियौ कि मेरे सुनारु ऐ कहा

ना पड़ेगा ।" घर आकर सेठ के लड़कों ने जाट को दस हजार रुपया दे दिये ।

जाट ने सोचा कि सुनार को मरने दो । सब रुपये अपने ही लेकर चलूं । इधर सुनार ने भी सोचा—वह जाट रुपया लेकर मेरे पास नहीं आयगा । अब तो कोई और ही उपाय सोचना चाहिए ।

सुनार ने एक दस-बारह रुपये का बहुत ही अच्छा कीमती जूता खरीदा । जूतों को लेकर वह उसी रास्ते पर गया जो जाट के गांव को जाता था । सुनार ने रास्ते में एक स्थान पर उस जोड़ी में से केवल एक जूता गिरा दिया । दूसरा जूता आगे चल-कर कोई सौ-दो-सौ गज की दूरी पर गिरा दिया और स्वयं छुपकर एक जगह बैठ गया ।

जाट रुपयों की गठरी को लेकर आया । उसने पहला पड़ा हुआ जूता देखा । जूता उसको बहुत पसंद आया । पर एक जूते का वह क्या करता ? छोड़कर आगे चला गया । आगे जाकर उसे दूसरा जूता भी पड़ा मिला ।

जाट ने सोचा, यह जूता भी उसी जूते के साथ का है । उसे भी ले आना चाहिए । यह सोच उसने रुपयों की गठरी तो वहीं रख दी और उस पहले जूते को लेने चला ।

इधर वह जूता लेने गया और उधर रुपयों की गठरी को उठाकर सुनार अपने घर आ गया । सुनार ने अपनी स्त्री को सारी बात कह सुनाई और उसे समझा दिया कि यदि वह जाट आये तो उसे मेरे बारे में कुछ न बतलाना । मैं एक अंधेरे कुएं में जाकर छुप जाता हूं । तुम वहीं रोटी पहुंचाती रहना ।

यह कहकर उसने वे रुपये एक गोल में रखकर पन्हेड़ी के नीचे गाड़ दिये और वह एक बिना पानी के कुएं में जाकर छिप गया ।

वह जाट इधर उस पहले जूते को लेकर लौटा तो वहां रुपया

छोड़ि आए। सुनरिया ने कही—अच्छा।

इतनें जब जाटु वा पहली पनहां से लैकें लौट्यौ तौ गठरिया ई न! बु समझि गयौ कि रुपैयन की गठरि सुनारा कौ लैं गयौ। औरु कौन में इतनी हुस्यारी होइगी।

जाटु सूधौई सुनार के घर गयौ। सुनरिया ने जा देखत खन वा जाटु ते कही—मेरे सुनारु कूं कहां छोड़ि आ बु तौ तुमारे ई संग गयौ ओ। जाट ने कहा—अबई नांइ आ का? सुनरिया ने कही—नांइ तौ।

जाटु समझि तौ गयौ कि सुनारु आइ गयौ ऐ, रुप्यान्नें जाइगौ कहां? परि कहूं दुबकि रह्यौ ऐ। परि कबतक दुब रहेगौ। मैं ऊ ज्याते नाऊं टरतु।

रोजु सुनरिया पहलें जाट ऐ रोटी खबाइये, फिर पानी भ जाइ औरु सुनार ऐ रोटी दै आवै। जा तरह तें कैऊ दिना गये। जाटु ने सोची—सुनरिया घर ऐ छोड़िकें कहूं जांति ना बस्सि पानी भरवेई जांति ऐ। स्याइति जबई सुनरा ऐ रो फ़ोटी दै आवति होइ।

एक दिना जाटु चप्पु-ई-चापु सुनरिया के पीछें-पीछें च दयौ। सुनरिया ने कुआ पै तौ बासन धरे। रोटीन की पोट निकारी औरु वाई अधौआ कुआ पै जाइकें अबाज लगाई—लै रोटी। सुनार ने कही—फेंकि दै।

जाट नें जि सबरौ करतबु देख्यौ औरु चुप्प-ई-चापु लौ आयौ। दूसरे दिना काऊ और पै रोटी करवाइकें एक पोटरी बांधी और सुनरिया तें पहलें ई जनाने कपड़ा पहरि ओढ़ि बाई अधौआ के जौरें पौंहच्यौ औरु अबाज लगाई—लेऊ रोटी सुनार ने कही—आजु बड़ौ सिदौसी लै आई। सुनरिया कही—हां आजु जल्दी ई काम-धंदौ सिमटी गयौ, रोटी जा सिदौसी है गई। परि बु जाटु तौ अबई टरतु नाएं। रुप्या-पै की बड़ी तंगी है रई ऐ। का करूं? सुनारु ने कही कि बु गो

की गठरी नहीं थी। उसे यह समझने में देर न लगी कि यह सब सुनार की करतूत है। जाट सीधा सुनार के घर पहुंचा। सुनार की स्त्री ने उससे कहा, "मेरे पति को कहां छोड़ आये हो, वह तो तुम्हारे साथ ही गये थे।"

जाट ने उत्तर दिया, "क्या वह अभी घर नहीं आया ?"

सुनार की स्त्री ने उत्तर दिया, "अभी कहां आये हैं ?"

जाट समझ तो गया कि सुनार की स्त्री झूठ बोल रही है, वह अवश्य आ गया है, किंतु उसके पास अब कोई चारा नहीं था। पर उसने यह निश्चय कर लिया कि जबतक कोई पता नहीं लगेगा, वह जायगा नहीं।

सुनार की स्त्री रोज खाना बनाती, पहले जाट को खिला देती, फिर पानी भरने जाती। सुनार के लिए खाना ले जाती। उस अंधेरे कुएं में खाना डालकर दूसरे कुएं से पानी भरकर आ जाती। यह उसका नित्य का काम था। इस प्रकार कई दिन बीत गये।

एक दिन जाट चुपचाप उस सुनार की स्त्री के पीछे-पीछे चला गया और उसने देखा कि कुएं के पास जाकर उसने आवाज दी—"लो रोटी।" जाट सारी बातें समझ गया।

दूसरे दिन जाट उस सुनार की स्त्री-जैसे कपड़े पहनकर, रोटियों की पोटली बांधकर उस कुएं पर पहुंच गया और उसी प्रकार आवाज बनाकर कहा, "लो रोटी।" फिर उसने कहा, "वह जाट तो टलता नहीं है, मेरे पास कुछ रुपया-पैसा रहा नहीं है। क्या करूं ?" सुनार ने भीतर से ही कहा, "पन्हेड़ी के नीचे जो रुपयों की गोल गड़ी है, उसीमें से निकाल लिया करो।"

इस प्रकार जाट ने रुपयों का पता लगा लिया। सुनार की स्त्री नित्य की भांति रोटी लेकर गई। आवाज लगाई, "लो रोटी।" सुनार ने कुएं में से कहा, "अभी तो दे गई थी, फिर ले आई ?" सुनार की स्त्री बोली, "मैं कब आई हूं ?" सुनार ने तुरन्त जान लिया कि जाट चालाकी से रुपया ले गया। वह

जो पढ़ँनी के नीचें गाड़ि दई ऐ, वाई में से खर्चु-पानी कूं ल निकारि लयौ करि।

इतनी सुन कें झट जाटु समझि गयौ कि रुप्या पढ़ँनी नीचें ई गडि रहे ऐं। घर आइ कें चुप्पु-चापु जाटु बैठि गयौ सुनरिया ने रोटी करी। जाट ने रोटी-फोटी तो खाई न, बुगो उखारी और वाकूं लैकें चलतो भयो।

इतने में सुनरिया ने अधौआ के जौरें जाइकें अबाज दई-लेऊ रोटी। सुनार ने कही—अभाल तौ दै गई ऐ, फिरि लै आई सुनरिया ने कही—मैं तो नांइ आई। सोई सुनार ने कही-अरी निकारि मोइ। जाटु ई तेरे से कपड़ा पहरिकें आयौ ओ बु सबु रुपैयन्ने लै गयौ। घर आइकें देखें तो पढ़ँनी के नीचे एक रुप्या नाओ।

दोऊ एक ते एक जादा हुस्यार निकरे, परि जाटु अखीर रुपैयन्नें लैई गयौ। □

बोला, "अरी, मुझे शीघ्र कुएं में से निकाल। जाट ही तेरे-सरीखे कपड़े पहनकर आया था। वह सब रुपया ले गया होगा।"

घर आकर देखा तो पन्हेंडी के नीचे एक भी रुपया न मिला। सुनार की स्त्री जबतक रोटी लेकर अंधेरे कुएं को गई, तबतक जाट सब रुपये निकालकर चम्पत हो गया।

वैसे तो सुनार और जाट एक-से-एक बढकर चालाक थे, पर जाट रुपयों को अंत में निकाल ही ले गया।□

भाग के

छत्तीसगढ़ी

दुझन मीत रहिन । एक बाम्हन रहिस दूसर भाट । एक दिन भाट हर अपन मीत ला कहिस, "चलें मीत, हम मन राजा के दरबार में जाबोन् । गोपाल राजा खुस हो ही तो हमार मन के भाग खुल जाही ।" बाम्हन हांसिस अरु ओकर बात ला टारे बर कहिस, "देही तो कपाल, का कर ही गोपाल । भाग में हो ही तो मिल ही ।" भाट कहिस, "नाहीं । देही तो गोपाल, का कर ही कपाल ।" गोपाल राजा बड़ दानी हे । ओहर हम मन ला सिर तोन अड़ बड़ धन दे ही ।" दुनो झन ए बात के झगरा करिन, अरु गोपाल राजा के दरबार में जाके अपन-अपन बात ला कहिन । भाट के बात ला सुन के राजा खुस हो गईस । बाम्हन के बात ला सुन के ओहर रिसाईस । ओहर दुनों झन ला दुसर दिन दरबार में हाजिर होय के हुकुम देईस ।

दुनो मीत दुसर दिन दरबार में जाय पहुंचिन । राजा के हुकुम पाके ओकर सिपाही मन बाम्हन ला एक मूंठ चाउर, एक मूठ दार अऊ एक मूठ नून दीन । भाट ला एक सेर चाउर, एक सेर घी और एक मखना दीन । राजा के हुकुम पाके सिपाही मन मखना म एक सेर सोन भर दिये रहिन । दे के राजा कहिस,

भाग्य की बात

हिंदी रूपान्तर

दो मित्र थे। एक ब्राह्मण था, दूसरा भाट। भाट ने एक दिन अपने मित्र से कहा, "चलो, राजा के दरबार में चलें। यदि गोपाल राजा खुश हो गया तो हमारे भाग्य खुल जायंगे।"

ब्राह्मण ने हंसकर उसकी बात टालते हुए कहा, "देगा तो कपाल, क्या करेगा गोपाल? भाग्य में होगा, वही मिलेगा।"

भाट ने कहा, "नहीं, देगा तो गोपाल, क्या करेगा कपाल! गोपाल राजा बड़ा दानी है, वह हमें अवश्य बहुत धन देगा।"

दोनों में इस प्रकार विवाद होता रहा और अंत में गोपाल राजा के दरबार में जाकर दोनों ने अपनी-अपनी बात कही। भाट की बात सुनकर राजा प्रसन्न हुआ। ब्राह्मण की बात सुनकर उसे क्रोध आया। उसने दोनों को दूसरे दिन दरबार में आने की आज्ञा दी।

दोनों मित्र दूसरे दिन दरबार में पहुंचे। राजा की आज्ञा से उसके सिपाहियों ने ब्राह्मण को एक मुट्ठी चावल, एक मुठ्ठी दाल और कुछ नमक दे दिया। भाट को एक सेर चावल, एक सेर घी ओर एक कद्दू दिया। राजा के आदेश से कद्दू में ...
भर दिया गया। राजा ने कहा, "तुम जाकर बना-खा लो। शाम

"अब जाके तुम मन बनाव खाव। खा पी के ओ ज्वार में हाजिर हो जाहो।"

दरबार ले चलके ओमन नदी पार गईन—ऊहा जहां सूते रहिन। मनेच मन भाट गुनत रहिस, "को जानि कावर हर बाम्हन ला तो दार देईस हे अऊ मोला मखना दे हे। छीलो, काटो अऊ रांधो एकर साग। कौन करही झंझट? अऊ एकर खाए ले मोर कनिहा के पीरा जग जाही ऐसन बिचार करके भाट हर बाम्हन ला का कहिस, " मखना खाहूं तो मोर कनिहा में पीरा हो ही। ऐला ले मोला अपन दार दे दे। बाम्हन ओकर बात मान गईस। अपन सामान ला ले के ओमन रसोई में जुट गईन। भाट अपन दार-चांउर ला खाकें आमा रूख के छैंया में सूत गई बाम्हन हर जब मखना ला काटिस तब ओला भीतर राजा भरवाए सोन दिखिस। ओहर मनेच मन गुनिस—मोर भाग रहिस तो मोर पास आ गईस। गोपाल राजा हर तो एला ला देतें रहिस। सोनला एक अंगोछी में बांध के बाम्हन आ मखना के साग रांधिस अरु आधा ला अपन पास राखिस खा-पीके ओहर घलुक सूत गईस।

संझाकुन दुनों झन गोपाल राजा के दरबार मां पहुंचिन बाम्हन बांचे मखना ला अंगोछी में बांध के अपन संग ले रहिस। राजा हर बाम्हन कोनी देख के पूछिस, "अब मानगे—देही तो गोपाल, का कर ही कपाल?" बाम्हन ब मखना ला ओकर सामने धर दीस अरु अपना मूड़ला नंवा कहिस—"नहीं महाराज, दे ही तो कपाल, का कर गोपाल?" राजा विचार करिस "बाम्हन सांच कहत है। सो बाम्हन के भाग में बदे रहिस, भाट के भाग में नि बदे रहि तभे तो भाट हर अपन मखना ला बाम्हन ला दे देईस।" ऐ गन के राजा कहिस—"तोरेच बात सच है। देही तो कपा का कर ही गोपाल?" राजा दुनों झन ला दान-भेंट देईस अ बिदा कर देईस।

को फिर दरबार में हाजिर होना।"

दरबार से चलकर वे नदी-किनारे के उस स्थान पर पहुंचे, जहां उन्होंने रात विताई थी। भाट मन-ही-मन सोच रहा था—"न जाने क्यों, राजा ने ब्राह्मण को तो दाल दी, और मुझे यह कद्दू दे दिया। इसे छीलो, काटो और फिर बनाओ इसकी तरकारी। कौन करे इतना झंझट? ऊपर से यह भी डर है कि कहीं इसके खाने से फिर से कमर का पुराना दर्द न उभर आवे।" ऐसा सोचकर उसने ब्राह्मण से कहा, "मित्र, कद्दू खाने से मेरी कमर में दर्द हो जायगा, इसे लेकर तुम अपनी दाल मुझे दे दो।" ब्राह्मण ने उसकी बात मान ली। अपना-अपना सामान लेकर दोनों रसोई में जुट गये। भाट दाल-चावल खाकर एक आम के पेड़ के नीचे सो गया। ब्राह्मण ने जब कद्दू काटा तो उसे वह सोना दिखाई दिया, जो राजा ने उसमें भरवा दिया था। उसने मन-ही-मन सोचा, "मेरे भाग्य में था, मेरे पास आ गया। गोपाल तो इसे भाट को दे देना चाहता था।" उसने सोना एक कपड़े में बांध लिया। कद्दू का आधा भाग बचाकर आधे की तरकारी बना ली। वह भी खा-पीकर सो गया।

संध्या के समय दोनों मित्र फिर गोपाल राजा के दरबार में पहुंचे। ब्राह्मण ने शेष आधा कद्दू एक कपड़े से लपेटकर अपने पास ही रख लिया था। राजा ने ब्राह्मण की ओर देखकर पूछा, "अब तो मान लिया—देगा तो गोपाल, क्या करेगा कपाल?"

ब्राह्मण ने आधा कद्दू राजा की ओर बढ़ा दिया और नम्रता से सिर झुकाकर कहा, "नहीं महाराज, देगा तो कपाल, क्या करेगा गोपाल?"

राजा ने सोचा कि ब्राह्मण सच कह रहा है। ब्राह्मण के भाग्य में सोना था, भाट के नहीं और इसीलिए भाट ने कद्दू ब्राह्मण को दे दिया। राजा ने कहा, "तुम्हारा कहना ही ठीक है। देगा तो कपाल, क्या करेगा गोपाल!"

उसने दोनों को भेंट में धन देकर विदा कर दिया। □

जंगीभूत

निमाड़ी

एक अच्छो सो गांव थो। गांव का पासज नद्दी वयति थी। नद्दी का किनारऽ हरा-भरा झाड़ लहेरई रह्या था। आजू-बाजू खेती-बाड़ी थी। भला आदमीन की बस्ती थी। यों तो जहां दस भला आदमी रहेज वहां दुई-चार लुच्चा-लफंगा कहां नी रहेता? गांव का इच म; मौका की जगह एक बड़ो जंगी घर कई बरससी खाली खंडेरो पड़ेल थो। गांव मऽ केतरई लोग आया, अच्छा-बुरा, गरीब-अमीर नेठू रहण्या[1] न चलता, मुसाफिर पण कोई भी उ घरमऽ फोकट मऽ भी रहेण खतैयार नी होय। गांव वालान को कयणो थो कि ओमऽ भूत रहेज। अन जी कोई ओमऽ रहेणऽ जाज वोखऽ हृ खाइ जाज। फिरी असो कुण भयों होयगा जी बलतो घर भाड़ऽ ले।[3] अरु तो अरु कदि ढोर भी ओमऽ भरइ जाय तो रखवालो उनखऽ दग्गड़[4] मारी न भाग्रह निकालइ ले, पण उना घर मऽ पांयी नी घरऽ[5]।

एक दिन की बात छे कि एक वाण्यो केतरइं बड़ा-बड़ा शहेर

---

१ नेठू रहण्यां —स्थायी निवास। २ भदो—पागल। ३ बलतो घर भाड़ऽ ले—जलता घर किराये पर ले। ४ दग्गड़ —पत्थर। ५ लिखावट में संकेत में ऽ (आकार का चिह्न)।

जंगीभूत

हिंदी-रूपान्तर

एक गांव था। बड़ा अच्छा-सा था। गांव से थोड़ी ही दूर एक नदी थी। सुहावने वृक्ष थे। आसपास खेती-बाड़ी थी। भले आदमियों की बस्ती थी। यों तो दो-चार बुरे लोग सभी गांवों में रहते हैं। गांव के बीचोंबीच मौके की जगह पर एक बड़े घर का खंडहर था—वर्षों से वीरान! कई मुसाफिर आते, नये बसनेवाले आते, किंतु उस खंडहर में कोई भी रहने का साहस नहीं करता था, क्योंकि बस्तीवालों को भलीभांति मालूम था कि उस खंडहर में भूत रहता है, जो लोगों को खा जाता है। यही कारण था कि रात बीते उस तरफ कोई जाना तो दूर, देखना भी पसंद नहीं करता था। गर्ज़ेकि कोई भी आदमी उस घर को मुफ्त में भी लेने को तैयार न था। ऐसा कौन पागल होगा जो जलता घर भाड़े पर लेगा? दिन में दो-चार ढोर वहां बैठे रहते, पर रात होने के पहले ही ढोरवाले उस खंडहर से पत्थर फेंककर अपने ढोर निकाल ले जाते थे। खंडहर की हद में पैर रखने की भी हिम्मत नहीं करते थे।

संयोग से एक सेठसाहब अपना देस मारवाड़ छोड़कर कुछ समय बड़े-बड़े शहरों में व्यापार से धन कमाकर यहां आ गये। कहने लगे, "मैं अब स्थायी रूप से यहीं रहूंगा और दूकान

नमऽ फिरतो चार पैसा कमइ न उना गांव मऽ आयो। अनऽ
लग्यो कि "भाइ न होणऽ अवऽ तो हऊं इनाज गांव मऽ ने
न घर मांडीन्, पांय जम्इ न रहूंगा। देसऽ देस बहुत फिर्यो
जबतक आदमी एक जगह नी रहतो तबतक ओकी जड़ नी जम
अब कदी तुम मखऽ अपणा पदरमऽ लइ लेव न ई मौका की
पर पड़ती खंडेरा मऽ चार भाई मिलइ न घर बंधाड़ी देव, तो
यहां एक अच्छी दुकान धरूंगा। ओमऽ म्हारो भी घर चल
न तुम्हारो भी काम सरऽगा।"

लोग ननऽ बहुत समझायो कि भइ वहां मत रहे। उना
मऽ तो भूत रहेज। उन्न आज तक का किस्सा सुणाया, मरन
न की गिणती गिणाड़ी, कइ एकन का नांव सुणाया पण
एक नी मानी। न कह्यो कि "भाई मरूंगा तो हऊं न जि
तो हऊं, तुम क्यों फिकर करोज।"

लोग ननऽ सोच्यो कि जब इ कोइ की नी सुणतो
मरनज ख आयोज तो मरण देव। अपुण ख काइ? अन
सबइनन चार आड़ा सीधा लक्कड़ लगइनऽ ओको घर
करी दीयो।

वाण्या न ओमऽ समान धर्यो दुकान मंडई न रातखऽ आ
सी जाइन वहां सोइ गयो।

आधी रात को बखत हुयो कि ओकि नींद भरड़[1] सी
गई। न ओनऽ देखयो तो समानऽ एक बड़ो जंगी भूतड़ो
थो। पहले तो ऊ घबराण्यो।

पण फिरी हिम्मत करीन ओनऽ पूछयो—"तू कुण आय
न तुख काई चायजे?"

ओन कह्यो—"हऊं भूत आय; न मखऽ म्हारो नेग चायजे
कदि रोज मख म्हारो नेग नी मिल्यो तो हऊं तुखऽ खाई जाऊंगा
...ो तो काफी बणेल थो नी। ओनऽ कह्यो कि "भाई

१. भरड़—चौंककर

चलाऊंगा। अब उम्र ढलती पर आ गई है, और घूमने-फिरने की इच्छा भी नहीं है; क्योंकि आदमी जबतक एक जगह न जमे, उसकी जड़ नहीं जमती। मैंने इस खंडहर पर मकान बनाने का निश्चय किया है। यदि आप लोग मदद करके मेरा मकान खड़ा करवा दें तो मैं यहां एक अच्छी दूकान खोलूंगा। मेरा घर बन जायगा और तुम्हारा काम भी निकलने लगेगा।"

लोगों ने उन्हें उनके भले के लिए बहुत-कुछ समझाया, बीती कहानियां सुनाईं, मरनेवालों की गिनती बताई, किंतु उसने किसीकी नहीं मानी। कहने लगा, "भाइयो, मरूंगा तो मैं और जिऊंगा तो मैं। मेरी मरजी, तुम सब क्यों परेशान होते हो? अगर हो सके तो तुम लोग सिर्फ इतनी मदद करो कि सब मिलकर मेरे रहने लायक एक मकान खड़ा करा दो।"

गांवभर में इस नये बहादुर पर एक-दो दिन तक कानाफूसी होती रही और फिर उसकी जिद पर सबने यही तय किया कि वह मरने ही आया है तो उसकी इच्छा। अपने को क्या? जैसा करेगा, वैसा भरेगा। आखिर सबने मिलकर आड़ी-टेढ़ी लकड़ियां डालकर जैसे-तैसे उसके रहने लायक मकान खड़ा कर दिया। मकान तैयार होते ही सेठ ने उसमें थोड़ा-सा सामान रख दिया और दूकान खोल दी। रात को निश्चिंत होकर उसी मकान में सो रहा।

कोई आधी रात बीते अचानक धक्के से उसकी नींद खुल गई। सामने जो देखा तो एक डरावनी शकल नज़र आई। देखते ही पहले तो वह घबराया, लेकिन दूसरे ही क्षण कुछ संभल गया और साहस बटोरकर कहने लगा, "तुम कौन हो और क्या चाहते हो?" प्रश्न सुनते ही शकल गरजकर बोली, "मैं भूत हूं—जंगीभूत। अपना हक लेने आया हूं। यदि रोज मुझे मेरा भक्ष्य नहीं मिला, तो मैं तुझे खा जाऊंगा।"

सबकुछ शांतिपूर्वक सुनकर सेठजी बोले, "देखो भाई, तुम्हें

थारी बात मंजूर छे। पण मखऽ काई विश्वास की तू भूतज आ
म्हारी एक अरज छे कि कदि तू सच्ची मऽ भूतज होय न
भगवान का घर आवणो-जाणो होय तो तू मख काल तक ए
बात बतई न कि ओका खाता बही मऽ म्हारी उमर कतरी लि
छे। यका सी मखऽ थारो भरोसो आइ जायगा; न थारी बात
करना मऽ कई हरकत नी रहेणऽ की।"

जाणऽ काई सोची न भूत उन दिन वापस चली गयो अ
दूसरऽ दिन ठीक बखत पर आइन कह्यो कि "देख रे वाण्या म
ठेठ भगवान का घर जाइन सब पता लगई लियो। उनका खा
बही मऽ थारी उमर ज्यादा नी कमती ठीक अस्सी बरस
लिखेल छे। समझ्यो, अब ला म्हारो नेग।"

वाण्या ने घेंघइ[1] न कह्यो—"भाई, ई तो बड़ो बुरो हुयो
अस्सी मऽ तो म्हारी सांस सदा फसी रहेगा। जसो कि म
सुण्योज कदि तू सिरफ भूत आय न थारा मऽ जरा भी दया-मा
होणु चांयजे। न मख भरोसो छे कि असी आफत की घड़ी म
तू म्हारी जरूर एतरी मदद करऽगा कि भगवान ख कइन म्हा
उमर मऽसी एक दिन घटाड़ द या एक दिन बढ़ाय द। हऊं था
बहुत अवसान मानूंगा।"

भूत ने कह्यो—"अच्छी बात छे। पण काल थारी हऊं ए
नी सुणनऽ को। याद राखजे हऊं भूत आय, भूत, अनऽऊ व्हा
को व्हांज चम्पत हुइ गयो।

तीसरऽ दिन ऊ बखत सी भी पहेलऽ आइ धमक्यो अनऽगरज
न बोल्यो—"सुण रे वाण्या, मनऽ भगवानऽ ख बहुत समझाय
कि या तो थारी उमर एक दिन घटइ दे या बढ़इ दे पण उ
एक नी मानी ने कह्यो कि एक दिन की तो काइ ओमऽ सी ए
घड़ी भी घटी या बढ़ी नी सकती। समझ्यो? अब हऊं लाचा
छे। तनऽ मखऽ तीन दिन तक बहुत ... अब ... ए

१ घेंघइ—घिघियाकर

तुम्हारी सारी शर्तें मंजूर हैं। लेकिन मेरी सिर्फ एक ही प्रार्थना है। वह यह कि तुम यदि सचमुच भूत हो और ईश्वर के दरबार में तुम्हारा प्रवेश है, तो कृपाकर कल तक मुझे सिर्फ इतना बतला दो कि ईश्वर के कागजों में मेरी क्या उम्र दर्ज है? इससे मुझे तुमपर विश्वास हो जायगा और तुम्हारी शर्तें पूरी करने में कोई हिचकिचाहट न रहेगी।"

सेठ की बात सुनकर भूत चला गया। दूसरे दिन निश्चित समय पर आकर बोला, "देख रे बनिया, मैंने खुद भगवान के घर जाकर पता लगा लिया है। उनके खाते में तेरी उम्र ठीक अस्सी वर्ष की लिखी है। अब लाओ, मेरा हक कहां है?"

सेठ बहुत चतुर था। उसकी बात समाप्त होते-न-होते उसने बहुत घिघियाकर कहा, "भाई, यह तो बहुत बुरा हुआ। अस्सी में तो सदा मेरी सांस फंसी रहेगी, जैसाकि मैंने सुन रखा है। क्या तुम महज शैतान हो? आदमियत का तुममें कोई भी अंश नहीं है? नहीं-नहीं, ऐसा कभी नहीं हो सकता। तुममें जरूर आदमियत होनी चाहिए। मैं सोचता हूं कि ऐसे संकट के समय तुम मेरी इतनी सहायता तो अवश्य करोगे कि ईश्वर से कहकर मेरी उम्र में से कम-से-कम एक दिन या तो घटवा दो या एक दिन बढ़वा दो। मैं तुम्हारा सदा अहसानमंद रहूंगा।"

न जाने क्या सोचकर यह कहते हुए कि अच्छा, लेकिन कल तुम्हारी कोई फरियाद नहीं सुनी जायगी, भूत इस दिन भी चला गया।

तीसरे दिन निश्चित समय के पूर्व ही आकर भूत अत्यन्त क्रोधाविश से बोला, "देखो, मैंने ईश्वर से बहुत आरजू-मिन्नत की कि वे तेरी उमर में या तो एक दिन घटा दें या बढ़ा दें, लेकिन उन्होंने एक न सुनी और कहा कि एक दिन तो क्या,

उसमें से एक क्षण भी घट या बढ़ नहीं सकता है। अतः मैं

नी चलनऽ की । ला मारो नेग । नहीं तो हऊं तूख खाइ जाऊंगा ।

तब वाण्या न हंसतऽ-हंसतऽ कह्यो—"म्हारी उमर ठीक अस्सी साल की छे । एक क्षण भी कोइ घटइ या बढ़इ नी सकतो । म्हारो भगवान का न्याय छे । काइ अब भी तूखऽ कइं कहेणुज ?"

सुणतई सी जंगी भूत सरमई न चली गयो ।

लाचार हूं। समझा। अबतक मैंने तेरी बहुत बातें सुनीं, और तू मुझे लगातार टालता ही जा रहा है। आज यह सब नहीं होगा। मेरा हिस्सा ला। चल, जल्दी कर, नहीं तो तेरी खैर नहीं। मैं तुझे खा जाऊंगा।"

सेठ मुस्कराते हुए बोला, "मेरी उम्र के अस्सी बरसों में से एक क्षण भी कोई घटा या बढ़ा नहीं सकता है। यह ईश्वरीय विधान है। क्या अब भी तुझे और कुछ कहना है?" यह सुन भूत शरमाकर चला गया। □

बिरणब

माल

सात भई-बेन था। वी एक गांम में रेता था। छैः तो
था, ने सातवीं बेन। उको नाम बिरणबई थो। जदे उका मां-
तिरथ जावा लागा तो मां ने भोजायां होण के कियो के तम
बिरणबई के घणी लाड़ से राखजो। कोई भी इका से काम
कराजो। भोजायां होण बोली—"सासूजी, हम तो तमारा स
जो भी केणो होय कई दां, पण तमारा पीठ पाछे कई भी
कां। धन भाग धन घड़ी, हमारे तो एकज नंनद हे, कंई दस-प
तो हे नी! फेर वी तो अपना भई होण से भी जादा लाड़
रिया हे।"

मां-बाप था तो तिरथ चल्या गया। भई होण था तो सेव
चाकरी पे गया ने[1] अचांड़ी भोजयां होण ने पीली की खान
रस्तो लियो।

"चलो बई अपण पीली लई आवां, घर में पीली खुटी
हे।"

नंनद होंसीली[2] थी। "हो भावी, चलो तड़ाक फड़ाक खो
लावां।"

१ ने—और। २ होंसीली—उत्साही।

बिरणबाई

हिंदी-रूपान्तर

एक गांव में सात भाई-बहन रहते थे। छः तो भाई थे और ातवीं बहन। उसका नाम बिरणबाई था।

जब उसके मां-बाप तीर्थ जाने लगे, तो मां ने भौजाइयों को ुलाकर कहा, "तुम मेरी लाड़ली बिरणबाई को सुख से रखना ौर कोई भी काम इससे मत कराना।"

भौजाइयां कहने लगीं, "सासूजी, हम तो आपके सामने जो ुछ कहना हो, कह देती हैं, पर आपके जाने के बाद हम कुछ भी हीं कहतीं। धन घड़ी, धन भाग, हमारे तो केवल एक ननद ाई है, दस-पांच तो हैं नहीं। और फिर वह तो अपने भाइयों े भी अधिक लाड़ से रही है।"

मां-बाप तीर्थ चले गये। इधर सब भाई अपने-अपने काम से ाहर जाते। एक दिन सब भाई इसी तरह बाहर गये हुए थे। ौजाइयां बोलीं, "चलो, हम सब मिलकर पीली मिट्टी खोद ावें।" ननद उत्साही थी। बोली, "हां भाभी, चलो, जल्दी े आवें।"

सबकी-सब पीली मिट्टी लेने गईं। भौजाइयां खोदती तो

सब जणी पीली लेवा गई ने सब खोदवा लागी। भो
खोदे तो पीली निकले ने नंनद खोदे तो मोतीड़ा। भोजा
पीली की टोपल्यां भरी ने नंनद ने मोत्यां की। यो दे
भोजायां रीसां बलीगी[1]। उनने मनका मान कियो—"या
कजान कंई अंतर-मंतर जाणे हे। इके तो यांज[2] छोड़ी
चइये, नी तो या घर भी कजाणां कंई टोटका बटका करे

भोजायां बोली, बई तम यांज ऊबा रो। तमार से या टो
नी तोकायगी,[3] हम अपनी टोपल्यां कूड़ी[4] आवां ने फेर त
टोपली लई चलांगा।"

"नी भाभी, हूं भी चलूं, तोकी लूंगी इके तो।"

"नी बई, तमने इतरो भार कदी नी तो क्यो हे। कदी त
कम-वत्ती हुई जाय तो तमारा बीराहुण हम के खई जाय
इकासरू[5] सबूरी करो ने थोड़िक देर ऊबा रो।"

ननद बिचारी ऊबा री। रस्तो देखतां-देखतां घणी
हुईगी। भाभी अबी आवे—भाभी अबी आवें। पर भाभी
का मन में तो दाव, वा कई जाणे बिचारी। बैठे-बैठे आ
दन हुव गयो पर भौजायां नी अई। समी[6] सांज[7] की बखत हु
बंई से सादू की जमात निकली। बिरणबई ने एक सादू से
के म्हराज म्हारी टोपली चढ़ई दो। सादू ने बिरणबई के ए
देखी ने पूछ्यो—"क्यों बच्चा, तू एकली क्यों हे?" बिरण
ने तो सब हाल सादू के कियो। सादू ने मोको देख्यो ने बिरण
के अपना सांते लग ग्यो। बिरणबई रोवा लागी, पण उने धम
ने चुप कर दी।

नरा दन[8] हुई गया। ऊ सादू ऊ के कंई बीनी जावा
था। फर वा छोटा-मोटा गांम में मांगवा जाणे लगी। धीरे-
अपना घरबार की वी सुध बिरण भीनी री। वयांड़ी[9] सा

१ बलीगी-जल गई २ यांज-यहीं ३ तोकायगी-उठेगी ४ कूड़ी-
करना ५ ईसलिए ६ संपूर्ण ७ गोधूलि-वेला ८ कई दिन ९ उस

पीली मिट्टी निकलती और ननद खोदती तो मोती निकलते। भौजाइयों ने पीली मिट्टी की टोकरी भरी, ननद ने मोतियों की। भौजाइयों ने देखा तो जल गईं। मन में कहने लगीं, "रांड़ न जाने क्या जादू जानती है। घर पर भी न जाने क्या टोटका-टोना करेगी।" फिर वे कहने लगीं, "बाई, तुम यहीं खड़ी रहो, तुमसे यह टोकनी नहीं उठेगी। हम अपनी टोकनियां खाली कर आवें, फिर तुम्हारी ले चलेंगी।" वे जाने लगीं।

बिरण बोली, "नहीं भाभी, मैं भी चलती हूं। उठा लूंगी इसे तो।"

"नहीं बाई, तुमने इतना बोझ कभी नहीं उठाया। तुम्हें कहीं कुछ हो गया तो तुम्हारे भाई हमें खा जायंगे। तुम तो थोड़ी देर यहीं खड़ी रहो, हम अभी आती हैं।"

ननद बेचारी खड़ी-खड़ी भौजाइयों की बाट जोहने लगी कि भौजाइयां अब आती हैं, अब आती हैं, पर भाभियों के मन का कपट बेचारी क्या जाने? बैठे-बैठे सारा दिन बीत गया, पर वे नहीं आईं। सांझ हो गई। उसी समय वहां से साधुओं की एक जमात निकली। बिरणबाई ने एक साधु से कहा, "महाराज, मेरी टोकनी उठवा दो।"

साधु ने देखा कि लड़की अकेली है। कहा, "बच्चा, तू यहां अकेली क्यों है?"

बिरणबाई ने सब हाल कह सुनाया। मौका देखकर साधु उसे अपनी जमात में ले गया। बिरणबाई रोने लगी, पर कौन सुनने वाला था।

कई दिन हो गये। साधु ने उसे कहीं नहीं जाने दिया। धीरे धीरे वह उसे छोटे-मोटे गांव में भिक्षा मांगने भेजने लगा। अब वह सब घर-बार भूल गई थी। साधु ने उसे उस गांव में जाने से मना कर दिया था, जहां [illegible] थी। उसने कहा कि उधर तुझे कोई पकड़ लेगा, वहां भीख नहीं मिलेगी।

उके उना गांम जावा से मना करी दयो थो के बां कोई भि
नी देगो।

एक दन सादू के ताप चढ़यो। ऊ कंई उठी नी सकतो
इका वास्ते बिरणबई भिक्स्या लेवा ने निकली। उके याद
ने वा अपना घर की गैल में मांगवा लगी। बड़ा भई के घ
तो भाभी ने ललकार दी। फिर उक से छोटा घरे गई तो
कंई नी मिल्यो। सबका पीछे सबसे छोटा भई का घरे गई।
कमाड़-कनेज[1] उबी थी। बिरणबई जई ने गावा लागी—

सात भई की एकलो बिरणबई।
मोतीड़ा हो खोदते जोगीड़ा हो पकड़ी।
साथ साथ भिक्स्या दे...

इतरा में बिरणबई की मां सामने अई ने बोली, "बई
तू कंई गाती थी, फेर से गा तो।" बिरणबई ने फेर से गाइय
दयो। मां की आंख से नोसरधार[2] बेवा लागी। बिरण का नेहां
में तलाव भरी आया। मा सोचवा लागी के ऐसीज म्हारे
बिरण थी। पीली खोदतां खोदतां खान में दबी के मरी गई
(क्योंकि भौजायां ने अई ने सबके ऐसोज कियो थो)।

"बई तू रोज आया कर, हूं थारे अपनी बेटी समझी ने
कई दिया करूंगी।" मां ने कियो। दुख में भूली बात याद
जावे है। बिरणबई के अपनी सब बात याद अईगी। मां
छाती से चोंटी ने बिरण खूब रोई ने अपनी बीती सुणई। मां
उके घर में लई अई ने न्हवई ने अच्छा कपड़ा पेराया। भोज
ने यो देखी के जली-बली ने राख हुईगी।

अबे मां-बाप ने बिरण को व्याव करने का तदबो[3] जमायो
बयांड़ी सादू के मालम पड़ी। ऊ आछो हुई ने वां आयो। उ

१ द्वार के पास। २ नोसरधार—अश्रुओं की धार। ३ तदबो—
आयोजन।

डर के मारे वह बेचारी उधर नहीं जाती थी।

एक दिन साधु बीमार था। बिरणबाई को कुछ याद नहीं रहा और भूल से वह उसी गांव की गली में चली गई, जहां की वह थी। उसकी एक भौजाई द्वार पर खड़ी थी। बिरणबाई जाकर गाने लगी—

सात भाई की एक बिरणबाई,
मोतीड़ा हो खोदते जोगिते पकड़ी।
माई-बाई भिक्स्या दे।

(सात भाइयों की एक बिरणबाई थी। उसे मोती खोदते हुए जोगी ने पकड़ लिया। हे माई, भिक्षा दे।)

भाभियों ने उसे देखा तो ललकारकर भगा दिया। वह सब भाइयों के घर होती हुई आखिर छोटे भाई के द्वार पर पहुंची। वहां भी उसने यही गाना गाया। इतने में उसकी मां सामने आ गई। कहने लगी, "बाई, तू क्या गाती थी, एक बार फिर से गा।"

उसने फिर से गा दिया। मां की आंखों से आंसुओं की धार बहने लगी। बिरण की आंखें भी डबडबा आईं। मां सोच रही थी कि ऐसी ही मेरी बिरणबाई थी। पीली मिट्टी खोदते समय खान में दबकर मर गई। (क्योंकि भौजाइयों ने आकर सबको ऐसा ही बताया था।)

मां कहने लगी, "बाई, तू रोज आया कर। मैं तुझे अपनी बेटी समझकर खूब चीजें दिया करूंगी।"

बिरणबाई को अपनी सब बात याद आ गई। उसने सारा हाल कहा तो मां-बेटी मिलकर खूब रोईं। इस प्रकार बिरणबाई फिर अपने घर आ गई।

अब मां-बाप ने उसका ब्याह करने का विचार किया। उधर साधु को मालूम हुआ कि बिरणबाई अपने घर चली गई है, तो

बखत बिरण की सगाई हुई री थी। सादू बोल्यो—"सगाई करो, पण चेली तो म्हारी है।"

जदे ब्याव हुइ ग्यो तो उने फिर कियो—"ब्याव तो करो पण चेली तो म्हारी है।" बिरण बिदा होवा लागी। बेरा ने बिदई का गीत गाया। लाड़ावाला लाड़ी के लई ने जावा लागा। उनाज बखत सादू ने अई ने कियो—"लाड़ी तो जावा पण चेली तो म्हारी है।" इस तरह जगे-जगे सादू कहवा लाग्यो—"चेली तो म्हारी है—चेली तो म्हारी है।"

बिरणबई घबरई गई। उने कियो—ओ सायबजी[1], सासूजी, म्हारे सात तालां में रोकी दो, नी तो म्हाने सादू पकड़ी लई जायगो।"

बिरण के सासरा में सात तालां में रखी ने सोबाड़ी। अंधारी रात। हातके हात नी सूजे। खड़को हुयो। कच्ची नींद की सोवावाली बिरण जागी। उने खड़को सुनो ने कियो—

"पैलो तालो टूट्यो, सासू जी जागो।
दूजो तालो टूट्यो, ससुराजी जागो।
तीजो तालो टूट्यो, जेठजी जागो।
चोथो तालो टूट्यो, जेठानीजी जागो।
पांचमो तालो टूट्यो, देवरजी जागो।
छठमो तालो टूट्यो, देवरानीजी जागो।
सातमो तालो टूट्यो, सायबजी जागो।"

इस तरे बिरण सब के जगई दे। ठीक उत्तीज बखत सा[illegible]
सातमो तालो [illegible] ने बिरणबई को लेवान भराया। सब[illegible]

---

१ सायबजी—प्रियतम। २ [illegible]

वह अच्छा होने पर वहां आया। उस समय बिरणबाई की सगाई हो रही थी। साधु बोला, "सगाई तो करो, पर चेली तो मेरी है।"

जब उसीका ब्याह हुआ तो साधु आकर फिर कहने लगा, "ब्याह तो करो, पर चेली तो मेरी है।"

ब्याह पूरा हुआ और बिरणबाई अपनी ससुराल जाने लगीं। साधु फिर आया और कहने लगा, "लाड़ी तो ले जाओ, पर चेली तो मेरी है।" इस तरह साधु बिरणबाई के पीछे पड़ गया। बरात घर पहुंची तो वहां भी साधु आकर कहने लगा, "बरात तो आई, पर चेली तो मेरी है।"

जब इस प्रकार साधु बिरणबाई को जगह-जगह छेड़ने लगा, तो बिरणबाई घबराई। उसने कहा, ओ प्रियतम, ओ सासंजी, मुझे सात ताले में बंद करो, नहीं तो यह साधु मुझे पकड़ ले जायगा।"

बिरणबाई को ससुरालवालों ने सात तालों में बंद करके सुलाया। अंधेरी रात थी। रात को खड़का हुआ, बिरणबाई जागी। उसने कहा :

"पहला ताला टूटा, सासुजी जागो।
दूसरा ताला टूटा, ससुरजी जागो।
तीसरा ताला टूटा, जेठजी जागो।
चौथा ताला टूटा, जेठानीजी जागो।
पांचवां ताला टूटा, देवरजी जागो।
छठा ताला टूटा, देवरानीजी जागो।
सातवां ताला टूटा, प्रीतमजी जागो।"

इस तरह बिरणबाई ने सबको जगा दिया। उसी समय साधु ने सातवां ताला तोड़कर बिरणबाई के कमरे में प्रवेश किया।

ने मिली ने उक पकड़ी ल्यो ने ऐसो कूट्यो के फेर उने वंपा मुंडोवी नी कर्‌यो।

बिरणबई ने फर अपनो घर बसायो ने सुख से सासू-सस की सेवा करी ने रेवा लागी।

वार्ता थीं ती पूरी हुईगी ने सुनवावाला बूढ़ा हुई गया।

सबने मिलकर उसे पकड़ लिया और उसकी ऐसी मरम्मत की कि फिर उसने कभी उस ओर आने का साहस नहीं किया।

बिरणबाई अपने घर में सास-ससुर की सेवा करती हुई आनंद के साथ रहने लगी।

किस्सा था सो पूरा हो गया, सुनने वाले बूढ़े हो गये। □

लखन पटवारी

अ

याक दिन जमराज औ नारद जी मां ई बतें भाई कि म
सूध होत हवै कि नांहीं । जमराज कहित रहैं कि मनई तौ स
भ्वासर[2] होत हवै, मुला[3] नारदजी कहति रहैं कि मनई क
चलता पुर्जा होत हवै । नारदजी येहौ कहै लागि कि भाई ज
राज, तुमका मरे मनइन ते हमेसा पाला परा हवै, मु
जियत मनई ते सामना परी तौ जइस कहति हो वह चौक
भूल जइहौ ।

इन बातन का सुनि कै जमराज अपने दूतन का हु
दीन्हेंनि कि मिरतु लोक मां जाय कै कौनौं जियत मनई का
आव । दूत जब मिरतुलोक मां पहुंचे तौ उनका सबते पहि
याकै लखन नांव के पटवारी मिलिगे । दूतन उनहिंन का पक
लीन्हेंनि औ कहै लागि कि चलौ तुमका जमराज बोलाये
हवै । पटवारी पहले तो बहुतु डरान, फिरि ब्वाला कि त

---

१ [illegible]—मनुष्य । २ सद्म्वासर—सरल, सीधा । ३ मुला—परन्तु ।
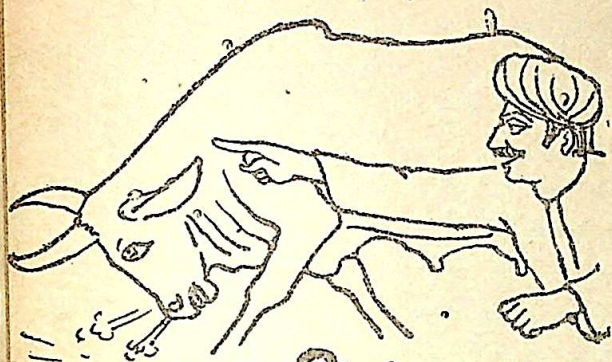
लखन पटवारी

हिंदी रूपान्तर

एक दिन यमराज और नारद में यह चर्चा चली कि मनुष्य सीधे-सरल स्वभाव के होते हैं या चालाक ? यमराज कहते थे कि मनुष्य बहुत सीधा-सरल स्वभाव का प्राणी है और नारदजी कहते थे कि मनुष्य बहुत चालाक और धूर्त होता है । नारदजी कहने लगे, "भाई यमराजजी, आपको हमेशा मरे आदमियों से वास्ता पड़ता है । यदि आपको कभी जिंदा आदमी से साबका पड़ जाय तो आपकी यह धारणा बदल जाय ।"

यह सुन यमराज ने अपने दूतों को हुक्म दिया कि तुम मृत्यु-लोक से एक जीवित मनुष्य पकड़ लाओ । दूत जब पृथ्वी पर पहुंचे तो उन्हें सबसे पहले लखन नाम के एक पटवारी मिले । दूतों ने उनको पकड़ लिया । कहा, "चलो, तुम्हें यमराज ने बुलाया है ।" पटवारी पहले तो घबरा गया, फिर कुछ सोचकर बोला, "जरा ठहर जाओ, मैं अपने बाल-बच्चों से मिल लूं, फिर तुम्हारे साथ चलता हूं ।" इस बहाने समय लेकर वह घर के भीतर गया और उसने भगवान की तरफ से यमराज के नाम एक परवाना बनाया, जिसमें लिखा था, "यमराज, तुम परवाना देखते ही तुरंत अपना

सारा कारभार लखन पटवारी को सौंप दो । तुमको आज से पेंशन

रुकि जाव, हम अपने लरिकन-बच्चन ते मिलि लेईं, त
तुम्हरे साथ चलति हवै । यहि बहाने ते पटवारी अपने घ
औं भगवान को तरफ ते जमराज के नाए एकु परवा
बनायेसि, जहिमां लिखा रहै कि जमराज तुम लखन पट
का अपन सब कामु सौंपि देव औ तुमका अब छुट्टी हवै ।
परवाना लइकै पटवारी देउता दूतन के साथ जमराज के
पहुंचे । पहुंचतै हाथ जोरि कै बड़ी सुधाई ते पटवारी जी
परवाना जमराज के पांयन मां धरि दीन्हेंनि । भला, भग
का हुकुम को टारि सकत है, परवाना पढ़तै जमराज अपन
भारु लखन पटवारी का सौंपि दीन्हेंनि । पटवारी स्वाचै ला
हम तौ जिंदगी भरि पापुई कीन है, यहि तें अइ सुउपाय का
चही कि जब हम मरी तो हमका हियौ सुखु मिले । व
जमराज के कानूनन का बदलि डारेसि औ हुकुम दीन्हेंसि
जेतने पापी जीउ नरक मां परे हैं उनका सरग मां पठै दी
जाय औं जेतनें सरग मां होंय उनका नरक मां ढकेलि आव।

यहि नये इंतजाम ते तीनऊं लोकन मां हाहाकार मचिगा
सब देउता मिलि कै भगवान की सरनै मां गे औ सब हा
सुनायेनि । भगवान जमराज का बोलाय कै सब बातैं पूंछेनि
जमराज कहै लागि—"दीनबन्धु, यहु हमार कीन नहीं, लख
पटवारी का कीन कामु आय, जहिका आप परवाना दइ
जमलोक का भारु सौंपि दीन हऊ।"

भगवान सुनिकै बहुतु गील गीला[1] भे । कहै लागि कि हम
अइस परवाना लइकै तुम्हरे लगै कोहुक नहीं पठवा । तुरतै लख
पटवारी कै तलबी भै । वहि ते भगवान पूंछेनि तुम यह जाल
फरेबु काहेक कीन हऊ? पटवारी ब्वाला—"दीनानाथ, जमरा
कायदे के बरखिलाफ अपने दूतन ते हमका जियत पकरि बोला

१ गील गीला—आश्चर्य-चकित ।

दी जाती है।" इस प्रकार परवाना तैयार करके उन दूतों के साथ वह यमराज के पास पहुंचा। उसने वहां पहुंचते ही बड़ी नम्रता के साथ वह परवाना यमराज के चरणों के पास रख दिया। भगवान की आज्ञा कौन टाल सकता है? परवाना पढ़ते ही यमराज ने यमलोक का सारा कारभार लखन पटवारी को दे दिया। लखन यमराज की गद्दी पर जा बैठा। वह सोचने लगा कि मैंने जीवन भर पाप-ही-पाप कमाया है, इसलिए मुझे अब कुछ ऐसा प्रबंध कर लेना चाहिए कि जिससे मरने के बाद मुझे स्वर्ग मिले। उसने यमराज के कानून को बदल दिया और आदेश दिया कि नरक में पड़े हुए सब पापियों को स्वर्ग भेज दिया जाय और स्वर्ग में जो पुण्यात्मा हैं, उन सबको नरक में पटक दिया जाय। नरक के पापी स्वर्ग भेज दिये गए और स्वर्ग के पुण्यात्मा सब नरक में पटक दिये गए। इस नये प्रबंध से तीनों लोकों में खलबली मच गई। सब हाहाकार कर उठे। सब देवता मिलकर विष्णु भगवान के पास गये और यह सब अंधेर कह सुनाया। सुनकर भगवान ने यमराज को बुलाया और पूछा, "तुमने यह क्या अंधेरगर्दी मचा रखी है?" यमराज बोला, "दीनबंधु, यह मेरा नहीं, लखन पटवारी का काम है, जिसे आपने परवाना भेजकर मेरी जगह यमलोक का काम सौंपा है।" यह सुन भगवान अचरज से हंसते हुए कहने लगे, "मैंने तो किसी को परवाना देकर तुम्हारे पास नहीं भेजा।" आखिर लखन पटवारी तलब किया गया। उसके आने पर भगवान ने पूछा, "तुमने यह जालसाजी क्यों की?" पटवारी बोला, "दीनानाथ, यमराज ने कायदे के खिलाफ मुझे सदेह यमपुरी में पकड़ बुलाया। मैंने सोचा कि यमराज मेरे साथ न जाने कैसा सलूक करेंगे, इसलिए मैंने अपनी भलाई के लिए यह काम किया है।" पूछ-ताछ करने पर भगवान को मालूम हो गया कि पटवारी सच कह रहा है। पर उन्होंने सोचा कि झगड़ा तो केवल पटवारी और यमराज के बीच था, लेकिन

येनि । तौ हम स्वाचा कि न जानी ई हमरे साथ कइस सलू
करै, यहिते हम अपने बचाव की नीतिन अइस काम कीन है।
पूंछै तांछै तैं पटवारी का कहा सच्ची पावागा, तोंहू भगवान य
फैसला कीन्हेनि कि झगड़ा तौ पटवारी औ जमराज के बीच है
मुला यहु तौ जमलोक के नियमन का बदलि कै सरग के जीवन क
नरक मां पठै कै वहुतु दिक्क कीन्हेंसि हैं। यहि ते पटवारी क
कुंभीपाक नरक मां डारि दीन जाय। सजा सुनि कै पटवारी हाथ
जोरि कै बिनती करै लाग कि दया-सागर, हमका याक दंई कु
घंटन की खातिर मिरतु लोक मां जायका हुकुम मिलि जाय? हुवां
से लौटि कै हम यह सजा भ्वागै का तैयार हन। भगवान पूंछेनि
कि तुम हुंवां पर काहेक जावा चहति हो? पटवारी जवाबु दीन्हेंनि
कि हम हुवां जाय कै मनइन का बतइबे कि तुम सबु भगवान कै
पूजा-ऊजा न कीन करौ, काहे ते, भगवान के दरसन ते तौ नरक
मां जायका परत है। यहै हमरे साथ भा है। हम साच्छात भगवान
केर दरसनौ कीन तहुं नरक मां जायका परि रहा है।

पटवारी का कहबु सुनि कै देउतन बड़ा गोलमाल मचावा
उइ पंचै भगवान ते कहै लागि कि यहिका खूब धनु-वैभव दइ
पिरथी पर पठै दीन जाय, नहीं तौ हुंवां यहि की बातें सुनि कै
बड़ा गड़बड़ मचि जाई। भगवान देउतन का कहबु मानि कै
वहिका घरै पहुंचा दीन्हेंनि। मुल पटवारी बहुतु चिंतित रहै लाग
कि मरै के बादि जमराज हम ते जरूर बदला भंजइ है। यहि ते
बचैक कुछु उपाय करैक चही। मुदा वहिकै तौ यह जलमै कै
आदति रहै कि कौनव नीक कामु न करै। लेबु छांड़ि कै देबु
जानतय न रहै।

यही भरमजालु मां वहि कै सारी जिंदगी बीतिगै। मरै की
बेरिया वहि खाली याक 'पलंजरू'[1] गाय पुनि कीन्हेंसि। मरै के

[1] पलंजरू गाय—बूढ़ी दुबली गाय।

इसने तो यमलोक के नियमों को बदलकर पुण्यात्माओं को नरक में डाल दिया। उन्हें अकारण बहुत कष्ट पहुंचाया है। इसलिए इसे सज़ा देना उचित है। भगवान ने हुक्म दिया कि पटवारी को कुंभीपाक नरक में डाल दिया जाय। निर्णय सुनकर पटवारी हाथ जोड़कर भगवान से कहने लगा, "प्रभो, मुझे आपकी आज्ञा शिरोधार्य है, पर एक बार मुझे कुछ घंटों के लिए पृथ्वी पर जाने की आज्ञा दें। लौटकर फिर खुशी-खुशी दण्ड भोगने को तैयार हूं।" भगवान ने पूछा, "तुम पृथ्वी पर किसलिए जाना चाहते हो?" पटवारी बोला, "दीनानाथ, मैं पृथ्वी पर जाकर लोगों को समझाऊंगा कि तुम व्यर्थ ही भगवान की पूजा-पाठ करते हो। उनके दर्शन से तो नरक जाना पड़ता है, क्योंकि मुझे भगवान के दर्शन होने पर भी नरक भेजा जा रहा है।"

पटवारी की बात सुनकर देवता घबराये। इससे पृथ्वी पर से भगवान की पूजा उठ जायगी। उन्होंने भगवान से प्रार्थना की कि इसे बहुत-सा धन देकर पृथ्वी पर ही भेज दिया जाय, नरक में नहीं। भगवान ने बात मान ली और उसे बहुत-सी धन-दौलत देकर पृथ्वी पर भेज दिया।

अब पटवारी को चिंता सताने लगी कि मृत्यु के पश्चात् यमराज बदला जरूर लेंगे। उससे बचने के लिए कुछ उपाय अवश्य करना चाहिए, परंतु आदत के अनुसार उससे कोई सत्कर्म या दान-पुण्य नहीं हो सका, क्योंकि वह लेना छोड़, देना तो जानता ही न था। इसी सोच-विचार में सारी जिंदगी बीत गई। मृत्यु के समय उसने एक बूढ़ी उजरऊ गाय पुण्य में अवश्य दे दी थी।

मरने के बाद जब उसके कर्मों का लेखा-जोखा हुआ तो पाप-ही-पाप निकला, पुण्य तो केवल उजरऊ गाय का था। यमराज ने पूछा, "पहले तुम पुण्य का फल भोगना पसंद करते हो या पाप का?" पटवारी बोला, "पुण्य का।" यमराज ने अपनी स्वीकृति

बादि जब बहिर्वे करमन का ल्याखा-ज्वाखा कीनगा तौ पा
पापु निकसा औ पुन्नि मां बहु पलंजरू गाय। जमराज पूँ
कि तुम पहिले पुन्नि भ्वागा चहित हौ कि पापु। पटवरेऊ
कि हम तौ पहिले पुन्नि भोगिबे। जमराज मंजूरी दै दीन्हेंनि
तब गैवा आई औ पटवारी ते पूंछै लागि कि का हुकुम है
पटवारी कहै लाग, "हे महतरेऊ, तुम अपनि दूनौं सींघ जमराज
के प्याट मां हूलि देव औ हलावत रहौ जबतक वोहु मरि न जाय
यहु सुनतै गैवा जमराज की कैती[1] झपटी औ जमराज हुंवां
जान लइकै भागि। उइ गैवा ते बहुत चिरौरी विती कीन्हें
मुला वह मनतिहि न रहै।

तब देउतन पटवारी और जमराज का समझउता क
दीन्हेंनि कि पटवारी का सरग मां राखा जाय। यहि तना पटवा
देउता का बैकुंठौ मिलिगा और नारदजी कै बात रहिगे।
जियत मनई ते जमराज खट्टी खागे।

१ कैती—ओर, तरफ।

दी। गाय सामने आई, और पटवारी से कहने लगी, "क्या
ज्ञा है?" पटवारी ने कहा, "हे गऊ माता, तुम अपने दोनों
ग यमराज के पेट में घुसेड़ दो और तबतक हिलाती रहो,
तक उसके प्राण न निकल जायं।" यह सुनते ही गाय यमराज
तरफ झपटी। यमराज जान लेकर भागे। उन्होंने गाय से
त अनुनय-विनय की, पर वह न मानी। तब देवताओं ने
राज और पटवारी में यह समझौता करा दिया कि पटवारी
स्वर्ग में स्थान दें।

इस प्रकार जीवित मनुष्य का लोहा यमराज को भी मानना
ा और उन्होंने नारद से कहा, "आपका कहना ही सच है।" □

अंधरी के बेटा

एगो हल राजा । उ एगो पेठिआ लगवावस हल । ओ
हुकुम हल कि जेकर जौन चीज सांझ तर्क न बिके ओकार स
खजाना से खरीद लेल जाय । एगो कोठरी के एगो रकस
लगल । ओकरा वेचला ऊ राजा के पेठिआ में आबल ।
जान के मक्खी के खाओ ? रुपइया दे के रकसीनी मोल
सांझ के राजा के माथे रकसीनी थोपा गेल्लन । रकसीनी र
हल । उ राजा के कहलक कि मोल लेवे से न होतो ।
कहवो से करे पड़तो । तू अप्पन रानी के आंख काढ़ के ज
वेलादऊ । राजा वेचारा का करे ? उ अपन तीनों रानी के
काढ़ के जंगल में पेठा देलक । छोटकी रनियां के गोड़
हलइ । का देचाखिन । उ कोप काप जंगल में पीपर-पा
वइठल रहे, पोकहा चुन-चुन के खाय, गबदा गुबदी के पानी
एक दिन छोटकी रानी के वेट भेल । नाम रखायल बि
बेटा [illegible] । [illegible] खगल ।

एक दिन एगो राजा चलल जा रहल हल ओकरा बि

अंधरी का बेटा

हिंदी रूपान्तर

एक राजा था। वह एक बाजार लगवाता था। उसका
देश था कि जो चीज शाम तक न बिके वह सरकारी खजाने
खरीद ली जाय। एक कोरी को एक राक्षसी की मूर्ति मिली।
ह उसे बेचने के लिए बाजार पहुंचा। लेकिन जानकर मक्खी
न खाय? पैसा देकर राक्षसी कौन खरीदे? शाम को राक्षसी
जा के मत्थे मढ़ी गई। राक्षसी तो राक्षसी ही थी। वह राजा
कहने लगी, "केवल मोल लेने से काम न चलेगा। मैं जो
हूंगी, वह आपको करना होगा। राजन्, तुम अपनी तीनों
नियों की आंखें निकालकर उन्हें जंगल में खदेड़ दो।" राजा
चारा क्या करे? उसने अपनी तीनों रानियों की आंखें
कलवाकर उन्हें जंगल भेज दिया। छोटी रानी गर्भवती थी।
चारी सुनसान जंगल में पीपल-पाकर के तले बैठी रहती, उनके
ल चुन-चुनकर खाती और गड्ढों का पानी पीती। एक दिन
टी रानी के पुत्र उत्पन्न हुआ। नाम रखा गया विजयपाल।

टा तो बेटा ही था, दिन दूना और रात चौगुना बढ़ने लगा।

एगो तीर-कमान मांगलक। अब बिजैपाल सिकार करे लगल। आग में भूंकर के मांस खाये लगल आउ महतारिन के भी... लगल। एक दिन अपन महतारी से आंधर होवे के जब ... सुनलक तो राजा के रकसीनियां हीं पहुंचल आउ ओकरा से ... लक कि हम अब हीं अईं रहबउ। रकसीनियां डर गेल। उ क... कि हमर नहीरा सें हमर माय के हाल चाल ले आव तब ... रकसीनियां समझलक कि उहां तो हमर माय इनका ... जयतइन, रहे का आयतन ? बिजैपाल रकसीनियां के ... सूभ पाता ठेकाना लेलक आउ उहां पहुंचल। उहां जा... ओकरा से नानी नाती के नाता जोड़लक। कुछ दिन रहे के ... रकसीनियां से बिजैपाल पुछलंक कि अय नानी घर-खवा ... गो आंख केकर रक्खल हईं ? नानी कहलक कि इ छौवो ... राजा के रानी के हअ। तोहर महतारी हिंआ पेठा देलक ... फिनु पूछलक कि इ आंख जुट कइसे सकअहे ? नानी क... कि फलना जगह धान के खेत हउ। उहां रोज धान क... आउ रोज धान रोपा हे। उ धान के मांड़ से इ आंख रान... साट देल जाय तो रानी देखे लग सकऊ हे। फेन का ... बिजैपाल नानी हीं से बिदागी लेके धान के खेत में गेल ... पांच बाल लेके घर पहुंचल। चार बाल के तो कूटकाट के ... बनाकर मांड़ गारलक आउ ओकरा से छैवो आंख ... महतारिन के लगा देलक आउ एक बाल बुन देलक। बस बि... होके धाने धाने झलके लगल। अब मायके सूझे भी ... आउ खायला मांड़-भात भी मिले लगल। अब मकान बन... बारी आवल। खेती-बारी में भी आदमी जन के जरूरत ... जाहल।

एक दिन फिन नानी हीं पहुंचल। नानी हीं एगो डंटा ... लक। पूछे पर पता चलल कि जेकर पास इ डंटा रहत उ ... आदमी आउ जानवर के खदेड़ के लाबेला चाहत, ले आ...

एक दिन एक राजा चला जा रहा था। विजयपाल ने उससे एक तीर-कमान मांग ली। अब वह शिकार करने लगा। शिकार द्वारा प्राप्त मांस वह खाता और अपनी माताओं को भी खिलाता था। एक दिन उसने अपनी माताओं से उनके अंधी होने की कहानी सुनी तो वह राक्षसी के पास जा पहुंचा। वहां जाकर कहने लगा, "अब मैं यहीं रहूंगा।"

राक्षसी डर गई। वह कहने लगी, "पहले तुम मेरी माता के पास जाकर उसकी खबर ले आओ, फिर रहना।" राक्षसी ने सोचा कि वहां जाते ही मां इसे चट कर जायगी, फिर रहने क्या आवेगा? राक्षसी की मां का पता-ठिकाना लेकर विजयपाल वहां जा पहुंचा। वहां जाकर उसने राक्षसी की मां से नानी का सम्बन्ध जोड़ लिया। कुछ दिन रहने के पश्चात् विजयपाल ने नानी से पूछा, "नानी, ये छः आंखें किसकी टंगी हैं?" राक्षसी बोली, "ये राजा की रानियों की हैं, बेटा। तेरी मां ने उनकी आंखों को निकलवाकर यहां भिजवा दिया था।" उसने फिर पूछा, "ये आंखें फिर कैसे जुड़ सकती हैं?" राक्षसी बोली, "अमुक जगह नित-नई धान का खेत है। वहां धान नित्य बोया और नित्य काटा जाता है। उस धान के मांड़ से यदि आंखें चिपका दी जायं तो वे देखने लगेंगी।"

फिर क्या था! विजयपाल नानी के यहां से आंखें लेकर चला और धान के खेत पर पहुंचा। वहां से उसने धान की पांच बालें तोड़ीं और घर आ गया। चार बालों को कूटकर भात बनाया और उसके मांड़ से छहों आंखें तीनों माताओं के लगा दीं। एक बाल बो दिया। धान पककर तैयार हो गया। अब माताओं को नित्य भात खाने को मिलने लगा और आंखों से सूझने भी लगा। खेती-बाड़ी के लिए आदमियों की जरूरत हुई। मकान भी बनाना था। एक दिन वह फिर अपनी नानी के घर पहुंचा। उसने नानी के यहां एक डंडा देखा। पूछने पर पता चला

बिजैपाल लेलक डंटा आउ उढ़क देलक। अब डंटा लेके सहेर-के-सहेर गाय, भईंस, बैल आउ भैंसा ले आबल। गर-गोरखीआ, अदमीजन मजूर सभ के डंटा से घदेड़ लौतक। अब तो गर-मकान बन गेल, खेल-पथार जोताय-कोड़ाय लगल। घर-गिरहस्थी के सभ सामान भेगेल।

एक दिन एगो राजा आबल से अपन लड़की बिआहो दान कर देलक। ऊ अप्पन सभ राजपाट बिजैपाल के दे दलक। अब बिजैपाल राजा भे गेल। मुला सोचलक कि जो रकसीनियां जान गेल तो बड़ा तंग करल। इ गुने इ फिन रकसीनियां के मैया ही पहुंचल। दूगो किऊउरी देख के पूछलक कि इका हउ नानी। रकसीनियां कहलक—बेटा, एगो में हमर परान आउ दोसरा में तोहर माय के परान हउ। खोललं तो दुनु मर जायंग। रख दे जलदी सबर!

एक दिन बिजैपाल रकसीनियां से चुप्पे दुन्ने किऊउरी लेके चम्पत भे गेल। जइसहीं किऊउरी खोललक कि दून्नू माय-बेटी बम बोल गेलन। अब बिजैपाल अपन बाप हीं आबल आउ अपन परिचै देलक। बाप-बेटा गले गले मिललन। हिंआ के राज भी बिजैपाल के हाथ लगल। अब ओकर सोना के दिन चान्दी के रात होबे लागल। खिस्सा गेलो बन में बुज्झ अपन मन में। अंधरी के बेटानी पर सभ के भाग फिरें।

कि जिसके पास यह डंडा रहता है, वह चाहे जितने जानवरों और आदमियों को खदेड़ सकता है। विजयपाल ने मौका देखा तो डंडा लेकर चल दिया। घर आया। अब वह डंडा लेकर झुंड-के-झुंड गाय, भैंस, बैल खदेड़ लाया। खेती-बाड़ी, मजदूरी और ढोर चराने के लिए बहुत-से आदमी भी ले आया। मकान बन गया। घर-गिरस्ती अच्छी चलने लगी।

एक दिन एक राजा आया। उसने अपनी लड़की विजयपाल को ब्याह दी। अपना राजपाट भी उसे दे दिया। विजयपाल अब राजा हो गया, लेकिन उसने सोचा कि यदि राक्षसी को यह सब हाल मालूम हुआ तो वह मुझे तंग करेगी। इसलिए उसे भी ठिकाने लगा देना चाहिए। वह फिर नानी के पास जा पहुंचा। उसने उसके पास सिंदूर रखने की दो डिबियों को देखकर पूछा, "ये क्या हैं, नानी ?"

राक्षसी बोली, "बेटा, इन्हें मत छूना। इन डिबियों में मेरे तथा तेरी मां के प्राण हैं। डिबिया खोलते ही हम दोनों मां-बेटी मर जायंगी।"

एक दिन विजयपाल चुपचाप उन दोनों डिबियों को लेकर घर आ गया। जैसे ही उसने उन्हें खोला, माँ-बेटी दोनों मर गईं। अब विजयपाल अपने बाप के यहां पहुंचा और अपना परिचय दिया। बाप-बेटा गले मिले। बाप का राज्य भी विजयपाल को मिल गया। अब क्या था ? उसके दिन सोने के और रातें चांदी की होने लगीं।

किस्सा समाप्त हुआ, मन में इसका मतलब समझें। अंधेरी के बेटा के समान सबके भाग खुलें। □

मनई केर मोल

बाघेल

ऐसेन ऐसेन रहैं एक राजा बिकरमाजीत। उहू[1] बड़े न्याय राजा रहैं। उनके न्याय कै परसन्सा दूर-दूर रहै। एक बेर ऐसे भा कि देउतन के राजा इन्द्र सोचिन कि राजा बिकरमाजीत परिच्छा लीन जाय। नहीं तौ कहौं ई[2] हमार इन्द्रासनै न पा जांय। ऐखे खीतिर[3] उइं मनई[4] के तीन मुंड़ कटे कटाये पठइन कि जौ राजा ईं तीनौं मूड़न केर अलगु-अलगु मोल बताय दिहि तौ उनके सारे राज मा हुन[7] बरसी: नहीं तौ गाज गिरी। राज राज दरबार मा तीनौं मुड़ धर के सब दरबारी पंडितन से कहि कि तुम पंचै इनखर मोल बतावा तौ एकौ पंडित उनखर मोल बताय सके। सारे राज दरबार मा सनाका[8] छायगा। देखैं म अस[9] लागै कि जानौ तीनौं मूड़ एकै मनई के आयं, थोरौं फर न रहै। पंडितन का हाल देख के राजा बहुत खिसयान औ अप पुरोहित से कहिन की देखा तुमका तीनै दिन कै मोहलत दीन जा

१ वे २ यह ३ लिए ४ आदमी ५ भेजना ६ दिया ७ सुव
८ सन्नाटा ९ इस प्रकार।
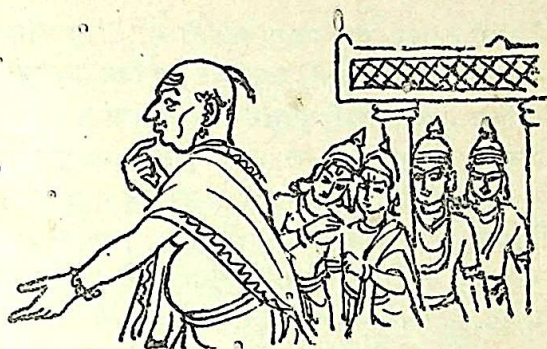
मनुष्य का मोल

हिंदी-रूपान्तर

विक्रमाजीत नाम के एक राजा थे। वह बड़े न्यायी थे। उनके न्याय की प्रशंसा दूर-दूर तक फैली थी। एक बार देवताओं के राजा इंद्र ने विक्रमाजीत की परीक्षा लेनी चाही, क्योंकि उन्हें डर था कि कहीं ऐसा न हो कि अपनी न्याय-प्रियता के कारण राजा विक्रमाजीत उनका पद छीन लें। इसके लिए उन्होंने आदमी के तीन कटे हुए सिर भेजकर कहला भेजा कि यदि राजा इनका मूल्य बतला सकेंगे तो उनके राज में सब जगह सोने की वर्षा होगी। यदि न बता सके तो गाज गिरेगी और राज्य में आदमियों का भयंकर संहार होगा। राजा ने दरबार में तीनों सिर रखते हुए सारे दरबारी पंडितों से कहा, "आप लोग इन सिरों का मूल्य बतलाइये?" पर कोई भी उनका मूल्य न बतला सका, क्योंकि तीनों सिर देखने में एक समान थे और एक ही आदमी के जान पड़ते थे। उनमें राई बराबर भी फरक न था। सारे सभासद् मौन थे। राजदरबार में सन्नाटा छाया हुआ था। एक-दूसरे का मुंह ताक रहे थे। पंडितों का यह हाल देखकर

है। जो इनखर मोल बताय देहा तौ मुंहमांगा इनाम पइहा, नहीं तौ फांसी पर टंगवाय दीन जइहा। दुइ दिन तक पुरोहित महराज सोचिन विचारिन तौ कुछू मतलब बैठावा न बइठ। तब तिसरे दिन उइं बड़े संकट मां परे। सब खाब नहाब भूलगा। मारे सोच के उदास है के पिछौरी ओढ़ के परे रहे। पंडिताइन आईं औ पिछौरी उठाय के कहिन—"पंडित, आज अपना कैसेन करी थे। चली उठी नहई खई।" पंडित मूड़नवाली सब किस्सा बतायेने। या सब सुनतै पंडिताइन के होस न रहिगा औ ओऊ बड़े असमंजस मा पड़ीं कि मोरे राम, अब का कीन जाय। कुछू समझ मा न आबा तौ सोचिन कि काल्ह तौ पंडित का फांसी होइन[1] जई तौ भला हम पहिलेन काहे न जिउ तेग देईं। काहे पंडित कै मौत अपने आंखिन देखी। आधी रात के बखत मरैं कै निरूप[2] कै के पंडिताइन शहर के बाहर निकरीं।

एहकैती[3] का भा कि पारबती जी शंकर भगवान से कहिन कि सती के ऊपर संकट आय के परगा है तौ कुछू करा चाही। शंकर भगवान कहिन अरे पारबती या संसार आय हेन[4] ऐसेन रहत है, कहांतक तुम कुछू करिहा। पै गौरा पारबती एकौ न मानिन। कहिन, नहीं कुछ जुगुत तौ करबैं करी।[5] शंकर भगवान कहिन कि जो नहीं मनतिउ तौ चलो चली। दूनौ जने सियार सियारिन के भेख धरिन औ तलाये को मेड़ मां जहां पंडिताइन बूड़ैं चली जात रहैं, जाय के पहुंचगे। पंडिताइन जब तलाए के मेड़ के लधें[6] पहुंची तौ का सुनिन कि तराये के मेड़ मा एक सीगट (स्यार) खूब हंसे, हुके-हुके[7] करैं औ पुनि हंसे लागै। ये ही बीच मा सिगटिनिया पूछिस कि तुम आज कैसेन बैकलाय[8] गया है कि बिना मतलबे हंस डरत्या है। सिगटवा कहिस अरे तैं का जानस

---

१ हो ही २ निश्चय करके ३ इस ओर, इधर ४ यहां ५ किया ही जाय ६ पास ७ स्यार की बोली ८ पागल होना।

राजा चिंतित हुए। उन्होंने पुरोहित को बुलाकर कहा, "तुम्हें तीन दिन की छुट्टी दी जाती है। जो तुम इन तीन दिनों में इनका मूल्य बता सकोगे तो मुंहमांगा पुरस्कार दिया जायगा, नहीं तो फांसी पर लटका दिये जाओगे।"

दो दिन तक पुरोहितजी ने बहुत सोचा, परंतु वह किसी भी फैसले पर न पहुंचे। जब तीसरा दिन शुरू हुआ, तो वह बहुत व्याकुल हो उठे। खाना-पीना सब भूल गये। चिंता के मारे चद्दर ओढ़कर लेटे रहे। पंडिताइन से न रहा गया। वह उनके पास गई और चद्दर खींचकर कहने लगी, "आप आज यों कैसे पड़े हैं? चलिये, उठिये, नहाइये, खाइये।" पंडित ने उन तीनों मूड़ों का सब किस्सा पंडिताइन को कह सुनाया। सुनते ही पंडिताइन होश-हवास भूल गई, बड़े भारी संकट में पड़ गई। मन में कहने लगी—हे भगवान्, अब मैं क्या करूं? कहां जाऊं? कुछ भी समझ में नहीं आता। उसने सोचा कि कल तो पंडित को फांसी हो ही जायगी, तो मैं पहले ही क्यों न प्राण त्याग दूं? पंडित की मौत अपनी आंखों से देखने से तो यही अच्छा है। यह सोच मरने की ठान आधी रात के समय पंडिताइन शहर से बाहर तालाब की ओर चली।

इधर पार्वती ने भगवान् शंकर से कहा कि एक सती के ऊपर संकट आ पड़ा है, कुछ करना चाहिए। शंकर भगवान् ने कहा, यह संसार है। यहां पर यह सब होता ही रहता है। तुम किस-किस की चिंता करोगी? पर पार्वती ने एक न मानी, कहा, "नहीं, कोई-न-कोई उपाय तो करना ही होगी।" शंकर भगवान् ने कहा, "जो तुम नहीं मानती हो तो चलो।" दोनों सियार और सियारन का भेस बनाकर तालाब की मेंड़ पर पहुंचे, जहां पंडिताइन तालाब में डूबकर मरने को आई थी। पंडिताइन जब तालाब की मेंड के पास पहुंची तो उसने सुना कि एक सियार

पागल की तरह जोर-जोर से हंस रहा है। कभी वह हंसता

अब खूब खांय का मिली । खूब मोटाब । सिगटिनिया कहिस कि या कैसेन बात आय तुम कहत्या है, कुछू समझ मा नहीं आवै, समझी तौ मानी । सिगटवा[1] कहिस कि राजा इन्द्र राजा बिकरमाजीत के हेन तीन ठै मूड़ पठइन है औ कहवाय पठइन है कि जो राजा इनकर मोल बताय पाइन तौ हुन्न बरसी नहीं तौ गाजै गिरी । तौ सुन, मोल तो कोऊ बताय ने सकी कि सोन बरसै । अब राज मा सगले[2] हार गाजै गिरी तौ बहुत जने एक साथै मरि हैं तौ खूब खाबै, खूब मुटाबै । एतंना कहिके सिगटऊ "हुके-हुके" कै के हंसै लाग । सिगटिनिया फेर कहिस कि तुम जानत्या है, इन मूड़न केर मोल कि वैसे आय हंसत्या है ? सिगटवा कहसि कि सुन, हम जानित तौ जरूर हथन पैं बताउब ना । जो बताय दिहेन औ कोऊ सुन लिहिस तौ सब तारैं-ब्यौंत बिगड़ जई । सिगटिनिया कहिस कि तौ तुम्ह कुछू आय नहीं जनत्या; वैसे झूटै आय डींग मरत्या है । हेन आधी रात कै धौं को आय के बैठ है जउन सुन लेई तौ इनकर भेदै खुल जई । सिगटऊ आव धरिन न ताव, चट्टै कहिन कि तैं हमरे बात केर विसुआसै नहीं ! नहीं मानती तौ ले सुन । तीनौं मूड़न केर मोल हम बताइत हैं कि तीनौं मा एक मूंड ऐसेन है कि जौ एक सराई[3] सोने के लैके काने ह्वै के डारैं जो ओखे मुंह ह्वै के ना निकरै तौ ओकर मोल अमोल है । दूसरे मूड़े का लैके जो सराई काने ह्वै के डारै औ मुंहे ह्वै के निकर जाय तौ ओखर मोल दस हजार रुपिया । औ तीसर मूंड़ लेय औ ओखे काने ह्वै के सराई डारै औ सराई मुंहे, आंखी, नकुवा सब जघा ह्वै के निकर जाय तो ओखर मोल है दुई कौंड़ी । पंडिताइन जो सब बात सुनत रहै तौ चुप्पै घर कइत चल दहिन ।

पंडिताइन खुशी-खुशी घरै आईं औ पिछौरी टार के पंडित से कहिन का परे हा, चला उठा, नहा आव । कौने सोचन परे

---
[1] स्यार (गीदड़) [2] संपूर्ण [3] सलाई ।

और कभी "हुके-हुके, हुवा-हुवा" करता है। सियार की यह दशा देखकर सियारिन ने पूछा, "आज तुम पागल हो गये हो क्या? क्यों बेमतलब इस तरह हंस रहे हो?" सियार बोला, "अरे, तू नहीं जानती, अब खूब खाने को मिलेगा—खूब खायंगे और मोटे-ताजे हो जायंगे।" सियारिन ने कहा, "कैसी बातें करते हो? कुछ समझ में नहीं आती; जो कुछ समझूं तो विश्वास करूं।" सियार ने कहा, "राजा इंद्र ने राजा विक्रमाजीत के यहां तीन सिर भेजे हैं और यह शर्त रखी है कि जो राजा उनका मोल बता सकेगा तो राज्य भर में सोना बरसेगा; जो न बता सकेगा तो गाजें गिरेंगी। तो सुनो, सिरों का मूल्य तो कोई बता न सकेगा कि सोना बरसेगा। अब राज्य में हर जगह गाज ही गिरेगी। खूब आदमी मरेंगे। हम खूब खायंगे और मोटे होंगे।" इतना कहकर सियार फिर "हुके-हुके, हुवा-हुवा" कहकर हंसने लगा। सियारिन ने पूछा, "क्या तुम इन सिरों का मूल्य जानते हो?" सियार बोला, जानता तो हूं, किंतु बतलाऊंगा नहीं, क्योंकि यदि किसीने सुन लिया तो सारा खेल ही बिगड़ जायगा।" सियारिन बोली, "तब तो तुम कुछ नहीं जानते, व्यर्थ ही डींग मारते हो। यहां आधी रात को कौन बैठा है, जो तुम्हारी बात सुन लेगा और भेद खुल जायगा।" सियार को ताव आ गया। वह बोला, "तू तो मेरा विश्वास ही नहीं करती। अच्छा तो सुन, तीनों सिरों का मूल्य मैं बतलाता हूं। तीनों सिरों में एक सिर ऐसा है कि यदि सोने की सलाई लेकर उसके कान में से डालें और चारों ओर हिलाने-डुलाने से सलाई मुंह से न निकले तो उसका मूल्य अमूल्य है। दूसरे सिर में सलाई डालकर चारों ओर हिलाने-डुलाने से यदि मुंह से निकल जाय तो उसका मूल्य दस हजार रुपया है। तीसरा सिर लेकर उसके कान से सलाई डालने पर यदि वह मुंह, नाक, आंख सब जगह से पार हो जाय तो उसका मूल्य है दो कौड़ी।" पंडिताइन यह सब सुन रही थी,

हा, हम बताउब न मूड़न केर मोल। पंडित बड़े बिहन्ने[1] उठे तौ राजा का सिपाही ठाढ़ रहै तौ खिसिआय के ओहौ के ऊपर पड़े कहिन, कि बड़ा सकार[2] न भा, आय के ठाढ़ ह्वै गे, अरे हम कहौं भगे थोड़ौ जात रहेन। जा राजा से कहि दिहा कि कउन बड़ा काम आय सौंपे हैं। नहान धोय लेई, खाय पी लेई तौ आई। पंडित नहाइन धोइन, पूजापाठ किरिन औ खाय-पी के रीं एतनेन मा पंडिताइन् से भेद पंछपांछ के राजा के दरबार म पहुंचे। पैलागी परनाम भई। पंडित जातै कहिन कि मंगाई कह है तीनौं ठै मूंड़। राजा उइ तीनौं मूंड़ मंगाय दिहिन। पंडि उन्हही एइ कैती ओंह कैती उलटाय पलटाय के देखिन औ कहि कि एक ठै सोने की सराई तौ मंगाय देई। राजा सोने कै सरा मंगवाय दिहिन। पंडित सराई उठाइन औ एक मूंड़ के का ह्वै के डारिन औ चारिउ कइत अहटाइन[3] तौ कौनौ कइत से निकरी। पंडित सोचिन विचारिन औ धीरे से कहिन कि य मनई तौ बड़ा गमखोर है। एखर पार नहि आय। महारा लिखी एखर मोल अमोल है। येखे पाछें पंडित दुसरकंवा[4] मू लिहिन औ ओखे काने ह्वै के सराई डारिन औ चारौं कइ अहटाइन तौ मुंहे ह्वै के सराई निकर आई तौ कहिन कि य आदमी तौ कान का कच्चा है। जउन कान से सुनत है ओह मुंहे से कहिउ डारत है। लिखी राजा साहेब एखर मोल द हजार रुपिया। तिसरे मूंड़े मा काने से सराई डार के लाग पंडि अहटामैं तौ ओखे, आंखी, नकुवा, मुंहे सबै जघा से सराई निक लाग तौ पंडित मुंह बिचकाय[5] के कहिन—अरे या मनई त कौनौ काम केर नहि आय। या कौनौ बात थोरौ नहीं पचा सकै। कान का बड़ा कच्चा है। लिखी राजा साहेब एखर मो दुई कौड़ी। ऐसेन चुगलखोर मनई का मोल एतनै बहुत है

१ प्रातःकाल २ सवेरा ३ टकरा-टकराकर टटोलना ४ दूसरा ५ मुंह बना

चुपचाप दबे-पांव घर की ओर चल पड़ीं।

पंडिताइन खुशी-खुशी घर पहुंचीं। पंडित अब भी मुंह पर पिछौरी डाले पहले के समान चिंता में डूबे पड़े थे। पंडिताइन ने चादर उठाई और कहा, "पड़े-पड़े क्या करते हो? चलो उठो, नहाओ-खाओ। क्यों व्यर्थ चिंता करते हो, मैं बतलाऊंगी उन सिरों का मूल्य।"

सवेरा होते-होते पंडित उठे तो देखा दरवाजे पर राजा का सिपाही खड़ा है। पंडित ने ठाट के साथ सिपाही को फटकारते हुए कहा, "सवेरा नहीं होने पाया और बुलाने आ गये! जाओ, राजासाहब से कह देना कि नहा लें, पूजा-पाठ कर लें, खा-पी लें तब आयेंगे।" सिपाही चला गया। पंडित आराम से नहाये-धोये, पूजा-पाठ और भोजन किया। फिर पंडिताइन से भेद पूछकर राजदरबार की ओर चले। पंडित ने पहुंचते ही कहा, "राजन्, मंगवाइये वे तीनों सिर कहां हैं?"

राजा ने तीनों सिर मंगवा दिये। पंडित ने उन्हें चारों ओर इधर-उधर उलट-पलटकर देखा और कहा, "एक सोने की सलाई मंगवा दीजिये।" सलाई मंगवा दी गई। पंडित ने एक सिर को उठाकर उसके कान में सलाई डाली। चारों ओर हिलाई-डुलाई, पर वह कहीं से न निकली। पंडित कहने लगा, "यह आदमी बड़ा गंभीर है, इसका भेद नहीं मिलता। लिखिये महाराज, इसका मूल्य अमूल्य है।" फिर दूसरा सिर उठाकर उसके कान में सलाई डाली। हिलाई-डुलाई तो सलाई उसके मुंह से निकल आई। वह कहने लगा, "यह आदमी कान का कुछ कच्चा है। जो कान से सुनता है वह मुंह से कह डालता है। लिखिये, महाराज, उसका मूल्य दस हजार रुपया।" पंडित ने तीसरा सिर उठाया, उसके कान से सलाई डालते ही उसके मुंह, नाक, आंख सभी जगह से सलाई पार हो गई। उसने मुंह बनाकर

कहा, "अरे यह आदमी किसी काम का नहीं। यह कोई भेद

पंडित को जवाब सुनके राजा बड़े खुशी भे औ बहुत का सोना चांदी हीरा, जवाहर दैं के पंडित का बिदा किहिन।

पंडित अपनै घरै गे औ राजा तीनौं मूंड़न के साथ वहै मोल लिखी के राजा इन्द्र के दरबार मा भेजवाय दिहिन। राजा इन्द्र बड़े खुशी भे। सारी राज मां हुन्न बरसा। रिआया खुशहाल ह्वै गै।

नहीं छिपा सकता, लिखिये महाराज, इसका मूल्य दो कौड़ी। ऐसे कान के कच्चे तथा चुगलखोर आदमी का मूल्य दो कौड़ी भी बहुत है।"

पंडित का उत्तर सुनकर राजा प्रसन्न हुआ। उसने पंडित को बहुत-सा धन, हीरा-जवाहरात देकर विदा किया।

इधर राजा ने तीनों सिरों का मूल्य लिखकर राजा इंद्र के दरबार में भिजवा दिया। इंद्र प्रसन्न हुए। सारे राज्य में सोना बरसा। प्रजा खुशहाल हो गई। □
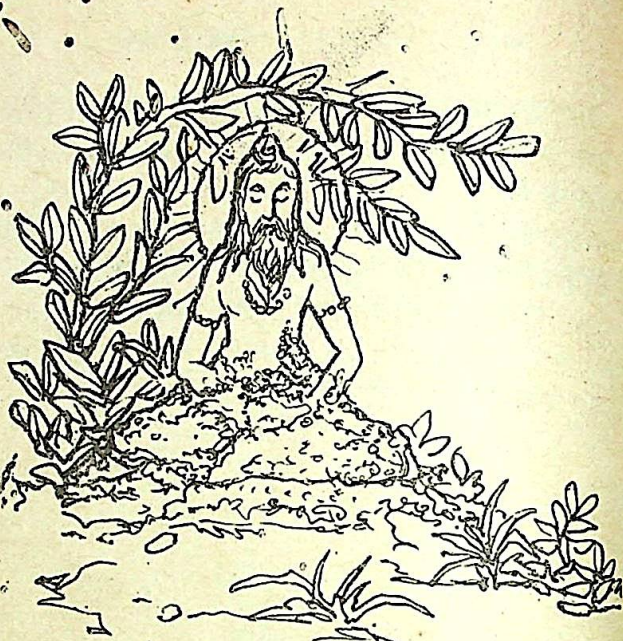
राजा के बेटा के गेआन आ साधू के तीन गो बात

भोजपुरी

एगो राजा रहस । वो राजा का एकेगो लरिका रहे । लरिका का पढ़े गुनै में मन न लागे । ऊ भरदिन घुमले फिरे । अपना बेटा के बुड़बकई से राजा का बड़ा फिकिर हो गइल आ उ बड़ा उदास रहे लगलन । बोजीर के बेटा राजा के बेटा से सब बिर-तंत सुनवंलन । राजा के बेटा के केंहु कहलन कि इआर घरे रह गेआन न जाने ! हम एकरा खातिर विदेस जाये के चाहतबानी ।

बोजीर के बेटा जाके राजा से कहलन कि इआर गेआन सिखे खातिर विदेस जाय के तैयार बाड़न । अब का रहे नीमन दिन

राजपुत्र को ज्ञान प्राप्ति और साधु के तीन उपदेश

हिंदी रूपान्तर

एक था राजा। उसके एक लड़का था। लड़के का मन पढ़ने-लिखने में नहीं लगता था। सारे दिन घूमता-फिरता रहता था। अपने लड़के की मूर्खता से राजा को बहुत चिंता हुई। वह उदास रहने लगा। वजीर के लड़के ने राजकुमार को यह वृत्तांत सुनाया। राजकुमार कहने लगा, "मित्र, घर रहकर कहीं ज्ञान

बाऊ। एक दिन राजा के बेटा गेआन सिखे खातिर घर से वहा
गइले।

जात जात राजा के बेटा एगो जंगल में पहुंचलन आ एगो
लमहर शाया के गाछीतर ठहरलन। ऊंहवा ऊ देखत का बाड़न
कि एगो साधू आंख मुनले बइठलबा आ वोकरा देह पर दियक
लाग गइल बा। बीतही चारु ओर के खर-पात उपजि गइ
बा। राजा के बेटा पहिले चारु और के खबर-पात सा
कदेहलन, वोकरा बाद घास-बोस उखाड़के फेंक के वोतही स
सफियाना बना देलन। येह सब काम से जब फराकित मिल
तवें गवे-ग साधू के देह पर के माटी-भींटी साफ कके ठीक-ठा
कदेलन आ रात भइला पर वोतहिये फल फूल खाके आ पान
पी के सूत रहलन। दोसरा दिन उठलन त फेर चारु ओर
ज़मीन बहार के नदी में से पानी ले अइलन आ लीप पोत
चीकन-चुलबुल बना देलन। अब उनका रोज रोज के इहै का
रहे। कुछ दिन का बाद साधु के बारे बरिस के तपसेया टूटल
ऊ अपना तेजसे सब बात जान गइलन आ कहलन कि जे हमा
येतना सेवा कइलख ऊ हमारा सामने आवे। यतना बात सुन
राजा के बेटा साधू का सोझा आके दंडवत कके खड़ा हो गइलन
साधू महाराज कहलन कि तोर सेवा से हम बाड़ा खुश बान
बोल तू का मांगत बाड़े। इ बात सुनके राजा के बेटा कहल
कि अपने हमारा पर खुश बानी त हमरा के गेआन देहल जाव
साधू बात सुनके कहलन कि तू त हमरा से कुछो न मंगले
सबकुछ मांग ले ले। जो तोरा के हम गेआन दे देनी। देख
तीनगो बात इआद रखिहे। रसता में असगर से दोसरा
भला। केहु यहठे के आसन देवे त वोकरा भार आ धसका

दइठे के आ तीसर बात की विदेस में केहु खाये के देवे तो वो
से निकाल के पहिले कौनौ जीया जनावर के देके खाये के। रा

आया है ? मैं उसके लिए परदेस जाना चाहता हूं।"

वजीर के लड़के ने राजकुमार की बात राजा को सुनाई। कहा, "राजकुमार ज्ञान सीखने के लिए बाहर जाना चाहते हैं।" राजा ने सब तैयारी कर दी और राजकुमार शुभ मुहूर्त्त में घर से निकल पड़ा।

राजा का लड़का घूमते-घामते एक सघन बन में जा पहुंचा। वहां उसने देखा कि एक साधु आंख मूंदे बैठा है। उसके शरीर पर दीमक लग गई है। राजकुमार वहीं रुक गया। उसने पहले साधु के आसन के पास की जगह को घास-फूस हटाकर साफ किया, फिर धीरे-धीरे साधु के शरीर पर जमी हुई दीमक तथा मिट्टी को निकाला। सारा आश्रम साफ-सुथरा बना दिया। रात को वहीं सो गया। वह फल-मूल खाकर रहने और नित्य इसी प्रकार साधु की सेवा करने लगा। कुछ दिन बाद साधु की बारह वर्ष की तपस्या पूर्ण हुई। आंख खोलते ही उसे अपने आसपास की जगह साफ दिखाई दी। साधु बोला, "जिसने मेरी इतनी सेवा की है, वह मेरे सामने आवे।" इस बात को सुनकर राजकुमार साधु के सामने हाथ जोड़कर जा खड़ा हुआ। साधु कहने लगा, "तुम्हारी सेवा से मैं प्रसन्न हूं। वर मांगो।" राजपुत्र बोला, "महाराज, यदि आप प्रसन्न हैं तो मुझे ज्ञान दीजिये।" साधु बोला, "बेटा, तुमने कुछ नहीं मांगा और सबकुछ मांग लिया। मैं तुम्हें ज्ञान देता हूं। तुम्हें तीन बातों का ध्यान रखना चाहिए। पहली, रास्ते में अकेला नहीं चलना चाहिए। दूसरी, किसीके दिये हुए आसन पर बिना जांच-पड़ताल किये नहीं बैठना चाहिए। तीसरी, परदेस में यदि कोई अनजान मनुष्य कुछ खाने को दे तो उसमें से थोड़ा किसी जानवर को पहले खिलाकर तब खाना चाहिए।"

राजपुत्र साधु से वरदान लेकर आगे चला। चलते-चलते वह एक तालाब के पास पहुंचा। उसने देखा कि एक चील तालाब

के बेटा साधू से गेआन सिखके दंडवत कके उहवां से चल पड़लन।

राजा के बेटा साधू के पास से चललन त एगो लमहर पांतर में अइलन। उहवां केहु-कते ना रहे। ये ही बीच में देखताड़न कि नदी में एगो चील झपटा मरलक आ अपन शिकार ले के आकास में मेड़राये लागल। चीलवा एगो कछुआ पकड़ले रहे। जब वोंकरा देह पर ठोर मारे त हड़िये मिले। ये ही बोजह से चिलवा कछुआवा के छोड़ो देलक। कछुआवा राजा के बेटा का आगाड़िये में गिरल। राजा के बेटा कछुआ के देखे लगलन त उनका साधू के बात इआद पड़ल कि रसता में असगर से दोसराइन भला। बुझाला भगवान जी हमरा के असगर देख के संघतिया दे देहलन हवे। इ सोच समुझ के ऊ कछुआवा के अपना झोरा में राख लेलव आ उहवां से आगे बढ़लन। गरमी के दिन रहे। बाड़ा कसके घाम उगल रहे। राजा के बेटा का चलत-चलत फेने-फेने हो गइल रहे। थोड़ का दूर पर उनका एगो पाकर के पेड़ लउकल। ऊ बोतहिये जाके ठहरलन आ झोरा में से कछुआ के निकाल के बहरा धदेलन। झोरा के सिरहाना धके वोंठन गइलन। राह के हरानी से वोंठग ते उनका नींव पड़गइल। वो पाकर के गाछ का सोर में एगो मनीअर सांप रहे। वो सांपवा का एगो काग आ एगो सियार से दोसती रहे। जब कबनो जातरी वो गाछ का नीचे आके सूत जाय तकगवा पंचभाखा बोले। राजा के बेटा के सुतते काग बोललक त सियार अपना मान में से निकल के पंचभाखा बोललक। मनिअर का कान में आवाज जब पड़ल त ऊ सनसनाइल निकलल। आके देखलस त एगो खबसूरत जवान सूतल बा। ऊ जाके राजा का बेटा का दाहिना गोड़ के अंगूठा में काट लेलस आ अपना दिल में समझ के अझता-पछता के बाहर उतरलन। देखलन कि मोसाफिर मर गइलवा, त ऊ राजा के बेटा के आंख फोरे के

से शिकार लेकर ऊपर उड़ गई। चील ने कछुए को पकड़ा था। वह अपनी चोंच उसके शरीर पर मारती तो उसे हड्डी के सिवा कुछ भी मालूम नहीं होता था। इसलिए उसने कछुए को छोड़ दिया। कछुआ राजकुमार के आगे आ गिरा। राजकुमार को साधु की वात याद आ गई कि रास्ते में अकेला न चले। उसने समझा कि ईश्वर ने मुझे इस निर्जन मार्ग के लिए एक साथी दे दिया है। उसने कछुए को उठाकर अपनी झोली में रख लिया और आगे बढ़ा। राजकुमार चलते-चलते दोपहर को जंगल के बीच एक पाकर के झाड़ के नीचे ठहर गया। कछुए को झोली से निकालकर पास रख दिया और आप झोले को सिरहाने रखकर लेट गया। थका-मांदा तो था ही, लेटते ही आंख लग गई। उस वृक्ष की जड़ में एक सांप रहता था। उसकी मित्रता एक काग और सियार से थी। जब कोई यात्री उस वृक्ष के नीचे आकर सोता तो काग 'कांव-कांव' कर आवाज लगाता। उसकी आवाज सुनकर सियार आ जाता और वह जोर-जोर से चिल्लाता। सियार की बोली सुनकर बिल में से सांप निकलता और उस सोते हुए मुसाफिर को काट खाता। मरने पर काग और सियार दोनों मिलकर उसे चट कर जाते।

राजपुत्र को सोता देख काग बोलने लगा। उसकी बोली सुनकर सियार आ गया। सियार की बोली जब सांप के कान में पड़ी तो वह झटपट बिल में से निकलकर राजपुत्र के पास पहुंचा और उसके पैर के अंगूठे में काटकर बिल में वापस चला गया। काग कुछ देर बाद नीचे उतरा और धीरे-धीरे राजकुमार की ओर बढ़ने लगा। जब उसे विश्वास हो गया कि वह मर गया है तो वह उसके सिर के पास जाकर उसकी आंखें निकालने की चेष्टा करने लगा। इसी समय कछुए ने झपटकर अपनी कांतरों से उसकी गर्दन पकड़ ली। काग का दम घुटने लगा। वह कछुए से गिड़गिड़ाकर बोला, "ओ कछुवे भाई, मुझे मत

लव देखे लगलन। कछुआवा बैठल बैठल, टुकुर-टुकुर ताकत रहे। जब काग राजा का बेटा के आंख निकाले के उतजोग में रहस तले कछुआवा टपसे कगऊ के नटी धलेलक आ अपन मंडी खोपड़इया में सेकुड़ावे लागल। अब त कागराम के निहोरा-पाती करे। कछुआ कहलक कि तू जइसे हमरा इआर के मुआ देलहं वोइस ही तोहरों हम जान लेके छोड़ब। अब त भइल मसकिल काग कहकल कि तू हमार जान बखस दत तोहरो संघतिया के हम जीआ देतबानी। काग अपना कग-भासा में बोलल, सियार त पहिले ही आके खाड़ा भइल रहे ऊहो पंचभाखा में बोललक मनीअर फेन निकाल के आइल जा जहंवा कटले रहे बोत हि कटलस। राजा के बेटा देह में के जहर त निकस गइल आ संपद बोतहिये सूरभा के चित्त हो गइल। राजा के बेटा उठके बइ गइलन। उनका उठते कछआवा कगऊ के नटी काट देलक। राजा के बेटा राम, राम कहके कछुआ से कहलन—बड़ी सूतान सूतनी अब इहवा से चले के चाहीं। कछुआ कहलक कि ये इआर रउला सूतल ना रनी हवे। रउआ केत, इ मनीअर सांप काट लें लेरलख आ बोकरा बाद जड़ी से फूगनी तक सब बात कहा गइल आ कहलस कि येतही बड़का काल रलख आ केतना दिन से गरजान मोसाफिर के अखरेरे जान लेत रहल हवे। अब देखले का बानी उठाईं खांड आ मनीअर के टुकड़ा कदी। राजा के बेटा खांड़ निकललन आ मनीअर के टुकड़ा कदेलन। अब राजा के बेटा आ कछुआ के हाथ में ले के आगे बढ़लन। थोड़ का आगे बढ़ला पर एगो पोखरा लउकल। कछुआ कहलक कि हमनी का बहुत दिन तक साथ रहल। अब हमार घर आ गइल, हमरा के अपने छोड़ दीं काहे कि थोड़ के दूर पर एगो गांव मिली आ अपने अदमिआइत हो जायेब। कछुआ के बात सुनके राजा के बेटा कछुआ के ले जाके पोखरा के किनारे धदेलन। कछुआ केतना दिन से बिछुड़ल अपना घर में समाइल। राजा

मारो, छोड़ दो।" कछुवा बोला, "जैसे तुमने मेरे मित्र को मरवा डाला है, वैसे ही मैं तुम्हें भी मार डालूंगा।" काग बोला, "तुम मुझे छोड़ दो, मैं तुम्हारे मित्र को जीवित किये देता हूं।" ऐसा कहकर कौए ने आवाज लगाई। सियार पास ही खड़ा था। उसने बोलना शुरू किया। सियार की आवाज सुनकर सांप बिल में से निकला और उसने राजकुमार के पास जाकर घाव में मुंह लगाकर विष को खींच लिया। सांप मूर्छित-सा होकर पड़ रहा। राजकुमार उठ बैठा। कहने लगा, "अहा-हा, क्या नींद आई थी!" कछुवा बोला, "मित्र, नींद नहीं आई थी। इस काले सांप ने तुम्हें काट खाया था। तुम मर गये थे।" ऐसा कहकर उसने सब वृत्तांत कह-सुनाया। उसने कौए का गला घोंटकर उसकी जान ले ली और राजकुमार से कहा, "देखते क्या हो? यह तुम्हारा काल—सांप पड़ा है, इसे मार डालो।" राजकुमार ने खंजर निकालकर सांप के टुकड़े-टुकड़े कर डाले। इसके बाद राजकुमार कछुए को लेकर आगे बढ़ा।

थोड़ी दूर आगे चलने पर एक तालाब मिला। कछुवा कहने लगा, "हम लोग कई दिन तक एक साथ रहे, अब मेरा घर आ गया है। आप मुझे छोड़ दीजिये।" यह सुनकर राजकुमार ने कछुए को तालाब की पार पर रख दिया। कछुवा तालाब में चला गया और राजकुमार आगे बढ़ा। उसे कुछ दूर चलने के बाद ठगपुर नामक एक गांव मिला। इस गांव में ठगों का घर था। ठग के चार लड़के और दो लड़कियां थीं। लड़कियां ज्योतिष में पारंगत थीं। जब कोई परदेशी उस नगर में आता तो वे बतला देती थीं कि उसके पास कितना धन है। चारों लड़के गांव के चारों ओर चले जाते थे और यात्री को ठग लेते थे। जो उनसे बच निकलता, उसे उनका पिता चौराहे पर बैठकर ठगा करता था। राजकुमार उस गांव में एक कोने से घुसा और घूमते-फिरते उस चौराहे पर आ पहुंचा, जहां ठगों का पिता बैठा था। ठग

के बेटा आगे बढ़लन। कुछ दूर पर ठगपुर गांव लउकल। येह ठगपुर गांव में एगो ठग रहे। वोकरा चारगो बेटा आ दुगो बेटी रहे। बेटिया से फकड़ा जाने। जब कवनो परदेशी वो नगर में आवे तो बेटिया बता देवे कि फलना दीसा से एगो मोसाफिर आवत वा वोकरा पास एतना माल असबाव बाटे। चारु बेटवा चार ओरी चल जास आ मोसाफिर के ठग लेवे। वोकनी से जे बांचे तवज वोकर बापवा चउमुहानी पर बइठ के ठगे। त राजा के बेटा ठगपुर में न पूरवे से गइलन न पछिमे से ना दखिने से न उतरे से। ऊ कोना-कानी नगर में समा गइलन। घुमता फिरत ऊ चउमुहानी पर पहुंचलन, जहंव बुढ़वा ठग बइठल रहे। ठगवा के बेटी कह देले रहे कि ये मोसाफिर का दहिना जांघ में चारगो लाल बाटे। वो ही लाल के लालच में ठगवा इन कर बाड़ा खातिर बात कइलक आ अपना पास बइठा के इनका हाल चाल पूछे लागल। राजा के बेटा सोचल कि चल एहु नगरिया में भगवान जी एगो संघतिया भेज देलन। सांझ जब भइलन ठगवा कहलक कि रउआ बड़ी दूर से आवत बानी, चली आज हमरा घर पर ठहर। बिहान होई त अपन रासता लेब। राजा के बेटा सोचलन कि इहो ठिके कहतबा। ऊ बोकरा संगे बोकरा घरे चल अइलन। ठगवा इनका के एगो घर में ले गइल। राजा के बेटा देखलन कि एगो खटिया पर उजर धपाधूप चद्दर बिछावल बाटे। ठगवा उनका के वोही पर बइठे के कह के अपने टर गइल। राजा का बेटा का साधू के बात इआद हो गइल। ऊ खटिया के चादर उठा के झारे के चहले तो देखत बाड़े कि खटिया बिना बिनले बा आ बोकरा नीचे एगो तरहारा बाटे आ वो तरहारा में झंकलनत देखस कि किसिम किसिम के तेज बरछीआ भाला खाड़ा कइल बा। चादर के जइसे के तइसे बिछा के भुपै बैठ गइलन। ठगवा इनकर चलाकी बूझ गइल। इनका खातिर बारहों किसिम के बिजन बनववलक आ थार में परोस के खाये

की बेटी ने बतला दिया था कि इस राजपुत्र की जांघ में चार लाल हैं। ठग ने राजपुत्र को आते देख उसकी बड़ी खातिरदारी की। ठग कहने लगा, "संध्या होने वाली है। आगे दूर तक कोई गांव नहीं है। आज रात मेरे घर पर ही आराम कर लो।" राजकुमार ने उसकी बात मान ली और वह उसके साथ उसके घर जा पहुंचा। ठग उसे एक कोठरी में ले जाकर कहने लगा, "आप इस चारपाई पर आराम से लेटो।" ऐसा कह वह तुरंत बाहर आ गया। राजपुत्र ने देखा कि चारपाई पर सफेद चादर बिछी हुई है। उसपर बैठने के पहले उसे साधु के वचन की याद आ गई। उसने चादर उठाकर देखा तो चारपाई में कच्चा सूत बुना था। उसके नीचे एक गहरा गड्ढा था, जिसमें तेज धारवाले भाले और बर्छियां गड़ी थीं। राजकुमार देखते ही सब समझ गया। उसने चारपाई पर चादर उसी तरह बिछा दी और जमीन पर बैठ गया। ठग ने देखा कि मेरी यह चाल बेकार गई। उसने अब विष मिलाकर रसोई तैयार कराई। एक थाली में उत्तम व्यंजन परोसकर यात्री को दे गया। राजकुमार जब भोजन करने बैठा तो उसे साधु का तीसरा वचन याद आ गया। उसने पूजा के बहाने थाली में से थोड़ा-थोड़ा सब सामान निकाला और सड़क पर लाकर एक कुत्ते को खिलाया। खाते ही कुत्ता चित्त होकर गिर पड़ा। राजकुमार भीतर गया और थाली के भोजन को लेकर पास के एक गड्ढे में डाल दिया और थाली मांजकर रख दी। ठग की जब यह चालाकी भी बेकार गई तो उसने यात्री को एक कमरे में ले जाकर पलंग पर सोने को कहा। राजकुमार पलंग को जांचकर उसपर लेट गया। ठग ने अपनी लड़कियों को आदेश दिया कि जैसे भी हो, इस यात्री से लाल ले लो। ठग की छोटी लड़की राजकुमार के सौंदर्य पर मोहित हो गई थी। उसने राजपुत्र के पास जाकर कहा, "मैं तुम्हारी जान बचा दूंगी, यदि तुम मेरे साथ विवाह करने का वचन दो।" राजकुमार

खातिर ले आइल। वोमे वोकनी का बीख मिला देले रहतव। जब राजा के बेटा खाये बइठलन त उनका साधू के बात इआद पड़ गइल। ऊका कइलन कि पूजा परतिसठा के बहाने सबमें से लेके बहरा निकल गइलन आ सड़क पर ले जाके एगो कूकर के खिला देलन। खाते भातर त कुकरा अउंघा के गिर गइल। राजा का बेटा का मालूम हो गइल कि हमरा खायेक में एकनीका बिख मिलबले बाड़ेन स। ऊ वापिस गइलन आ सब के एगो गड़हा में फेंक देलन आ बरतन मांज के धदेलन। ठगवा के जब इहो चालाकी न लागल त ऊ इनंका के एगो घर में ले जाके पलंग उसा, के सूते के कह देलक। आ अपन बेटियन के सिखा देलक कि जइसे होखे तइसे वोकनी मोसाफिर के लाल चोरा लसऽ। छोटकी बेटिया राजा के बेटा को खूबसूरती देख के छकित हो गइल रहे। ऊ राजा के बेटा के कह देलस कि हम तोहर जान बचा देहव आ तू वचन हारऽ कि तू हमरा से बिआह करबड़नू। राजा के बेटा तो ठग के घपला में पड़ गइल रहस, ऊ वचन हार गइलन। त ठगवा के बेटिया कहलक कि तोहरा पर हमनी दुनु बहिन के रात में पहरावा। आधा रात तक हमर जेठकी बहिन पहरा पर रही, वोकरा से तू कवनो तरेह जान बचा लीह, वोकरा बाद हमर पहरा पड़ी त देखल जाई। राजा के बेटा कैय दिन के हारल-खेदाइल रहस। नीमन बिछवना मिलते उनपर आंख बन हो गइल। तले ठगवा के जेठकी बेटिया के पहरा परल। ऊ आबते देखलस कि मोसाफिर फोंक काटन बा। वाते का रहे, ऊ इनकर दुनु हाथ गोड़ रसरी से बान्ह देलस आ नंगी कटार लेके उनका छाती पर बइठ गइल।

राजा के बेटा हड़बड़ा के आंख खोललन आ सब समुझ गइलें ठगिनिया कहलस—भल चाह तू तू लाल निकाल के देद ना तो तोहर जान मार के हम लाल लेलेब। राजा के बेटा कहलन, हमरा के मारके का पइबू? जइसे बाझ मार के मिसकार पछताइल

ठगों के चंगुल में फंस गया था। अपनी जान बचाने के लिए उसने स्वीकृति दे दी। लड़की बोली, "तुमपर हम दोनों बहनों का रात का पहरा है। आधी रात तक मेरी बड़ी बहन रहेगी। तुम उससे किसी तरह अपनेको बचा लेना। बाद में जब मैं आऊंगी तो तुम्हें उद्धार की तरकीब बतला दूंगी।"

राजपुत्र कई दिन से मंजिल कर रहा था। थका-मांदा था; पलंग पर लेटते ही उसे नींद आ गई। ठग की बड़ी लड़की पहरा देने पहुंची। उसने अन्दर जाते ही देखा कि राजपुत्र सो रहा है। उसने उसके दोनों हाथ-पांव रस्सी से बांध दिये और कटार खींच-कर उसकी छाती पर चढ़ बैठी। राजकुमार ने हड़बड़ाकर आंखें खालीं तो सब माजरा उसकी समझ में आ गया। ठग की बेटी कहने लगी, "यदि तुम अपने प्राण बचाना चाहते हो तो उन लालों को निकालकर मेरे हवाले कर दो, नहीं तो मैं यह कटार तुम्हारे पेट में घुसेड़ दूंगी।"

राजपुत्र बोला, "सुन ठग की बेटी, यदि तू मुझे मार डालेगी तो तुझे बाद में उसी प्रकार पछताना पड़ेगा, जिस प्रकार चिड़ी-मार बाज को मारकर पछताया था।"

ठग की बेटी ने अचंभे के साथ पूछा, "सो कैसे ? चिड़ीमार बाज को मार कर क्यों पछताया था ?" राजपुत्र कहने लगा, "पहले तुम मेरे हाथ-पांव खोल दो, कटार को म्यान में रख लो, अच्छी तरह नीचे एक ओर बैठ जाओ; फिर मैं तुम्हें बाज का किस्सा सुनाता हूं।" ठग की बेटी का कौतूहल बढ़ा। उसने राज पुत्र के हाथ-पैर खोल दिये और उसकी छाती पर से उतरकर पास में बैठ गई। राजपुत्र कहने लगा, "सुन ठग की बेटी, किसी गांव में एक चिड़ीमार रहता था। उसने एक बाज पाल रखा था। वह उस बाज को लेकर शिकार खेलने जाया करता था। जब वह किसी चिड़िया को उड़ती देखता तो उसपर बाज छोड़ देता था। बाज उस चिड़िया को मार लाता। इस प्रकार चिड़ी-

वोईसहीं तोरो पछताय के परी । ठगनियां पूछलक कि से कैसे? राजा के बेटा कहे लगलन—एगो कवनो देश में एगो मिसकार रहे। मिसकरवा एगो बाझ पोसले रहे। बझवा के लेके ऊ जंगल में चल जाय आ बझवा के कवनो चिरई देखा के उड़ा देवे। बझवा चिरइया के पकड़ लें आवे। सांझ तक ले शिकार खेल के मिसकार घरे लवटे। कुछ दिन का बाद मिसकार ऊहवां से अपन डेरा कूच कइलक। जात-जात मिसकार एगो पांतर में पहुंचला। चलत-चलत वोकरा पियास लाग गइल। पियास के मारे वोकर परान छूटे लागल। मिसकार एगो पाकड़ का पेड़ तर बैठ गइल। वो ही घड़ी मिसकरवा के देह पर एक बून पानी गिर गइल। मिसकरवा अचंभा से ऊपर ताके लागल। तले एक बून फेर पानी गिरल। मिसकरवा देखलक कि इ पनिया बराबरे गिरता। वोकरा बुझाइल कि भगवान खुश होके वोकरा के पानी दे रहल बाड़न। ऊ तुरन्ते पत्ता के एगो दोना बनवलक आ पनिया जहंवा गिरत रहे वोहीं सीके दोनवा के धदेलक। थोड़के देर में दोना पानी से भर गइल। मिसकार खुशी का मारे दोना उठा के मुंह से लगावहि के चाहत रहे कि बझवा उड़ल आ अपना डयना से मिसकार का हाथ में दोना गिरा देलक। मिसकरवा का बाड़ा खिस भइल। मिसकार तीन बेर दोना में पानी चुअवलक आ तीनों बेर बाझ दोना गिरा देलक। तिसरका बेरी मिसकार खिसे आन्हर हो गइल आ बझवा के घेंट ममोर के मुआ देलक। फेनु दोना में पानी चुआवे में देर होखी येह बोजह से ऊ सोचलक कि गाछे पर चढ़के पानी पीली। ई सोचके जब ऊ गाछ पर चढ़त त देखत वा कि एगो घोंघड़ में बेदहे अजगर मरके सड़ गइलवा। आ वोकरे लार ठोपे-ठोप चुअत वा। अब त मिसकार का बड़ा अपसोस भइल आ ऊ मुरछाय के गिर गइल। ऐतना कहते-कहते आधा रात बीत गइल आ ठगनी के पलहा हो गइल। ऊ आबते पूछलक-"ए, मक्षिन, लाल हाथ लागल कि ना?"

मार अपनी गुजर चलाता था। एक दिन वह शिकार की टोह में फिरता-फिरता ऐसी जगह पहुंच गया, जहां दूर-दूर तक पानी नहीं था। चलते-चलते उसे प्यास लग आई। पानी खोजा, पर कहीं न मिला। आखिर प्यास से व्याकुल होकर पाकर के पेड़ की छाया में जा बैठा। उसी समय उसने देखा कि पेड़ से एक-एक बूंद पानी टपक रहा है। उसने पत्तों का एक दोना बनाकर उस जगह पर रख दिया, जहां बूंदे गिर रही थीं। कुछ समय में दोना भर गया। उस दोने को उठाकर उसने मुंह से लगाया था कि बाज झपटा और उसने अपना डैना मारकर दोना गिरा दिया। पानी गिरने से चिड़ीमार क्रोधित होकर बाज की ओर देखने लगा। उसने वह दोना फिर उसी जगह रख दिया। उसने तीन बार पानी इकट्ठा किया, पर पीते समय बाज ने तीनों बार डैना मारकर गिरा दिया। चिड़ीमार का क्रोध भड़क उठा। उसने खंजर निकालकर बाज के दो टुकड़े कर दिये। बाज मर गया। उसका धीरज टूट गया। अब फिर कबतक पानी भरेगा? वह झट पेड़ पर चढ़ गया। उसने सोचा कि पेड़ पर चढ़कर जहां से पानी आता है, वहीं जाकर पानी पी आना चाहिए। ऊपर जाकर देखता क्या है कि एक खोटर में एक बड़ा अजगर मरा पड़ा है। उसकी देह-सड़-गल गई है। उसीमें से एक-एक बूंद पानी नीचे टपक रहा है। यह दृश्य देखकर बाज के मारने का उसे बड़ा खेद हुआ। वह सिर धुनकर पछताने लगा और जीवन भर उस दुःख को न भूला। इसी तरह यदि तू मुझे मारेगी तो जीवन भर पछतायगी।"

कथा समाप्त होते-होते रात के बारह बज गये और ठग की छोटी लड़की अपने पहरे पर आ पहुंची। उसने आते ही पूछा, "क्यों जीजी, लाल हाथ लगे या नहीं? ठग की बड़ी लड़की बोली, "नहीं बहन, इसने तो मुझे बातों में फंसाकर सारा समय निकाल दिया। अब तू इसकी बातों में न आना और जिस तरह

जेठकी जवाब देलस कि "ना रे, दहिजरा बतगूने में बेरा गंवा देलक। तू एकरा बतगुजन में मन परिहे आ जइसे होखे लाल निकाल लीहे।" ऐतना कहके जेठकी त चल गइलि। छोटकी ठगनिया राजा का बेटा का पलंग पर बइठ गइल। कहे लागल— "देख राजा, तोहार जान बचा देनी, अब तू सत बनकर कि हमरा से विआह करके आपन रानी बनइबऽ।" राजा के बेटा मुंडी हिला देलन। ठगनिया कहलस कि घोड़सार में दूगो सांढ़िन बान्हलवा। एगो खूब मोटाएल बा, ऊ दिन में साठ कोस चलेला आ एगो के हाड़ निकललबा, ऊ सै कोस चलेला। तू जाके सै कोसवाली सांढ़िन ले आव तले हम तैयार होरवत बानी। राजा के बेटा घोड़सार को चललन आ ठगिनिया अमरखाना से हीरा जबाहिर निकाले लागल। राजा के बेटा घोड़सार में गइलन त उनका मरकटाह सांढ़िन न जंजल। ऊ मोंटकरिये के खोल के अइलन। ठगिनिया देखलस कि साठे कोसवाली सांढ़िन राजा ले आइल बाड़न! बोकरा मने मन त दुख भहल फेर साचलस कि जे राम करेलन सेही होखेला। आ ऊ हीरा-जबाहिरात के मोटरी लेके सांढ़िन पर बइठ गइल आ राजा का बेटा के बइठा के सांढ़िन हांक देलक।

होत बिहान सबै ठगवा ठगिनिया वोह घर में आवतबा जाहां राजा के बेटा सूतल रहरू। त देखत बा कि ना रजवेवा ना बोकर बहिनिये बा। ठगवा सोचलन स कि हो ना होय रजवा के बेटवा हमरा बहिनिया के कमजोर पाके बोकरो के लेलेलक हवे आ अमरखाना से हीरा-जबाहिरात भी चोरा के गइल हवे। एगो दउड़ल घोड़सार में गइल आ देखलक कि सै कोसवाली सांढ़िन बा अब का रहे, ऊ फान के वोपर चढ़ गइल आ सांढ़िन के हांक देलक।

राजा के बेटा आ ठगिनिया साठ कोस पर जाके एगो गाछ तर बइठल रहे तले ठगवा के सांढ़िन पर ठगिनिया के नजर पड़ल। ऊ राजा के बेटा के सिखा के गाछ पर चढ़ जायके कह

हो लाल लेकर ही रहना।" इतना कहकर बड़ी लड़की चली गई। छोटी लड़की राजपुत्र के पास जाकर कहने लगी, "देखो राजकुमार, मैं तुम्हारी जान बचाये देती हूं। तुम फिर प्रतिज्ञा करो कि तुम मेरे साथ विवाह करोगे और मुझे अपनी रानी बनाओगे?" राजपुत्र ने स्वीकृति-सूचक सिर हिला दिया। ठग की पुत्री बोली, "ठीक है। अब तुम एक काम करो। घुड़सार में दो ऊंटनी बंधी हैं -- एक मोटी-ताजी और दूसरी दुबली-पतली। मोटी-ताजी ऊंटनी दिन में साठ कोस चलती है और दुबली-पतली सौ कोस। तुम जाकर उस दुबली-पतली ऊंटनी को खोल लाओ, तबतक मैं यहां धन-डेरा बांधकर इकट्ठा करती हूं।" राजपुत्र घुड़सार में पहुंचा। उसे दुबली-पतली ऊंटनी न जंची। वह मोटी-ताजी ऊंटनी को खोलकर ले आया। जब ठग की बेटी ने देखा कि राजकुमार साठ कोसवाली ऊंटनी ले आया है तो उसे दुःख हुआ। फिर सोचा कि जो ईश्वर करता है, वही होता है। उसने धन-दौलत की गठरी ऊंटनी पर रखवाई, फिर दोनों उस पर सवार हो गये। ऊंटनी आगे बढ़ चली।

सवेरा होने पर ठग उस कमरे में पहुंचा, जहां राजपुत्र सोया था। वहां पहुंचकर वह अचंभे में रह गया। वहां न राजपुत्र था, न उसकी छोटी बहन। वह समझा कि राजकुमार मेरी बहन को बलात् पकड़कर अपने साथ भगा ले गया है। उसने जाकर घुड़सार में देखा तो सौ कोस चलनेवाली ऊंटनी वहां थी। वह कूदकर उसपर चढ़ गया और उनका पीछा किया।

राजपुत्र साठ कोस जाकर एक पेड़ के नीचे ठहर गया। इतने में ठग की पुत्री की निगाह भाई की ऊंटनी पर पड़ी, जो उसी ओर आ रही थी। उसने राजपुत्र से कहा, "तुम फौरन पेड़ पर चढ़ जाओ, देखो, वह मेरा भाई ऊंटनी पर सवार होकर हमें पकड़ने आ रहा है।" राजपुत्र पेड़ पर चढ़ गया और ठग की पुत्री आगे बढ़कर अपने भाई से मिली। कहने लगी, "देखो भैया, यह अभागा

देलस आ अपने ठगवा के अगाड़िये जाके कहे लागल—देख भइया, दहिजरा के बेटा हमरा के बान्ह के चोर चले आवत रहलख। तोहरा के देखते गाछी पर चढ़ गइलबा। ठगवा सोचलक कि बहिनिया ठीक कहत बा। ऊ झट से सांढ़िन पर से उतरि के गाछ पर चढ़ गइल। ठगिनिया तले साठ कोस चलेवाली सांढ़िन के एगो गोड़वे खांड़ से काट देलस आ अपने से कोसवाली पर चढ़ गइल। राजा के बेटा यह डार से वोह डार पर भागत रहस आ ठगवा उनकरा के चहेटत रहे। तले ठगिनिया कह-लस—देखरे भैया, राजा के बेटा अब दोल्हे के चाहत बा। येतना बात सुनते राजा के बेटा दोल्ह सांढ़िन का पीठ पर कूद गइलन आ ठगिनिया सांढ़िन के हाक देलक। ठगराम जब गाछी परसे उतर के साठ कोसवाली सांढ़िन का लगे आवताड़न त देखत बाड़न कि ऊ त लंगड़ हो गइलबा। तले सांढ़िन त काहां से काहां चल गइल, ठगराम अछता पछता के रह गइलने।

कुछ दूर जात जात राजा के बेटा सोचे लगलन कि ई लड़की के कवनो बिसवास नइखे, जब ई अपना सहोदर भाई के न भइल आ तनका परेम खातिर वोकरा के धोखा दे देलकत हमार कवन बिसात बा। हो सकेला कि हमरी से कवनो खबसूरत जवान भेंट हो जाय त हमरो जानमार के ई वोकरा संगे चल जाई। आखिर त छोटकेनू। येकर सनतानो होई त बोकरो बुधिया येकुरे जइसन हाई। ई सब बात सोच समुझि के राजा के बेटा खांड़ निकलन आ पछाड़िये से एके हाथ में ठगिन के दू टुकड़ा कके सांढ़िन पर से ढाह देलन। जात जात राजा के बेटा अपने मकान पर पहुंचलन। उनकर बाप-मतारी केतन्स दिन पर अपना बेटा के देख के निहाल हो गइल लोग। राजा तले बूढ़ा हो गइल रहस। अब का रहै ऊ अपना बेटा के राजा बना देलन आ बोजीर के बेटा बोजीर हो गइलन। बुढ़ऊ राजा आ बोजीर जंगल में तपेस्या करे गइल लोग। राजा के बेटा राज-काज सम्हारे लगलन।

राजपुत्र मुझे बांधकर ले आया है। तुम्हें देखकर पेड़ पर चढ़ गया है।" ठग ने अपनी बहन की बातों पर विश्वास किया। वह ऊंटनी पर से उतरकर पेड़ पर चढ़ गया।

ठग की पुत्री ने इधर साठ कोस चलनेवाली ऊंटनी का एक पैर कटार मारकर घायल कर दिया और वह सौ कोस चलनेवाली ऊंटनी पर सवार हो गई। राजपुत्र इस डाल से उस डाल पर भागता और ठग उसका पीछा कर रहा था। इसी समय ठग की बेटी नीचे से बोली, "भैया-भैया, देखो राजपुत्र डाल से कूदना चाहता है।" इतना सुनते ही राजपुत्र ठग की पुत्री की ऊंटनी पर कूद पड़ा। दोनों सवार होकर चल दिये। बेचारा ठग पेड़ से उतरकर जब नीचे आया तो देखता क्या है कि उसकी ऊंटनी तो राजपुत्र तथा उसकी बहन ले गई है और दूसरी ऊंटनी पैर से लंगड़ी हो गई है। पीछा करने का कोई साधन न रहने से वह मन मारकर रह गया।

थोड़ी दूर आगे जाने के बाद राजपुत्र ने सोचा कि इस ठगपुत्री का क्या भरोसा? जब यह अपने सगे भाई को धोखा दे सकती है, तब मेरी क्या बिसात! यदि मुझसे अधिक सुन्दर कोई दूसरा जवान मिल जायगा तो वह मुझे मारकर उसके पास चली जायगी। आखिर है तो छोटी जाति! ऐसा सोच राजपुत्र ने पीछे से तलवार निकाली और ठगपुत्री का सिर काटकर नीचे फेंक दिया। उसके धड़ को भी नीचे गिरा दिया। इसके बाद राजपुत्र चलते-चलते घर पहुंचा। उसके मां-बाप को बड़ा आनंद हुआ। राजा बूढ़े हो गये थे। राजा ने पुत्र का राजतिलक कर दिया। वजीर का पुत्र उसका वजीर बन गया। बूढ़े राजा और मंत्री तपस्या करने के लिए जंगल में चले गये। नये राजा ने राज्य की व्यवस्था संभाल ली। □

बत्तू
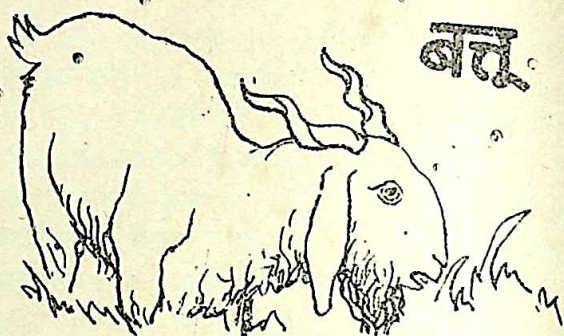
मैथिली

एक गोट बकरी छल। ओकरा कतेक कबुला पाती कयला क बाद एकटा बेटा भेलै। जखन ओ छौ मासक भेलै, तखन आसिन क दशमी पूजा लगिचा गेलै। छागर क गहाइक सब आवय लागल। छागर वाला बेचैलय उद्यत भय गेला। दाम दीगर सब ठीक भय गेलै। मुदा गहाइक के संग में सबटा दाम नहिं रहैक। तें काल्हि भिनसुरका बात कहि गहाइक चल गेल।

राति भेनें बकरी अपना बेटा (छागर) कें कहलक जे बाउ, तूं कते देवें सेबै एकटा बेटा भेलें। ओ तोरा कनिर्येटा सं पोसलियौ। मुदा काल्हि मालिक तोरा दशमी पूजा लै बेचि लेतौ। तें तों रातिये राति गाम घर छाड़ि कय जंगल चल जो। जाहि ठाम मनुष्य सं भेंट नहिं होक। जं बचमें तं हमर नांव रहत।

छागर राति में गाम घर छाड़ि पड़ागेल। कोनो भारी बोन में चल गेल। ओकरा बोन में दू तीन वर्ष बीत गेल। ताबत ओ बड़काटा भय गेल। बड़ पैघ मोंट सोंट देह, नमहर नमहर दाढ़ी आ सिंघ। आंव ओ छागर[1] सें बत्तु[2] भय गेल छल। एक दिन ओ संयोग सें दोसर जंगल गेल। ओकरा ओहि ठाम एक गोट बाघ सें भेंट भय गेलै। बत्तू बाघ के देखि डेरा गेल आ बाघो

---

१. बकरी का बच्चा, २. बिलावर बकरा।

बकरा

हिंदी रूपान्तर

एक बकरी थी। कितनी ही मन्नतों के बाद उसके एक बच्चा पैदा हुआ। जब वह छः महीने का हुआ, उस समय कुंआर में दुर्गा-पूजन का समय पास आ गया था। बकरे के ग्राहक आने लगे। बकरेवाला बेचने को तैयार हो गया। मूल्य तय हो गया, लेकिन ग्राहक के पास देने को पूरा दाम न थे। इसलिए वह दूसरे दिन सुबह दाम देकर बकरा ले जाने की बात पक्की कर गया।

रात होने पर बकरी अपने बच्चे से कहने लगी, "बेटा तू मेरी इकलौती संतान है। तुझे बचपन से लेकर अबतक पाला-पोसा है। लेकिन कल तुझे दुर्गा-पूजा के लिए मालिक बेच देगा। इसलिए तू आज ही रात को गांव छोड़कर किसी ऐसे जंगल को भाग जा, जहां न आदमी मिले न आदम जात, नहीं तो तू मारा जायगा। यदि तू बचा रहेगा तो मेरा नाम तो रहेगा।"

बकरी का बच्चा रात को ही गांव छोड़कर भाग गया। वह एक बियावान जंगल में जा पहुंचा। वहां उसे तीन साल बीत गये। अब वह बच्चे से बढ़कर एक बड़ा मोटा-ताजा बकरा हो गया। बड़ी-बड़ी दाढ़ी और सींग निकल आये।

एक दिन वह संयोग से किसी दूसरे जंगल में गया। वहां एक बाघ से उसकी भेंट हो गई। बकरा बाघ को देखकर डर गया।

बत्तू कं देखि डरा गेल। कारण, बाघ एहेन जानवर पहिलें नहि देखनें छल। दुनू एक दोसर के देखैन्ह डरायल डरायल ठाढ़ छल। थोड़ेक कालक बाद बाघ कहलकै—

नामी नामी दाढ़ी-मोंछ भकुला,
कहू कतै सें अवैछी, नें तं देव ठकुरा[1]।

तखन बत्तू कहलकै—

अरचुन्नी खेलौं गरचुन्नी[2] खेलौं, सिंह खैलौं सात।
आ जहिया दस बाघ नें होऐ, तहिया परौं ठकदय उपास।

ई बात सुनितें बाघ बेचारा भागि गेल। तावत रास्ता में नढ़िया[3] पंडित ओकरा भेटलै। ओ बाघ के पुछलकै जे सरकार कियै अहां अपस्यांत पड़ायल जाइछी? बाघ कहलकै जे पंडितजी, की कहव? जंगल में एकटा भारी जानवर आबि गेल आछि। ओकरा एक एक हाथ क दाढ़ी ओ सिंघ छलै। ओ कहैत आछि जे सातटा सिंह ओ दसटा बाघ हमर एक छिनुक भोजन आछि। तकरै डरें पड़ायल जाइछी। नहितं हमरो खा लेत। नढ़िया हंसै लागल आ कहलकै—सरकार, अपनें तं वलो डेराइछी। ओ तं बकरी का वेटा बत्तू थोक। ओकरा तह अहां एकहि बेरि में मारि देबै। चलू, आइ बढ़ियां भोजन परि लागि गेल। पहिनें तं पंडितक बातपर खातिर नहिं भेलै, किन्तु बहुत कहला सुनला क बाद बाघ नढ़िया क टांग में डोरी बान्हि कय अपना टांग में बान्हि लेलक आ चलल।

जखन बत्तू एहि दूनू गोटाकें अवैन देखलकै तं सोचै लागल जे पंडित हमर परिचय कहि देलकै अछि। एही द्वारै दूनू गोटे आबै अछि। आब जान नहि बांचत। तैयो अपने भरि युक्ति रची। ई सोचि कहलकै पंडित सं जे दोस्त, हम अहां कें दू गोट बाघ आनय कहलौं, अहां एकेटा अनलौं। एते बात सुनितें बाघ,

१ धान कूटने का औजार २ एक प्रकार की मछली का नाम ३ सियार।

बाघ भी बकरे को देखकर सहम गया। कारण, बाघ ने ऐसा जानवर पहले नहीं देखा था। दोनों एक-दूसरे से डरे हुए खड़े थे। कुछ देर बाद बाघ बोला :

लम्बी-लम्बी दाढ़ी-मूंछ मटमैला,
कहो कहां से आते हो, नहीं तो मारूं एक चांटा।

बकरा बोला :

अरचुन्नी खाई गर चुन्नी खाई, सिंह खाये सात।
और जिस दिन दस बाघ न हों, उस दिन करता हूं उपास।।

बकरे की बात सुनते ही बाघ बेचारा डरकर भाग गया। आगे रास्ते में उसे एक सियार मिला। उसने बाघ से पूछा, "वनराज, आप आज घबराये हुए से कहां भागे जा रहे हैं?" बाघ ने खड़े होकर दम लेते हुए कहा, "पंडितजी, कुछ न पूछो, आज इस जंगल में एक भारी जानवर आ गया है। उसके एक-एक हाथ की दाढ़ी और सींग हैं। कहता था कि सात सिंह और दस बाघ मेरा एक दिन का भोजन है। उसीके डर से भागा जा रहा हूं। अगर नहीं भागूं तो वह मुझे खा जायगा।" सियार हंसने लगा। बोला, "आप धोखा खा गये हैं, इसीलिए इस तरह डर रहे हैं। वह तो बकरी का बच्चा है! उसे तो आप एक चांटे में ही मार सकते हैं। चलिए, आज बढ़िया भोजन हाथ लगेगा। "बाघ को पहले तो सियार की बात पर भरोसा न हुआ, परन्तु बहुत-कुछ कहने-सुनने पर राजी हो गया। उसने रस्सी से सियार का पांव अपने पांव में बांध लिया। दोनों चले।

बकरे ने जब इन दोनों को आते देखा तो वह सोचने लगा, शायद सियार ने मेरी पहचान करा दी है। इसीलिए दोनों इस ओर आ रहे हैं। अब प्राण नहीं बचेंगे। तो भी कोई-न-कोई

तरकीब भिड़ानी चाहिए। ऐसा सोचकर बकरे ने सियार से कहा, "दोस्त, मैंने तो तुमसे दो बाघ लाने के लिए कहा था, तुम

बुझलक जे नढ़िया एकरै द्वारे हमरा परतारि कय अनलक अछि, ई सोचि बघवा पंडित कें घिसिऔनैं तिसिऔनैं प्राण लय कय पड़ायल। यावत् नढ़िया हां हां कहैक, तावत् बघवा दश बीस फान मारलक, जाहि में नढ़िया मरि गेल आ बाघ ओ जंगल छाड़ि दोसर जंगल पड़ा गेल। तखन सें बत्तू ओहि जंगल में अनेरे चरै लागल।

एक ही लेकर आ गये।" इतनी बात सुनते ही बाघ समझा कि सियार मुझे चकमा देकर ले आया है। वह भाग खड़ा हुआ। जबतक सियार कुछ कहे तबतक बाघ तो दस-बीस छलांग मार चुका था। घसिटते-घसिटते सियार के प्राण पखेरू उड़ गये। बाघ उस जंगल को छोड़कर दूसरे जंगल में चला गया। तबसे बकरा उस जंगल में मजे से चरने और विचरने लगा। □
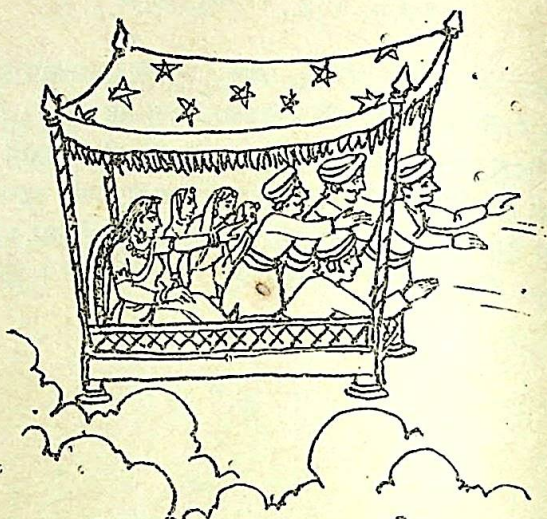
अथ बात सूरां अर सतवादीयां री

राजस्थानी

एक राजा कही देस रौ। तेरौ नाम वीरभाण। सु और कुंवर खरच करतौ देखै क्यु नहीं। रुपीयो कांकरौ बराबर कर खरचै। तद इयै रै तीन्ह जणां मेल्हू-एक ब्राह्मण, एक लोहार, एंक सुथार। इहां सूं कुंवर रै बडो प्यार। तद राजपूत कामदारे भेलै हुए नै कुंवर नुं कही राज थे खरच निर्भय थका कहौ छौ। हर कहीं रजपूत सूं प्यार नहीं। सु राज करण कहो छौ क नहीं। हां इतही कही तद कुंवर कही ब्रावण खरचणारी अर राज श्रै तो जैनै श्री परमेस्वरजी दीयै तैरा छै। ए तीन्हों सों मेल छै। इसु मैं म्हारी देहोछै। वेला बुही रा सीरी छै। जितरै म्हाराज री छै इतरै थे [illegible] म्हारा छौ। अर साथै हुसी कुंवर इतरी कही तद लोके कहीं थांरो ऐसो

शूरवीर और सत्यवादियों की कहानी
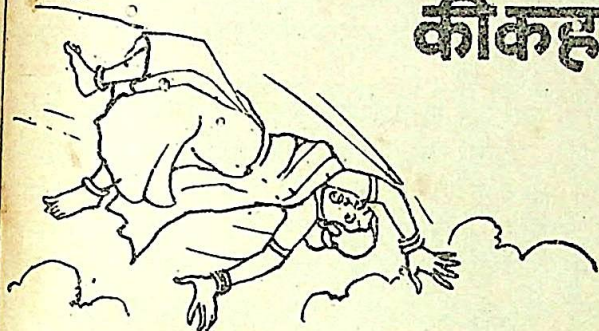
हिंदी रूपान्तर

किसी देश में एक राजा था। उसका नाम था वीरभान। उसका पुत्र खर्च करने में कुछ भी नहीं देखता था। पानी की तरह रुपये बहाता था। उसके तीन साथी थे—एक ब्राह्मण, एक लुहार, एक बढ़ई। राजकुमार का इनसे बड़ा प्रेम था। एक दिन राजपूत कामदारों ने इकट्ठे होकर राजकुमार से कहा कि हे कुमार, तुम अनाप-शनाप खर्च कर रहे हो और किसी राजपूत से तुम्हारा प्रेम नहीं। राज्य का काम करोगे कि नहीं? कुंवर ने कहा, "खाना, खर्चना और राज्य ये तो जिसे परमेश्वर देता है उसके हैं। बाकी इन तीनों से प्रेम है, इसलिए ये मेरे ही शरीर हैं, बुराई-भलाई के साथी हैं। जितने दिन परमात्मा की कृपा है, उतने दिन सब तुम मेरे हो और जब भगवान की दया न रहेगी, तब ये तीनों ही मेरे साथी होंगे।" यह सुनकर लोगों ने कहा, "तुम्हारा धैर्य ऐसा ही दीखता है, परमेश्वर देगा तभी राज्य लोगे?" राजकुमार ने उत्तर दिया कि हां, मैं तभी लूंगा, जब परमेश्वर देगा और जो मनुष्य धैर्यवान हैं उनके कार्य भगवान करता है।

हीज धीरज दीसै छै। परमेसर देसी तदहीज राज लेसो। तद कुंवर कही म्हे तदहीज लेसां तद परमेश्वर देसी अर जिके मनुषा धीरजबंत है तिकारा कारज परमेश्वरजी करसी। इतरी कहियै और दूहौ कहै।

दूहौ ॥ सूरां अर सतवादियां धीरां एकमनाह। दई करेसी कामडा अरंड फलेसी ताह ॥१॥ और दूहौ कुंवर कहीयौ तौ पाछै लोग सरब कुंवर सुं लाग करै। तद लोकां तौ राजा री छोटी राणी नुं मरवाय नै कुंवर नुं देसौटौ देरायौ। ब्राह्मण लोहार, सुथार ये तीन्हों साथ छै। तहरां अै उतर देश नुं चालीया जावै। तठै कहीं समुंद्र रै तीर गया। उठै एक रोही हंती तठै रोही मांहे एक सुथार घर वासीदार रहै। सु उडणखटोलणी रो हुनर जाणै। उठै बैठौ घडै। तठै अै च्यार आय निसरीया छै इहां च्यारां ही नुं च्यार रौ सीधो उतरै तद ब्राह्मण रसोई करै अै च्यारे जींमै ईयै भांत माता मता अठै सुथार रे आया। तद कुंवर सुथार नूं पुछीयौ। हू कह्यौं रे तूं अठै क्यों एकलौ रहै छै। सहर तौ कोई नहीं। जद सुथार कही जी अठै वस्तु बणाऊं छुं तैरै आस्तै रहू छुं। तद कुंवर कही रे एक माणस म्हारौ तै पासै मजूर राखै तौ राखां। तद इयै कही राखीस।

जाहरां सुथार नुं उठै राख हर कही उडण खटौलणी रो हुनर सीख अर आये। सुथार नुं उठै राखिनै आघा चालीया तीने अर जावता एकै रोही माहे गया। देखै तौ एक लोहार रहै छै उवै राही मांहे। ताहरां उवै लोहार रै जाय निसरीया। तद लोहार नुं पण पूछीयौ। कही रे तै अठै एकलै घर मांडीयौ छै। सू कासूं करै छै। तद लोहार कहीं राज हूं अठै बावड़ो रै पाणी सूं पाण देनै तरवार करूं छुं। सु तिका तरवार लाख रूपीया लाख लहै छै। जदै कुंवर लोहार नुं कही रे लोहार एक म्हारो चाकर तो पासै राखे तौ म्हे राखां। तद इयै कही जी राखीस। ताहरां कुंवर

शूरबीर सत्यव्रती धीरों का मत एक।
दई करेगा काम फल एरंड देगा नेक॥

इसके बाद सब लोग राजकुमार से ईर्ष्या करने लगे। उन्होंने राजा की छोटी रानी को बहकाकर कहा कि वीरभान को देश-निकाला दे दो तो राज तुम्हारा हो जाय। रानी ने राजा को बहकाकर राजकुमार को वनवास दिलवा दिया। ब्राह्मण, लुहार, और बढ़ई, ये तीनों साथ थे। अपने राज्य से निकलकर उत्तर देश की तरफ चले। चलते-चलते समुद्र के किनारे पहुंचे। उधर एक बन था। उसमें एक बढ़ई घर बनाकर रह रहा था। वह उड़न-खटोले की विद्या जानता था और वहां बैठा-बैठा खटोले बनाया करता था। ये चारों उधर आ निकले। जब चारों के ही खाने का प्रबंध होता तभी ब्राह्मण रसोई करता और चारों भोजन करते। इस प्रकार घूमते-फिरते बढ़ई के पास आये। राजकुमार ने बढ़ई से पूछा, "तुम यहां अकेले क्यों रहते हो, पास में कोई शहर तो है नहीं ?" बढ़ई ने उत्तर दिया, "अजी, मैं यहांपर एक चीज बनाने के लिए रहता हूं। राजकुमार ने कहा, "हमारा एक आदमी तुम मजूर बनाकर रख लो तो रख जाय।" बढ़ई ने कहा, "रख लूंगा।"

कुमार ने अपने बढ़ई साथी को वहीं छोड़ा और उससे कहा कि उड़न-खटोले का हुनर सीखकर आना। उसे छोड़कर तीनों आगे चले। चलते-चलते एक जंगल में जा निकले। वहां देखते क्या हैं कि एक लुहार रहता है। वे उस लुहार के पास गये और उससे पूछा, "कह रे, तू, यहां घर बनाकर अकेला क्यों रह रहा है ?" लुहार ने उत्तर दिया, "मैं यहां बावड़ी के पानी से तलवार पर धार चढ़ाता हूं, जिसके लाख-लाख रुपये मिलते हैं।" तब राजपुत्र ने कहा, "लुहार, तू अपने पास हमारा एक आदमी रख ले।" वह तैयार हो गया। कुमार ने लुहार साथी से कहा, "तू यहां रह और तलवार का हुनर सीखकर आ।

लोहार नुं कही तूं अठै रहि अर तरवार कौ हुनर सीख हर आये। लोहार नुं उठे राख हर अै आधा चालीयां। तिके चालीया चालीया एकै रोही मांहे आया। उठै एक ब्राह्मण रो घर। उठै ब्राह्मण सघरो ही रहै। तद कुंवर ब्राह्मण रै घरे गयौ। उठे जाय ने ब्राह्मण नूं पूछी। कही देवता तूं अठै क्युं रहै छै रोही मांहे। तद ब्राह्मण कही अठै हूं एक विद्या सीखूं छूं। विद्या रौ जाप मृतंजय रौ जाप छै। जु जपै सु तीन वरसो मूवौं जीवै। तद कुंवर कही आपरै ब्राह्मण नुं कही अठै रहि और मंत्र सीख अर आय। तद ब्राह्मण कही जी हूं थानै कठै मिलीस। तद कुंवर कही सूतहार उडण खटोलणी ले आसी तैरै साथ आयजो। तद ब्राह्मण नुं उठै राख हर आप घोडै चढ़ि एकलो आघो चालीयौ। तिको किही पहाड़ मांहे गयौ। एकै पहाड री गुफा दीठी। तद कुंवर मांहे बडीयौ। सु आघो जावै तौ कांसु चानणौ दीसै। तद वलै आघो गयौ, पद आगै देखै तौ कांसु एक वडो सहर छै पण राखस सूनो कर राखीयौ छै। बाजार री हाटां मतां सु भरी पडी छै। आगै देखै तौ कासुं घर पण सूना पडीया छै। मताह घणी ही पण मनखरी जात नहीं। तद और घोडे चढीयौ। आघै गयौ आगै देखै तौ कासुं कोट छै महलायत छै। जठै एक कन्या कही राजा री छे। तिका राखस ले आयौ छै। सु पालणै मैं बैठी हींडै छै। नाम फूलमती छै।

कुंवर नुं देख बहुत राजी हुई। तद कुंवर फूलमती मानों देख आघो महल मांहे आयौ। देखै तौ कासु बहुत सुन्दर। कुंवर रौ मन इयैमो लागो अर फूलमती कुंवर नुं बोहत राजी हुई। तद फूलमती बोली रे मानवी तूं अठै कांसू आयौ। अठै राखस आयौ तौ तनें मारसी तद कुंवर कही तैइ गत सु भैई गत। तद फूलमती कही गत कांसू करै तो नुं राखस मारसी। तद कुंवर कही राखस मारसी तौ एक बार तौ तूं मोनूं अंगीकार कर। तद फूलमती कही। हूं कूंवारी छु। तद कुंवर फूलमती

लुहार को छोड़ ते आगे बढ़े। एक जंगल में एक ब्राह्मण का घर था। वहां वह अकेला ही रहता था। कुमार ने ब्राह्मण से पूछा, "देवता, तू यहां जंगल में क्यों रहता है?" ब्राह्मण ने कहा, "यहां मैं एक विद्या सीख रहा हूं। विद्या का जप मृत्युंजय का जप है। जो जप ले तो तीन वर्ष का मुर्दा जी जाय।" राजकुमार ने ब्राह्मण साथी से कहा, "तुम यहां रहो और मंत्र सीखकर आओ।" ब्राह्मण ने कहा, "मैं आपसे कहां मिलूं?" कुमार ने कहा, "बढ़ई उड़न-खटोला लेकर आयगा, उसके साथ आ जाना।" तब ब्राह्मण को वहां रखकर आप घोड़े पर चढ़कर कुमार अकेला आगे बढ़ा। वह किसी पहाड़ पर पहुंचा। वहां एक गुफा दिखलाई दी। कुमार उस गुफा में घुसा। जब आगे गया तो उसे कुछ रोशनी दिखाई दी। और आगे बढ़ा तो देखता क्या है कि एक बड़ा भारी शहर है, किन्तु राक्षस ने उसे सुना बना रखा है। बाजार की दुकानें माल से भरी पड़ी हैं। और आगे क्या देखता है कि घर सूने पड़े हैं। माल तो खूब है, पर मनुष्य का नाम नहीं। घोड़े पर चढ़कर वह आगे बढ़ा। आगे देखता क्या है कि कोट हैं, महल हैं। वहां किसी राजा की एक कन्या है। उसे राक्षस ले आया है। वह झूले में बैठी झूल रही है। नाम था उसका फूलमती।

राजपुत्र को देखते ही वह बहुत खुश हुई। कुमार फूलमती को देखकर आगे आया। देखता क्या है कि कुमारी बहुत ही सुन्दर है। कुमार उसपर मोहित हो गया और कुमार को देखकर फूलमती बहुत खुश हुई। फूलमती कहने लगी, "हे राजकुमार, तुम यहां कैसे आये? यदि राक्षस यहां आ गया तो तुम्हें मार डालेगा।" कुमार ने कहा, "अब मैं तुम्हारी ही शरण हूं।" तब फूलमती ने कहा, "राक्षस मारेगा तो देखा जायगा, एक बार तुम मुझे स्वीकार कर लो। मैं कुमारी हूं।" राजकुमार ने

फूलमती का हाथ पकड़कर भांवर लेकर उससे विवाह कर लिया

नु हाथ पकड़कर फेरा ले नै परणीज अर उठै भोगवी। तैसीं अं राखस री डर री मारी संकोचीज अर रही हती तद कुंवर री हाथ लागौ तौसु फूल गई। तद इय कुंवर नु कही इवतू बल बांध अर राखस नु मार नहीं तौ आपां बिहनु मारशी। ताहरां कुंवर खडग लै खूणै छिप ऊभौ छै। अर राखस आयौ तद आवतैज फूलमती नु फूली दीठी। तद राखस कही फूलमती तौ आज जोबन सो फूलीया छै। तद फूलमती कही हवै राज फूलियां छां। इतरै राखस बारणै मांहै नीचो सिर कर वडतौ हतो अर कुंवरे खडग बाह्यौ तैसु राखस मारीयौ। इवै ए राखस मार आपरौ सहर कर खूबी करै छै। तद सहर मांहे सींह आयौ। ताहरां फूलमती कही —राजा सिंह आयो छै। तद उठै कुंवर सिंह नु मारीयौ। तद बीजै दिन हाथियां रौ डार आयौ। तद वीरभाण जिकौ आगै वडौ कुंजर हतौ तिकौ मारीयौ। तद और हाथी नाठ गया। ताहरां कुंवर हाथी रौ माथौ चीर अर गज मोती काढ फूलमती रै सोंहडै आगै ढिग कीयौ। तेसो इयै एक साडी घाघरी मोतिया रौ कीयौ एडी साहिबी करै। नदीसूं रांणी कल खांणी कलस पाणी रौ भर ले आवै अर रसोई करै। तद कुंवर पांच पातल परिसाय नै दोय पातल तो आपअर राणी जीमै अर तीन्ह पातल छै सु पंखी जनावरां नै घातै। जाहरां कुंवर नू राणी पुछीयौ कही राज ए पातल तीन ते परिसायर थे।

जनावरा नै करै नांव घातौ छो सु करो। ताहरां कुंवर करो वैराना साच कहीजै नहीं। ताहरां रांणी कही तौ हूं थांहरी अरध सरीरी किसी विध छूं अर मैं थारै पगां राखन ने मरायौ अर थे मना सांच कहौ, नहीं तो थांहरौ प्यार किसौ। ताहरां कुंवर कही म्हारा तीन्ह चाकर छै। हूं बीच राख आयौ छूं। तेना ए पातलां परसूं छुं। कुलांणी राजा रौ बेटो छुं। इयै भांति

और उसके साथ आनंद मनाया। राक्षस के डर से रहनेवाली फूलमती अब कुमार के हाथ लगने से खिल गई। उसने राजकुमार से कहा, "अब तुम तैयार हो जाओ और राक्षस को मार डालो, नहीं तो वह हम दोनों को मार डालेगा।" कुमार खड्ग लेकर कोने में छिपकर खड़ा हो गया। राक्षस आया तो आते ही उसने फूलमती को खिली हुई देखा। राक्षस ने कहा, "फूलमती तो आज यौवन से फूली हुई है।"

फूलमती ने कहा, "हां, फूली हुई हूं।" इतने में राक्षस दरवाजे में सिर नीचा करके घुसने लगा। राजकुमार ने खड्ग का वार किया। राक्षस मारा गया। राक्षस को मारकर शहर को अपना बनाकर राजपुत्र मौज करने लगा। एक दिन शहर में एक शेर आ गया। फूलमती ने कहा, "महाराज, शेर आ गया है।" राजकुमार ने शेर को मार डाला। दूसरे दिन हाथियों का झुंड आया। राजकुमार ने आगे के सबसे बड़े हाथी को मार डाला। और हाथी भाग गये। कुमार ने हाथी का मस्तक चीरकर तथा गजमुक्ता निकालकर फूलमती को दिया। उसने एक साड़ी तथा लहंगा मोतियों का बनाया। रानी पानी का कलश भरकर ले आती और भोजन बनाती। पांच पत्तलों में भोजन परसकर उनमें से दो पत्तलों में कुमार तथा रानी भोजन करते और शेष तीन पत्तलों को पशु-पक्षियों के सामने डाल देते। इसपर रानी ने एक दिन कुमार से पूछा, "महाराज, ये तीन पत्तल परसकर पशु-पक्षियों को किसके नाम से डालते हो सो मुझे बतलाओ।" कुमार ने कहा, "स्त्रियों से सच्ची बात नहीं कहनी चाहिए।" रानी ने कहा, "फिर मैं तुम्हारी अर्द्धांगिनी किस तरह? और मैंने तुमसे राक्षस को मरवाया, फिर भी तुम मुझसे सच्ची बात नहीं कहते तो तुम्हारा प्यार कैसा?" कुमार ने कहा, "मेरे तीन चाकर हैं, जिनको मैं रास्ते में ही छोड़ आया हूं। उनके लिए ये

पत्तलें परसता हूं। मैं राजा का लड़का और इस प्रकार निकला

निसरीयौ छुं। जेसा तरह नीसरीया सो बात मांड हर कही। उवै आयसी ताहरां आपां देस जासां। एक दिन रांणी पांणी नुं गई हंती तठै मोजडी तिलकी सुं पांणी मांहे गई। तद मोजडी मछरै हाथ आई। सु मछ नीगली। तद रांणी दीठौ एक मोजडी नहीं तौ हेके नूं कासूं करूं। तद रांणी बीजी मोजडी पग सुं चलाय पहाड़ री गुफा मांहे राखी। आपपांणी ले घरे आई अर मोजडीरो बीजो जोडो करायौ। अर ऊ मछ कही भांत उठै नदी नदी चलीयौ तिकौ कठैक हीं कावल दिसं कही राजा रै देस आयौ। राजा रै मछ तेल करावणौ हंतो। तद नदी माहे जाल नाखीयौ। तद मछ सौ जाल मांहे आयौ। तद राजा मछ रो पेट चीरीयौ ते उदा मांहे मोतीयां री जोड़ी लाख रुपोयां री नीसरी। तद मोजडी पैदास करौ तो जेनु आधो राज अर बेटी परणाऊं तद औ ढंढोरी राजा रै रनवास हंतो नाई तैरी बहू सुणीयौ। तद नाई री बहू नाई नूं कहीयौ जू राजा कहै तौ आ मोजडी कासूं छै इमं यो जोड़ी रै पैरणहार सुं पैदास करूं। नायण दूती हंती। नाई जाय र राजानुं कही म्हाराज म्हारी नायण कहै छै म्हाराज कहै तौ मोजडी री कासू चली जेरी आ जोड़ीरी मोजडी छै तैनुं पैदास करूं। तद राजा कही सावास आहीज आहीज बरीयां ले आवौ। ताहरां नायण राजा पास खरची लेने आदमी दस बीस लेनै एक डूंडे करायनै नदी नदी चाली। तठै जेही सहर मांहे नदी आवै सहर मांहे जाय साहूकार रा घर देखै बैरा रा गहणा वेस पहरीया तठै देखै तद पाछी आय डूंडे देखती उवै सूनै सहर आई। तद उठै पिण डूंडी ऊभी राख सहर मांहे वडण लागी। तद एकण खूणौ उवा बीजी पण मौजडी पड़ी दीठी तद नायण जूती उठाय लीवीं अर पाछी आय जूती तौ चाकरां नूं दीबी। कही जूती री धणीयांणी पण अठै इस्री। तद नायण गुफा मांहकार भीतर गई। आगे सूनी हाटां पड़ी छै कंदोई री पण हाटां मिठाई सों भरी पड़ी छै। तद नायण

हूं ।" जिस तरह देश-निकाला मिला था, वह बात उसने कह दी तथा यह भी कहा कि जब वे आयंगे तब हम अपने देश चलेंगे ।

एक दिन रानी पानी लाने के लिए गई थी । वहां उसकी जूती फिसलकर पानी में गिरी । वह जूती एक मच्छ के हाथ लगी । वह उसे निगल गया । रानी ने देखा कि एक जूती तो है नहीं, तो एक का क्या करूंगी । इसलिए रानी ने दूसरी जूती पैर से निकालकर पहाड़ की गुफा में रख दी । आप पानी लेकर घर आई और जूतियों का दूसरा जोड़ा बनवा लिया । उधर संयोगवश मच्छ नदी में चलता हुआ उसके किनारे काबुल की ओर किसी राजा के देश में आया । उस राजा को मछली का तेल तैयार करवाना था । इस-लिए नदी में जाल डलवाया गया । यह मच्छ उस जाल में आ गया । मच्छ का पेट चिरवाया गया तो उसमें एक लाख रुपयों की मोतियों की जूती निकली । उस जूती को देखकर राजा ने यह ढिंढोरा पिटवाया कि जो इस जूती के जोड़े का पता लगायेगा उसे आधा राज्य और बेटी दूंगा । राजा के इस ढिंढोरा को राजा के नाई की स्त्री ने सुना । नाइन ने नाई से कहा कि अगर राजा कहें तो यह जूती तो क्या, इस जूती की पहननेवाली को लाकर पेश कर दूं । नाइन दूती थी । नाई ने जाकर राजा से कहा, "महाराज, मेरी नाइन कहती है कि यदि महाराज कहें तो जूती तो क्या, जूतीवाली को लाकर पेश करूं ।" राजा ने कहा, "शाबाश, इसी समय ले आओ ।" नाइन राजा के पास से खर्च तथा दस-बीस आदमी लेकर एक नाव बनाकर नदी-नदी चली । नदी के पास जो भी शहर आता वहां वह साहूकारों के घरों में जाकर देखती, स्त्रियों के गहने और पहनावा देखती, फिर वापस आकर नाव में बैठकर आगे चलती । इस तरह कई शहर देखे । देखती-देखती उस सूने शहर में घुसने लगी । एक कोने में उसे वह दूसरी जूती पड़ी हुई दिखाई दी । नाइन ने जूती उठा ली और वापस आकर जूती नौकरों को दे दी, कहा, "जूती की मालकिन भी यहीं होगी ।" नाइन गुफा के अन्दर घुसी ।

मिठाई री पांड घर हर बाहर जाय रजपूतां नुं देइ आई। रजपूतां नै कुठै ही रोही मांहे राखि आई अर आपे भीतर गई। आगे जा देखै तौ कासूं फूलमती बैठी छै। हींडोला माहें छै। तद नायण जाय बलायां लीना अर कही बोली ज्यावां म्हारी भाणोजी हूं उपर। इतरी कहि नाइन पास जाइ बैठी। कही तूं म्हारी भाणोजी छै हूं थारी मासी छुं। तद फूलमती कही तो बोहोत भलां। तद नायण पूछी कही थारी धणी कठै छै। तद इयै कही सिकार गयी छै। तद नायण इयै नुं पीठी कर सनान कराय माथो गूंथ तैयार कीवी। इतरै कुंवर सिकार ले आयौ।

तद कुंवर फूलमती नुं पुछीयो आ कुण छै। तद रांणी कही म्हारी मासी छै। तद इयै रै मन खरीखाहि हुंतो तद उठै इयै नुं राखी आ उठै नायण रहै अर हीड़ा करै। रजपूतां नूं सीधो मिठाई ले जाय देवै। इयै भांत रहवै। रहितां नायण फूलमती नुं कही एक हूं ऊखध जाणां छां तैसु तेहुं बोहोत सुख हुसी। तद फूलमती कही तौ बणाय। तद नायण उठै मुफरी बणायी अर खवायी कुंवर नुं अर फूलमती नुं दोनां ही नुं। तैसुं बै बहुत राजी मुफरी खावै। इयै भांत रहितां रहितां एक दिन नायण चले कही कुंवर नुं एक गोली बणायां छां तैसुं थे राजी हुसौ। तद कुंवर कही गोली बणाय। तद नायण विस गोली बणाय हर कुंवर नुं दीवी। अर आतो पाखती जाय सूती। कुंवर नुं घणौ ही बोलायौ पण कुंवर तौ बोलै नहीं। इवा नायण देखै तौ कासूं कुंवर तौ मूवौ ताहरां फूलमती विचारीयौ जु हमें चूका तौ आपांरो कोई नहीं अर इयै छिनाल कुंवर नुं मारीयौ। तेना कहै कासूं हुवै। तद फूलमती विचारी औ कुंवर रौ ब्राह्मण आतौसै उवै पासै संजीवन विद्या छै। सु जीवाडसी। तद फूलमती उठै कुंवर नुं महलांयत मांहें अरंड रौ रूख हुतौ तैरै पानां मांहे लपेट अर अरंड रै रूख ऊपर राखीयौ। परभात हुवौ तद नायण कही राजकुंवरजी कठै। ताहरां इयै कहीं कुंवर तौ रात मूवा। सु रातोरात राकस उठाय ले गया।

आगे दुकानें सूनी पड़ी थीं, पर हलवाई की दूकानें मिठाई से भरी पड़ी थीं। नाइन मिठाई की पोटली भरकर और बाहर जाकर राजपूतों को दे आई। राजपूतों को कहीं जंगल में छोड़ आई, आप भीतर आई। आगे जाकर देखती क्या है कि फूलमती झूले पर झूल रही है। नाइन ने जाकर बलैया ली और कहा, "अपनी धेवती पर न्यौछावर होती हूं।" पास बैठकर बोली, "तू मेरी धेवती है, मैं तेरी मौसी हूं।" फूलमती ने कहा, "बहुत अच्छा।" नाइन ने पूछा, "तुम्हारा पति कहां है?" उसने कहा, "शिकार के लिए गये हैं।" नाइन ने उसके उबटन कर, स्नान कराकर, चोटी गूंथकर उसे तैयार कर दिया। इतने में कुमार शिकार ले आया।

कुमार ने फूलमती से पूछा, "यह कौन है?" रानी ने कहा, "मेरी मौसी है।" उनके मन में विश्वास हो गया और उसे वहां रख लिया। नाइन वहां रहती और सेवा करती। राजपूतों के लिए भोजन-मिठाई ले जाकर दे जाती। इस तरह रहती रहीं। रहते-रहते नाइन ने फूलमती से कहा, "मैं एक दवा जानती हूं, जिससे तुम्हें बहुत सुख मिलेगा। फूलमती ने कहा, "तो तैयार करो।" नाइन ने उठकर मुफरा बनाया और दोनों को खिलाया। दोनों ने खुश होकर मुफरा खाया। नाइन कुमार से फिर कहने लगी कि एक बूटी बनाती हूं, जिससे तुम खुश होगे। कुमार ने कहा, "बनाओ।" तब नाइन ने विष की गोली बनाकर उसको दे दी और आप महल में एक ओर जाकर सो गई। कुमार भी जाकर सो गया और वहीं मर गया। फूलमती ने कुमार को खूब पुकारा, पर वह तो बोला ही नहीं। फूलमती ने देखा कि वह तो मर गया। उसने विचारा कि यदि मैं रोऊंगी तो यहां पर अपना कोई नहीं। इस दुष्टा ने कुमार को मार डाला। उससे कहने से क्या लाभ होगा? उसने सोचा—जब इस कुमार का ब्राह्मण आयगा तो संजीवन विद्या से जिला देगा। फूलमती ने कुमार को महलों

अठै राकस आवै छै। इतरी इयै कही तद नायण कही तो हालो आपां अठै सूं परी हालां। तद ऐ अठै सु उठ अर नदी आई। आघे उठै रजपूतां डुंडी लीयां बेठा छै। नायण फूलमती नुं डूंडी बैसाण कर डूंडी चलाई। सु अै चालीया आपरे सहर आया। नायण फूलमती ने ले डूंडी सुं उतर अर राजा ही हजूर के राजा कै आगे आंण सलाम कराई। महाराज आ अठै मोजडी री पहरण वाली आई छै अर अठै मोजडी।

उवा हाजर कीवी। तठै राजा इयै रो रूप देख बहुत राजी हुवौ। नायण नै पण इनाम दे नै फूलमती नुं भीतर ले गयौ। तठै रात पड़ी जद राजा फूलमती के मालीयै गयौ। तद फूलमती कही राजा तूं मनें हाथ लाये मतां। जदेह महल रहीस एठै बरस दिन तांई पुन्य कर कुंवर री बरसी कर पछै थारै ढोलीयै आईस मनें छेड़े मतां। ताहरां राजा एक एकांत महल कराय उठै उवै नुं राखी। पछतो उवा नायण अर तीन्ह बीजी राखी छोकरी कुंवारी एक ब्राह्मण की बेटी छै एक सुथार री बेटी एक लुहार री बेटी उठै अै तीन्ह छोकरी राखी। उठै फूलमती सदाबरत मांडीयौ जिकोई आवै तैनुं सीधो दीजै। इयै भांत रहै तठै उवे नारौ कुंवर तीन्ह चाकर राख आयौ हंतौ तिका हुनर सीखीया। जिकै सुथार चालीयौ सु लोहार पासै आयौ लुहार नुं ले अर ब्राह्मण पासे आया। तीन्हे मेला हुई अर कुंवर री खबर करण नुं चालीया। तिके चालिया चालिया उवै सहर आया। जिके सहर फूलमती आई हंती। तद अै सदाबरत नुं लेवण गया। उठै इंहा च्यार जणां रौ सीधो मांगीयौ। तद इंहा ने कह्यौ थे तीन्ह छो च्यार री सीधो क्यूं मागो। तद इहां कही म्हे च्यार छां। तद जिके सदाबरत देता हतां जिके जाय कही बहूजी राज तीन्ह जणा आया छै तिके च्यार रौ सीधो मांगे छै कौण हुकम। तीहरां रांणी कह्यौ दीयौ। तद इंहां ने सीधो दीयो। उठै ही जे महल नीचै रूंख हंतो तठै ही ब्राह्मण रसोई कीवी हर च्यार

में एरण्ड के पत्तों में लपेटकर एरण्ड के पेड़ पर रख दिया। जब सवेरा हुआ तो नाइन ने पूछा, "राजकुमार कहां हैं ?" फूलमती ने उत्तर दिया, "कुमार तो रात को मर गये और राक्षस उन्हें उठाकर ले गया। यहां राक्षस आया करता है।" इतनी बात जब उसने कही तो नाइन ने कहा, "तो चलो, हम यहां से कहीं निकल चलें।" वे वहां से उठकर नदी के पास आईं। वहां पहले से राजपूत नाव लिये बैठे थे। नाइन ने फूलमती को नाव पर चढ़ाकर नाव चलवाई और अपने शहर में आये। नाइन ने फूलमती को साथ लेकर राजा के आगे जाकर सलाम किया और कहा, "महाराज, यह जूती पहननेवाली आ गई है।" और वह जूती भी हाजिर की। राजा उसके रूप को देखकर बहुत खुश हुआ और नाइन को इनाम देकर फूलमती को भीतर ले गया। जब रात हुई तो राजा फूलमती के महल में गया। फूलमती ने कहा, "राजा, तुम मेरे हाथ मत लगाओ। हां, एक बरस तक एकांत महल में मुझे रहने दोगे, और एक बरस तक पुण्य करके कुमार की बरसी कर लेने दोगे तो बाद में मैं तुम्हारे पास आ जाऊंगी। इतने दिन मुझे मत छेड़ो।" राजा ने एक एकांत महल बनवाकर उसे वहां रखा। पास में नाइन और तीन दूसरी कुमारी छोकरियां रख छोड़ीं—एक ब्राह्मण की, एक बढ़ई की और एक लुहार की; फूलमती ने सदाव्रत बांटना शुरू किया। जो आता, उसे भोजन दिया जाता। इस अरसे में वे तीन नौकर, जिन्हें राजकुमार रास्ते में छोड़ आया था, हुनर सीख गये। बढ़ई चलकर लुहार के पास आया। लुहार को लेकर ब्राह्मण के पास आकर तीनों इकट्ठे हुए और कुमार का पता लगाने के लिए चले। चलते-चलते उसी शहर में आये, जिसमें फूलमती आई हुई थी। वहां सदाव्रत लेने के लिए गये। इन्होंने चार जनों की सामग्री मांगी। कहा कि हम चार हैं। सदाव्रत देनेवाले ने अन्दर

जाकर कहा, "बहूजी, तीन जने आये हैं, चार की सामग्री मांगते

पातल परीसी । एक पातल अर लोटे आघो मेल नमस्कार कर अर ब्राह्मण जीमण बैठो अर उवै सुथार लोहार पिण पातल री परिक्रमा कर जीमण बैठा । तठै फूलमती दीठा । तद फूलमती विचारी ए सही और कुंवर कहतो तिके हीज छै । ताहरां राणी आपरा कपड़ा उतार दासी रा कपड़ा पहर इहां कनै आई तद रांणी पूछीयौ राज कहौ थे कुण छो अर पातल कैयुं पोसै राख हर नमस्कार करौ छौ । तद इहां कही म्हे वीरभाण कुंवर रा चाकर छां । सु म्हाने बासै राख आयौ हंतौ सु हमें म्हे कुंवर री खबर करण जावां छा । तद रांणी कही थाने जे वास्तै वासै राखिया हंता सु विद्या सीखी क नहीं । तद इहां कहीं तूं इतरी पूछै सु तूं कौण छै । तद इयै आपरी हकीकत कही । इयै कही इण भांत कुंवर परणी हंती हूं कुंवर री रांणी छुं । अ मनें इयै भांत ले आया छै तिका हकीकत पण फूलमती इहां ने कही । तद इहां कही उवा विद्या म्हे सीख आया छां । तद आ इहां ने मौहल मांहे ले जाय अर उडण खटोलणी सुवारी अर इतरा बैठा तीन तौ अै अर रांणी तीन्ह छोकरी अर नायण ऐ बैस अर उठा सुं खटोली ना कही खटोली वाजणौ डंड जेथ जाये तेथ म्हारै कुंवर रौ पिंड । तद खटोली उडी जठैं राजा दरबार कियौ बैठो छै । अर नायण रौ माटी मोरछड करै छै । तठै रांणी कही नायण नैं नाख दियौ । तठै नायण नुं पकड़ हर कही करै सो पावै । इतरी कहीं नै नाखी । तिका दरबार बीच आय पड़ी । तद राजा नाई दीठौ अ'र आसूं हूयौ । ए तो नायण नुं नाख चलता हुवा । नायण तौ मर गई अर अै उवं सागी सहर आया । म्हेल माहें जाय अरंड रूंख सुं कुंवर नैं उतार अर ब्राह्मण जाप कीयौ तैसुं कुंवर जिवीयौ । तठै फेर कुंवर आ हकीकत सुणी तद कुंवर दूही कह्यौ—सूरां और सतवादियां धीरां एक सनाह । दई करेसी कामड़ा अरहे परसी साहबाह॥

हैं। क्या आज्ञा है ?" रानी ने कहा, "दे दो।" उनकी सामग्री दे दी गई। उसी महल के नीचे एक पेड़ था। वहीं ब्राह्मण ने भोजन बनाया और चार पत्तलें परोसीं। एक पत्तल और लोटा आगे रखकर तथा नमस्कार करके वे भोजन करने बैठे। फूलमती ने देख लिया। उसने विचार किया कि जिनके विषय में कुमार कहा करता था, वे ये ही आदमी हैं। रानी दासी के कपड़े पहनकर इनके सामने आई और पूछा, "सच कहो, तुम कौन हो और किसके लिए पत्तल रखकर नमस्कार करके भोजन करते हो ?" उन्होंने कहा, "हम वीरभान कुमार के चाकर हैं। वह हमें पीछे छोड़ आये थे। सो अब हम उनका पता लगाने के लिए जाते हैं। रानी ने कहा, "तुम्हें जिस वास्ते पीछे छोड़ा गया था, वह विद्या तुम लोगों ने सीखी या नहीं ?" उन्होंने कहा, "इतनी पूछताछ करनेवाली तुम कौन हो ?" फूलमती ने अपना सब हाल कह-सुनाया। तीनों ने कहा कि हम वे विद्याएं सीख आये हैं। रानी उनको महल में ले गई। उड़नखटोले पर इतने जने सवार हुए—तीन तो ये और रानी, तीन दासियां और नाइन। उन्होंने बैठकर खटोली से कहा, "ओ चलते हुए डंडोंवाली खटोली, वहां चल जहां हमारे कुमार की देह पड़ी है।"

खटोली उड़ी। राज-दरबार में, जहां नाइन का पति चंवर डुला रहा था, वहां रानी ने कहा कि यहां नाइन को पटक दो। उन्होंने नाइन को पकड़कर कहा, "करे सो पावे।" और उसे पटक दिया। यह दरबार के बीच में आकर पड़ी। राजा और नाई ने देखा कि यह क्या हुआ। वे तो नाइन को पटककर चलते बने। नाइन मर गई। फिर वे ठीक उसी शहर में आये। महल में जाकर एरण्ड के पेड़ से कुमार को उतारकर ब्राह्मण ने जप किया। वह जीवित हो उठा। कुमार ने यह सब

हाल सुना तो बोला :

औ दुहौ कहि कुंवर उठै उवै छोकरी हंतो सु ब्राह्मणी ब्राह्मण नुं परणाई सूतारी सूतहार नुं परणाई लोहारी लोहार नुं परणाई। उठै सहर मांहे मता हंती सु लेनै असवार बसाया घोड़ा-हाथी ले नै बड़ौ लसकर कीयौ। तद उठै सुं चालीया तिके। चालता-चालता बापरै दैस आया तद राजा नुं खबर गई जु कोई राजा देस पर चालीयौ आवै छै। तद उवै राजा साम्हां आपरा परधांन मेल्हीया।

कुंवर पासू आय पूछण लागा कैरो साथ छै। तद कुंवर रा लोका कही कुंवर वीरभाण छै फलाणौ रौ वेटो छै सु बापरै पास आवै छै देसोटै गयो हंतो तिको आयौ छै। परधांने जाय राजा नुं कही म्हाराज रावलौ कुंवर बीरभांण छै सु रावलै पासे आवै छै। तद राजा रै छोटै महल रै छोरूं क्युं हुवै नहीं राजा इतरी बात सुणी राजी हुवौ। राजा पण साम्हो चढ़ीयौ छै। जठै नजीक आया तद कुंवर घोड़ सुं उतर नै बापरै पगै जाय लागौ। तठै राजा बेटै सूं मिल हर राजी हुवौ। बाजै बाजतै राजा बेठै नुं ले घरे आयौ छै। तद कुंवर उहां रजपूतां नुं कही श्री परमेस्वर मोनूं राज देण हंतो तौ दीयो छै तौ रजपूतां कही राज कही सु सही कहै छै। बात सूरा सतवादीयां री संपूर्ण॥

शूरवीर सत्यव्रती धीरों का मत एक।
दई करेगा काम फल एरंड देगा नेक ॥

यह दोहा कहकर कुमार ने वहां जो छोकरियां थीं, उनमें से ब्राह्मणी ब्राह्मण को, बढ़इन बढ़ई को, लुहारिन लुहार को ब्याह दी। बस शहर में जो माल था, उसे लेकर सवार बसाये, घोड़े-हाथी लेकर बड़ी भारी सेना तैयार की और वहां से चले।

चलते-चलते अपने पिता के देश में आये। राजा को खबर हुई कि कोई राजा देश पर हमला करने के लिए आ रहा है। राजा ने अपने प्रधानों को भेजा। वे कुमार के पास आकर पूछने लगे कि यह किसकी सेना है। कुमार के आदमियों ने कहा कि अमुक राजा के पुत्र वीरभान हैं। वह अपने पिता के चरण-स्पर्श के लिए आये हैं। वनवास से लौटकर आये हैं। प्रधानों ने जाकर राजा से कहा कि महाराज, आपके पुत्र वीरभान हैं। आपके चरण छूने आ रहे हैं। राजा की छोटी रानी के कोई लड़का नहीं हुआ था। इसीलिए राजा यह बात सुनकर खुश हुआ और अगवानी के लिए गया। नजदीक आया तो राजकुमार घोड़े से उतरकर पिता के पैरों में जा गिरा। राजा पुत्र से मिलकर खुश हुआ और गाजे-बाजे के साथ उसे घर ले आया। राजकुमार ने राजपूतों से कहा, "देखो, परमेश्वर को मुझे राज्य देना था, वह दे दिया।" राजपूतों ने कहा, "महाराज, आपने कहा सो ठीक।" शूरों और सत्यवादियों की कथा संपूर्ण। □

गढ़वाली

डांडी कांठ्यों की चलंखियों मा, पुंगड़ों की मींड्यों पर एक पिंगलो फूल होन्द। लोक वै तईं फ्यूंली बोलदन।

कखी धल एक घणो [illegible] एक राजा छयो, अर वै ताल का धोरा याछरी जनी एक नौनी-बांद रंदी

फ्यूंली

हिन्दी रूपान्तर

पहाड़ की चोटी पर, खेतों की मेड़ों पर, एक पीला फूल होता है। लो‌ग उसे फ्यूंली कहते हैं।

कहीं एक घना जंगल था। और उस जंगल में एक ताल था और उस ताल के पास परी-जैसी एक वन-कन्या रहती थी। उसका नाम था फ्यूंली।

छई। वीं को नौऊँ छयो फ्यूंली।

कोसू तक वख मनखी को नौं-जात नी छयो। वा एखुली छई। बस, वीं का दगड़ा बऽण का जीव-जन्तु अर पंछी रन्द छया। वो वीं का भै-बैणा छया—लाड-प्यार का सी पाल्या परोस्याँ जना। यो ई वीं को कुटम छयो। वा ऊँ सबूकी आपणी छई। ध्वैड़-काखड़ वीं का गीतू की भौंण मा अफू तैंई बिश्री जान्द छा, फूल वींका चौतिर्फ हैंसदा छा; दुबलो वींकी खुटियों नीस बिछी जान्द छौ, अर भोरीला पंछी वीं तईं बिजाल्द रंदा छा। वा ऊँ सबू की पियाँरी छई।

वा अमिथ्या खूश रन्दी छई, अर बाँद भी उनी ही छई। वीं की मुखड़ी पर जोन को-सी उदंकार छयो। वीं की गल्वाड़ियों पर गुलाब खिल्याँ छया। वीं की धौंपेली पर घटा घिरी छई। तलौ का पाणी की तरौं वीं पर ज्वानी भरेन्दी औणी छई। वैं रू तैं अजूं तईं न कैन आँख्योंन देखी छयो, अर न हातून छुईं छयो।

असल मा, वीं धरती पर कबी मनखी को कालो छैल नी पड़ी छई। पाप का हातून कबी फूलू की पवित्राई नी मैली करी छई। ये वास्ता जिन्दगी मा कखी लोभ नी छौ, शोक नी छौ। सबी तरप शान्ति अर पवित्रता छई। फ्यूंली निरभै ह्वै क बणू मा घूमदी छई, वखीं झुलकौं मा डाल्यों का नया पात बिछैक लेटी जाँदी छई, लेटीक पंछियों का सुर मा आपणा सुर मिलौंदी छई। फेर, माला बणौन्दी छई अर गाड-गदन्यों का सिस्याट मा नाचण लगी जाँदी छई। छई त वा एखुली, पर वीं की जिन्दगी एखुली न छई।

एका दिन इनी वा बैठीं छई। धोए ही झरझर प्राणी को एक छऽड़ो बगणू छौ। वखी एका डला का अडसारा लीक वा पाणी मा खुटा पसारीक ध्वैड़ का बच्चा तैंई मलासणी छई। आंखी वीं की पाणी का औतू पर लगी छई, पर मन कुजाणी कौं मन्सूबौं पर जोन की तरौं हैंसणो छौ।

तबरेक कैकी आँग की खबड़ाट होये। ध्वैड़ को बच्चा

कोसों तक वहां आदमी का नाम न था। वह अकेली थी। बस उसके पास वन के जीव-जन्तु और पक्षी रहते थे। वे उसके भाई-बहन थे—सब प्यार से पाले-पोसे हुए। यही उसका कुटुम्ब था। वह उन सबकी अपनी-जैसी थी। हिरनी उसके गीतों में अपने को भूल जाती थी। फूल उसे घेरकर हंसते थे, हरी-भरी दूब उसके पैरों के नीचे बिछ जाती और भोर के पंछी उसे जगाने को चहचहा उठते थे। वह उन सबकी प्यारी थी।

वह बहुत ही खुश थी। सुन्दर भी थी। उसके चेहरे पर चांद उतर आया था। उसके गालों में गुलाब खिले थे। उसके बालों पर घटाएं घिरी थीं। ताल के पानी की तरह उसकी जवानी भरती जा रही थी। उस रूप को न किसी ने आंखों से देखा था, न हाथों से छुआ था।

उस धरती पर कभी आदमी की काली छाया न पड़ी थी। पाप के हाथों ने कभी फूलों की पवित्रता को मैला न किया था। इसलिए जिन्दगी में कहीं लोभ न था, शोक न था। सब ओर शांति और पवित्रता थी। फ्यूंली निडर होकर बनों में घूमती, कुंजों में पेड़ों के नये पत्ते बिछाकर लेटती, लेटकर पंछियों के सुर में अपना सुर मिलाती, फिर फूलों की माला बनाती और नदियों की कलकल के साथ नाचने लगती थी। थी तो अकेली, पर उसकी जिन्दगी अकेली न थी।

एक दिन वह योंही बैठी थी। पास ही झरझर करता एक पहाड़ी झरना बह रहा था। वहां एक बड़े पत्थर का सहारा लिये वह जल में पैर डाले एक हिरन के बच्चे को दुलार रही थी। आंखें पानी की उठती तरंगों पर लगी थीं, पर मन न जाने किस मनसूबे पर चांदनी-सा मुस्करा रहा था।

तभी किसी के आने की आहट हुई। हिरन का बच्चा डर

डरन चौंके। फ्यूंलीन मुड़ीक देखे, त सामणे एक राजकुंवर खड़ू छौ। कमल को फूल जसो कोंगलो ओर हिवालौं का ह्यूं जसो चिट्टो। फ्यूंलीन भजूं तलक कै बैख को मुख नी देखी छयो। वे तैं देखीक वा ओन-सी शरमै गये, फूल-सी अलसे गये। राजकुंवर तीसो छौ, वेको शरील पाणी पर जायूं छौ, पर जनो वैको निगा फ्यूंली पर पड़े वो पाणी पेणू भूली गये। फ्यूंली अलग सरकी गये। राजकुंवर ने आंजुल बणाये अर पाणी पेण बैठे। जब वेन पाणी पीले त फ्यूंलीन राजकुंवर मा बोले, "क्या शिकार खेलण छा आयां?"

राजकुंवर हुंगारो भरे "हां"!

फ्यूंलीन बोले, "त अबी चली जावा। यो मेरो आसरम छ। यख का सैरा जीब जन्तु मेरा भै-बैणा छन। यख कुई कै तइं मारद् नी छ बलिक सांका पर लगैक रखद्।"

राजकुंवर मुल्ल हैंसे, "मैं भी अब नी मारण्या। खेल-खेल मा आई गई छौ इथैं। खैर, न त शिकार मिले, न अब कर्ण की इच्छा छ। मैं इथगा दूरू बिरड़ी गयूं कि......।"

फेर राजकुंवर चुप चाणे गये। कुछ समं तक कुई कैसे बच्याणे नी। फ्यूंलीन स्येड़ी आंख्योंन एक दां वे तैं देखे। वा सोची नी सके कि वा अगनै क्या बोल, क्या पूछ, पर कु जाणी किलै वो वीं तैईं भलू लगण लै गये। तब वीं का घिच्चा से निकल पड़े, "तुम थक्यां होला। जरा थौ खायाला!"

राजकुंवर एक डला मा बैठी गये। सांझ को बगत होण बैठी छयो। अगास लाल होये। वण वणोंडीयों मा बौड़दा पशू पंछियों कू कौ-ल्यौ गूंजण लै गये। देखदै देखद फ्यूंली का अगाड़ी कन्दमूल अर फलू को थुपड़ो लगी गये। ई रोज की ई छुई छई। रोज इत वऽण का उ पशू-पंछी—वीं का उ भाई-बैणा—वीं कू तईं कन्दमूल लैक औन्द छया। वा ऊं सबूं की

से चौंका। फ्यूंली ने मुड़कर देखा तो सामने एक राजकुमार खड़ा था। कमल के फूल जैसा कोमल और हिमालय की बरफ जैसा गोरा। फ्यूंली ने आजतक किसी आदमी को नहीं देखा था। उसे देखकर वह चांद-सी शरमा गई, फूल-सी कुम्हला गई। राजकुमार प्यासा था। मन उसका पानी में था, पर फ्यूंली को देखते ही वह पानी पीना भूल गया। फ्यूंली अलग सरक गई। राजकुमार ने अंजुलि बनाई और पानी पीने लगा। पानी पिया तो फ्यूंली ने राजकुमार से पूछा, "शिकार करने आये हो ?"

राजकुमार ने कहा, "हां"

फ्यूंली बोली, "तो आप चले जाइये। यह मेरा आश्रम है। यहां सब जीव-जन्तु मेरे भाई-बहन हैं। यहां कोई किसी को नहीं मारता। सब एक-दूसरे को प्यार से गले लगाते हैं।"

राजकुमार हंसा। बोला, "मैं भी नहीं मारूंगा। यहां खेल-खेल में चला आया था। खैर, न शिकार मिला, न अब करने की इच्छा है। इतनी दूर भटक गया हूं कि..."

इतना कहकर राजकुमार चुप हो गया। फिर कुछ समय के लिए कोई किसी से नहीं बोला। फ्यूंली ने आंखों की कोर से उसे फिर एक बार देखा। वह सोच न पाई कि आगे उससे क्या कहे, क्या पूछे पर न जाने वह क्यों उसे अच्छा लगा। योंही उसके मुख से निकल पड़ा, "आप थके हैं। आराम कर लीजिये।"

राजकुमार एक पत्थर के ऊपर बैठ गया। संध्या होने लगी थी। आसमान लाल हुआ। वन में लौटते हुए पशु-पक्षियों का कोलाहल गूंज उठा। देखते-ही-देखते फ्यूंली के सामने कन्द-मूल और जंगली फलों का ढेर लग गया। यह रोज की ही बात थी। रोज ही तो वन के पशु-पक्षी—उसके वे भाई-बहन—उसके लिए फल-फूल लेकर आते थे। वह उन सबकी रानी जो थी।

राजकुमार ने यह देखा तो बोला, "वनदेवी, तुम धन्य हो।

राणी जु छई।

राजकुंवर न यो देखे त बोले, "वण देवी, तू धन्न छई। कथा सुणं छ यख। कतना अपणैस छ। हे रां, जु मैं यख रई सकदू त...।"

फ्यूंली न वैकी बात काटे, "बड़ों का मुख से छोट्टी बात स्वाणी नी लगदी। तुम यख रैक क्या करला? राजकुंवर तईं बणू से क्या लेणो-देणो? ऊं तईं त ऊंका मैह्ल चैन्दन, बड़ा बड़ा शैहर चैन्दन, जख वो राज करदन!"

राजकुंवरन बोले, "मंगल त जंगल मा ही छा। तुम भी त राज करण छा।"

फ्यूंली गुल्ल हैंसे अर धींन बोले, "ना!"

अंध्यारो होईं गई छौऊ। फ्यूंलीन फल-फूलू से राजकुंवर की आदर-खातर करे अर फेर आपणी गुंफा मा चली गये। राजकुंवर भी डाला-नीस पड़ी गये।

सांझ को आछलेन्दो सुरज फेर सबेर दां डांडी कांठियों की धार पर अपणो झलकारो लीक आये। राजकुंवर बीजे त वैं डेरा को ख्याल आये पर उदास होई गये। फ्यूंली वेका पराण का बीच कबलाणी सी छई। अब जाण क वे कू ज्यू नी बोलदू छौ। सुबेर कल्यार लीक फ्यूंली आये त राजकुंवर न मन की बात नी गोटी सकी वैंन बोले, "एक बात बोलणू चांदऊं। सुणला तुम?" फ्यूंलीन बोले, "बोला त सई!"

राजकुंवर झझके पर फेर वैन बोली ही दिने, "चलली मेरा दगड़ा। मैं तुम तईं राणी बणैक रखलो!"

फ्यूंलीन बोले, "ना, राणी बणीक मैंन क्या कर्ण?"

राजकुंवरन बोले, "मैं त्वै प्यार करदौं। तुमारा बिना मैं बच्यूं नी रई सकदू।"

फ्यूंलीन बोले, "पर वख इ वण, इ डाला, गाड-गदना ये परैथला नी होला।"

कितना सुख है यहां। कितना अपनापन है। काश, मैं यहां रह पाता।"

फ्यूंली ने टोका, "बड़ों के मुंह से ये छोटी बातें शोभा नहीं देतीं। तुम यहां रहकर क्या करोगे? राजकुमार को वनों से क्या लेना-देना। उन्हें तो अपने महल चाहिए, बड़े-बड़े शहर चाहिए, जहां उन्हें राज करना होता है।"

राजकुमार ने कहा, "जंगल में ही मंगल है। तुम भी तो राज ही कर रही हो यहां।"

फ्यूंली मुस्करा उठी। बोली, "नहीं।"

अंधेरा हो चुका था। फ्यूंली ने राजकुमार का फूलों से अभिनन्दन किया और फिर वह अपनी गुफा में चली गई। राजकुमार भी पेड़ के नीचे लेट गया।

सांझ का अस्त होता सूरज फिर सुबह को पहाड़ की चोटी पर आ झांका। राजकुमार जागा तो उसे घर का खयाल आया। वह उदास हो उठा। फ्यूंली उसके प्राणों में खिलने को आकुल हो उठी। अब उसका जाने को जी नहीं कर रहा था। सुबह कलेवा लेकर फ्यूंली आई तो राजकुमार मन की बात न रोक सका। बोला, "एक बात कहना चाहता हूं। सुनोगी?"

फ्यूंली ने पूछा, "क्या?"

राजकुमार कुछ झिझका, पर हिम्मत करके बोला, "मेरे साथ चलोगी? मैं तुम्हें राजरानी बनाकर पूजूंगा।"

फ्यूंली ने कहा, "नहीं, रानी बनकर मैं क्या करूंगी।"

राजकुमार ने कहा, "मैं तुम्हें प्यार करता हूं। तुम्हारे बिना नहीं जी सकता।"

फ्यूंली ने जवाब दिया, "पर वहां यह वन, ये पेड़, ये फूल, ये नदियां और ये पक्षी नहीं होंगे।"

राजकुमार ने कहा, "वहां इससे भी अच्छी-अच्छी चीज

राजकुंवरन बोले, "वख यां से भी आछी आछी चीज छन। मेरा राजमैल मा हर तरौं से सुख से रली। यख हण मा क्या धर्यूं छ।"

फ्यूंलीन बोले, "मनत्तीन अपणा वास्ता एक नौटी जिन्दगी गड़ी छ; वे तैंई मैं सुख नी माणदू।"

राजकुंवर यां कू क्या स्वाल-दोर करदो? वींन सोचे—इथा बिगरी, इथा माया मैं सणी मनख्यों का बीच कखन मिलण? मनखी एका-हैका तईं सुखी बणौणक दंगड़ो बणैंक दगड़े रणा जरूर छन, पर वी त हमारा दुख को कारण छ। आज मैं एखुली छऊं। पर आज मेरा दिल मा कैका वास्ता बिरदोसो त नी छ, कलेस त नी छ। पर वख?—वख त राजमैल मा इथा खुलीक कनै रण देलू क्वी? से नी रण देली।...पर वीं की जिकुड़ी का बीच तैंठ्यूं कुई कुछ और ही बोलणू छौ। जनानी तैं स्वाग-भाग त चैन्द ही छ। ज्वानी मा कांगसा होंद ही छ। वा पुलेई गये अर आखिरकार वीं की भावनावों तैं राजकुंवर का पत्त खैंचीक ली गये। वींन वेकी बात माणी लिने।

फेर होण क्या छौ? ऊ दुय्यौंन वै दिन परस्थान करे। पशू-पंछी ऐन। सबून फ्यूंली तैंई विदा दिने। ऊं की आंख्यों मा अंदधारी छई!

राजकुंवर वीं तईं लीक अपणा राज मा पौंछे। वो दुय्ये अमिथ्या खुश छया। अब वा राणी छई। राजकुंवर वीं तैंई पराण जनू प्यार करदू छयो। वऽण से वख जादा सुख छयो। कैं बात की कमी ह्वे सकदी छई? खाणूक बावन व्यंजन छया, सेवा कु चेली, अर दिल बैलौणक बादजी। इथी ना, बल्कि देखौणक तईं धन-दौलत छई, अर जतौणक अघ्याकार।

त दिन बीतदा गैन। सुबेरी को घाम व्यांखनी दौं अछलेन्दो रये। कथगीई दिन तक वीं का तैं वणा को पशु-पंछी—वौं तईं समल्दा रैन। पर वा ही त गै छई, टौर सब कुछ

हैं। मेरे राजमहल में हर तरह से सुख से रहोगी। यहां वन में क्या रखा है।"

फ्यूंली ने कहा, "आदमी ने अपने लिए एक बनावटी जिन्दगी बना रखी है। उसे मैं सुख नहीं मानती।"

राजकुमार इसका क्या जवाब देता। फ्यूंली ने सोचा—इतनी सुन्दरता, इतना प्यार, सचमुच मुझे आदमियों के बीच कहां मिलेगा। आदमी एक-दूसरे को सुखी बनाने के लिए संगठित जरूर हुआ है, पर वही संगठन उसके दुःखों का कारण भी है। आज मैं अकेली हूं, पर मेरे दिल में डाह नहीं है, कसक नहीं है। पर वहां ? वहां इतना खुलापन कहां होगा।

पर उसके भीतर बैठा कोई उससे कुछ और भी कह रहा था। आखिर नारी का सुहाग भी तो चाहिए। यौवन में लालसा होती ही है।

वह एकदम कांप उठी। पर अन्त में उसकी भावना उसे राजकुमार के साथ खींच ले ही गई। उसने राजकुमार की बात मान ली।

फिर क्या था। वे दोनों उसी दिन चल पड़े। पशु-पक्षी आये। सबने उन्हें विदा दी। उसकी आंखों में आंसू थे।

राजकुमार उसे लेकर अपने राज्य में पहुंचा। दोनों बेहद खुश थे। वह अब रानी थी। राजकुमार उसे प्राणों से ज्यादा प्यार करता था। वहां वन से भी ज्यादा सुख था। राजमहल में भला किस बात की कमी हो सकती थी। खाने के लिए तरह-तरह के भोजन थे, सेवा के लिए दासियां और दिल बहलाने के लिए नर्तकियां। यही नहीं, दिखाने के लिए ऐश्वर्य और जताने के लिए अधिकार था।

दिन बीतते गये। सुबह का सूरज शाम को ढलता रहा। कई दिनों तक उसके वे भाई-बहन उसे याद करते रहे। पर

अपणा ही जगा पार छ्यो। कुछ दिन जैक, पंछी उन्ने पैली की-ई तरौं बासण लै गैन, फूल उन्ने फूलदा रैन। पर एका दिन फ्यूंली तैंई इनु लगे, जनु कि वीं का जिन्दगी का उलार कखी खोये गये होव। राजमैह्ल मा मणि अर मोत्यों की चमक जरूर छई, पर न फूलू की भ्रह्लाद छई, अर न पंछियों की जनी पवेत्रता। अब राजमैह्ल को घेरा मा वा उतपासेणी छई। वी तैंई भुसी लगदो जनु कि वीं की वो वण-बणोण्डी बीं तैंई धै लगैक भट्याणी छन। अब वीं का दगड़ा वीं का वो भाई-बैणा कख छया? मनखी छया—रीस, घीण अर लोभ का भांडा सी, पर वात प्यार की भूकी छई!

तब वीं जिन्दगी मा वीक तैंई कुई अच्छैस नी रई गये। वा दिन पर दिन उदासीं रण लगे। वा यकान्त खूब मानण लगे। राजकुंवरन वीं रईं खुश रखण की लाख कोशीस करे, पर वीं की अलसींई जिकुड़ी हरी नी होई सके। आखिर वी होये एका दिन वा असुगी होई गए, अर वींकी छुड़ लगी गए।

थोड़ैई दिनू मा वींकी ऐना-सी चमलान्दी मुखडी भी पिंगली पड़ी गये। कैं डाली तैं कखीन उखाड़ीक कैं हैंकी जगा लगौण की कोशीश व्यर्थ होन्दी ही छ। बस, फेर क्या छौ, बचणकू क्वी भरोंसो ही नी रये।

एका दिन सैत् वीं विचारी को वो आखरी दिन रई होलो—फ्यूंलीन राजकुंवर से बोले, "अब मैं बची नी सकदी! मेरी एक आखरी दां की खैस छ; पूरी भी करला?"

रोन्द-रोन्द राजकुंवरन हुंगारो भरे—"हां जरूर!"

फ्यूंलीन मुश्कल से सास लीक अपणी आखरी बात बोले, "जु कबी शिकार खेलण जाला त... मेरा वैवण... त मेरा ऊं भाई-बैणों तैंई न मार्यान... अर जब मैं मरी जौ-ऊं त...... मैं तई डांडी की वीई धार मा खड्यांई दियान, जख वो रंदन!"

वही तो गई थी। बाकी जो जहां था, वहीं था। कुछ दिन बाद पंछी पहले की तरह बोलने लगे, फूल फूलने लगे।

पर एक दिन फ्यूंली को लगा, जैसे उसके जीवन की उमंग खो गई हो। राजमहल में हीरे और मोतियों की चमक जरूर थी, पर न फूलों का-सा भोलापन था और न पंछियों की-सी पवित्रता थी। अब राजमहल की दीवारें जैसे उसकी सांस घोट दे रही थीं। उसे लगता, जैसे वह वन उसे पुकार रहा है। अब उसके पास उसके भाई-बहन कहां थे? आदमी थे, डाह थी, लोभ था, लालच था। पर वह तो निर्मल प्यार की भूखी थी।

फिर उस जीवन में उसके लिए कोई रस न रहा। वह उदास रहने लगी। उसे एकान्त अच्छा लगने लगा। राजकुमार ने उसे खुश करने की लाख कोशिशें कीं, पर उसका कुम्हलाया मन हरा न हो सका। कुछ दिन में उसकी तबीयत खराब हो गई और वह बिस्तर पर जा पड़ी।

थोड़े ही दिनों में उसका चमकता चेहरा पीला पड़ गया। वह मुरझा गई। किसी पौधे को एक जगह से उखाड़कर दूसरी जगह लगा देने की कोशिश बेकार गई। उसके जीने की अब कोई आशा न रही।

एक दिन उसने राजकुमार से कहा, "मैं अब नहीं जीऊंगी। मेरी एक आखरी चाह है। पूरी करोगे?"

राजकुमार ने दुखी होकर कहा, "जरूर।"

फ्यूंली ने लम्बी सांस लेते हुए कहा, "कभी अगर शिकार को जाओ तो मेरे वन के उन भाई-बहनों को मत मारना और जब मैं मर जाऊं तो मुझे पहाड़ की उसी चोटी पर गाड़ देना जहां वे रहते हैं।"

इसके बाद उसके प्राण पखेरू उड़ गये।

राजकुमार ने उसे उसी पहाड़ की चोटी पर गाड़कर उसकी

अर यां का बौद वी का प्राण पंखेरू उडी गैन् ।

राजकुंवरन वैई डांडा मा वीं तैं खडियैक वो की मनैं की करे ! वण का पशू पंछियोंन—वीं का ऊं भाई-बणोंन सूणे त वो बड़ा दुखी व्हैन । बथौं सुसकारा भरन बैठे; फूल झरीन, अर लगुलो जनो अलसै गैन । राजकुंवर जिकुड़ो पर पठाल धरीक चली गये ।

पर मनखी हीत मरदन, धरती अम्मर छ । कखी डाली सूखदी छ, त कखी नया अंगरा औंदन ! यां को नौं ही जिन्दगी छ ।

फेर कुछ दिन जैक, करवी कैंका सुसकारा सी सुणेनीन । डांडा मा, जख फ्यूंली खड्यौंयेणी छाई, वख एक स्वाणो सी डाली अर वो पर एक पिंगलो फूल जमी गये अर लोक वे तैंई फ्यूंली बोलण लै गैन ।

आखिरी इच्छा पूरी की। वन के पशु-पक्षियों ने—उसके उन भाई-बहनों ने—सुना तो बड़े दुखी हुए। हवा ने सिसकी भरी, फूल गिर गये और लताएं कुम्हला उठीं। राजकुमार मन मसोस-कर रह गया।

आदमी ही मरते हैं, धरती सदा अमर है। एक ओर पेड़ सूखता है, दूसरी ओर अंकुर फूटते हैं। इसीका नाम जिन्दगी है। कुछ दिन बाद फिर प्राणों की एक सिसकी सुनाई दी। पहाड़ की चोटी पर, जहां फ्यूंली गाढ़ दी गई थी, वहां पर एक पौधा और उसपर एक सुन्दर-सा फूल उग आया और लोग उसे फ्यूंली कहने लगे। □